Digitized by eGangotri

603

क्या कहते हैं

विश्व के महान् संत

Deputy Director Libraries
(Central) J&K. Govt.
Jammu/Srinagar

स्कैन्ड/Scanned

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्या कहते हैं

विश्व के महान् संत

Vishvika Mohan Sant

व्यथित हृदय

Vahiti Hadha-
Hrday.

Anil Prk

अनिल प्रकाशन

नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दो शब्द

संसार में समय-समय पर ऐसे महान् पुरुष उत्पन्न होते हैं, जो अपने कार्यों, अपने विचारों और अपनी प्रेरक तथा उपदेशप्रद-वाणियों के द्वारा मानव समाज को सुन्दर बनाने का प्रयत्न तो करते ही हैं, उसे सत्कर्मों की दिशा की ओर अग्रसर भी करते हैं। जन्म-मृत्यु के नियमों के अनुसंसार वे महान् पुरुष ससार से चले जाते हैं, किन्तु अपने जाने के पश्चात् भी अपने कार्यों, विचारों और वाणियों की अतुल सम्पदा छोड़ जाते हैं। मानव समाज उनकी उस छोड़ी हुई सम्पदा से युग-युगों तक लाभ उठाता रहता है।

प्रस्तुत पुस्तक में संसार के कुछ चुने हुये श्रेष्ठ महान पुरुषों की ऐसी वाणियों का संकलन किया गया है, जो उपदेशप्रद तो है ही, प्रेरक भी हैं। उद्देश्य यह है कि किशोर, युवक, प्रौढ़ और वृद्ध स्त्री-पुरुष इन वाणियों को पढ़ें और पढ़ कर अपने जीवन को हर एक प्रकार से सुन्दर बनाने का प्रयत्न करें।

देश, समाज और जीवन में सुख-शान्ति पैदा करने के लिये आवश्यक है कि महान् पुरुषों के विचारों और वाणियों से प्रेरणा ली जाये। प्रस्तुत पुस्तक इस कार्य में सहायक सिद्ध होगी।

आशा है, पुस्तक में संकलित महान् पुरुषों के कथन को उचित रूप में समझा जायेगा और समझकर उनसे लाभ उठाया जायेगा।

224-ए मयूर बिहार
पाकेट नं० 1 दिल्ली-91

व्यथितहृदय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रम

वेद	9
उपनिषद्	13
महर्षि वशिष्ठ	17
महर्षि याज्ञवल्क्य	20
महर्षि जैमिनी	23
महर्षि अंगीरा	26
महर्षि आपस्तमव	29
महर्षि अगस्त्य	33
महर्षि गौतम	36
महर्षि भृगु	38
महर्षि वैशम्पायन	40
महर्षि रमण	43
महर्षि कर्वे	45
मदालसा	47
युधिष्ठिर	49
भगवान बुद्ध	52
भगवान महावीर	56
महात्मा ईसा	58
एपिक्यूरस	60
चाणक्य	63

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

टालस्टाय	67
संत शेख सादी	70
गुरु नानक	74
श्री शंकराचार्य	77
थोमस ए केम्पिस	78
भाई लारेंस	82
श्री जेम्स एलन	86
कम्यूसिस	90
संत ज्ञानेश्वर	93
सत वसेसर	95
संत दोमीलैनम पिंगल	96
सुकरात	97
श्री खलील जिब्रान	99
तपस्वी सहलतस्तरी	102
महात्मा श्री तैलंगस्वामी	105
महान् संत श्री यादव	109
श्री बल्लभाचार्य	112
श्री रामानन्दाचार्य	115
श्री रामानुजाचार्य	118
समर्थ गुरु रामदास	121
गोस्वामी तुलसीदास	124
व्याघ संत	126
संत फरीद	128
तिरुवल्लुवर	129
रहीम	131
गोरखनाथ	133
रामकृष्ण परमहंस	135
चैतन्य महाप्रभु	138

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विवेकानन्द	139
स्वामी रामतीर्थ	143
नामदेव	146
कबीरदास	150
उड़िया स्वामी	152
स्वामी दयानन्द सरस्वती	156
रैदास	159
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक	163
श्री अरविंद	164
महात्मा गांधी	165
पंडित मदन मोहन मालवीय	166
डाक्टर एनीबेसेंट	169
रवीन्द्रनाथ टैगोर	172
श्रद्धानन्द	176
अश्विनी कुमार दत	179
प्रेमचन्द्र	182
जैनेन्द्र कुमार	185

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वेद

माता-पिता गृह-देवता के सदृश्य होते हैं। अतः उनकी सेवायें करके उन्हें संतुष्ट करते रहना चाहिये। माता-पिता के संतुष्ट हृदय से निकला हुआ आशीर्वाद घर में सुखों और शांति की मंदाकिनी प्रदान करता है।

वृद्ध माता-पिता की उपेक्षा कभी मत करो। उनकी उपेक्षा करना ईश्वर की उपेक्षा करने के सदृश्य है। ईश्वर की उपेक्षा करने पर भी दुःखों से मुक्ति मिल सकती है, पर माता-पिता की उपेक्षा करने पर दुःखों से मुक्ति मिलना असंभव है।

भगवान बेद का कथन है, प्रमाद या उच्छृखंलता के वशीभूत होकर माता-पिता के प्रति कटु व्यवहार मत करो। तुम्हारे कटु व्यवहारों से उन की तो कुछ भी हानि नहीं होगी, पर सच मानो, तुम्हारे पथ के पुष्प भी तुम्हारे लिये कांटे बन जायेंगे। उन कांटों के कारण तुम्हारे हृदय में सदा चुभन होती रहेगी।

जो स्नेहमयी माँ तुम्हारे छोटे-छोटे पैरों के आघात को सहन करते हुये अमृतमयी दूध पिलाती रही है और जिसके दूध से ही तुम्हारा शरीर परिपुष्ट हुआ है, हे मनुष्य, तुम उस माँ को दुःखी मत करो। तुम ईश्वर से प्रार्थना करो, वह तुम्हें ऐसी पवित्र बुद्धि दे कि तुम अपनी सेवाओं से अपनी माँ को संतुष्ट करते रहो, उसके संतुष्ट हृदय से निकला हुआ आशीर्वाद प्राप्त करते रहो।

आज तुम बड़े हो गये हो, अपने सारे काम अपने हाथों से कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सकते हो, पर एक दिन तुम अशक्त थे, बिल्कुल निर्बल थे। शैय्या पर ही मल-मूत्र कर दिया करते थे। उस समय कौन तुम्हारे मुख को चूमती थी, कौन तुम्हारे मल-मूत्र से सने हुये शरीर को अपने आंचल से पोंछती थी ? तुम्हारी माँ, केवल तुम्हारी माँ। ऐसी माँ को कष्ट देने पर, ईश्वर भी तुम्हारा कल्याण नहीं कर सकेगा।

पुत्र के लिये व्रत, यज्ञ और अनुष्ठान करना आवश्यक नहीं है। उसके लिये अत्यधिक आवश्यक है, माता-पिता के प्रति निरंतर अनुकूल बने रहना। यदि पुत्र मात्रा-पिता के प्रति अनुकूल बना रहता है तो देव-लोक के सम्पूर्ण देवता और देवियों का आशीर्वाद उसे सहज में ही प्राप्त हो जाता है।

वास्तविक भार्या वही है, जो कांटों भरे पथ में भी अपने स्वामी के साथ-साथ चलती है और दुःख तथा अभाव की पीड़ायें सहन करने पर भी मुख से मधुर शब्द निकालती है।

वास्तविक पति वही है, जो अपनी जीवन-संगिनी को अपने से हेय न समझ कर अपने समान ही उसका आदर करता है और प्रत्येक स्थिति में में उसके प्रति मधुर और मृदुल बचन बोलता है।

यदि तुम्हारे भाई के कारण तुम्हारे धनाधिकारों में बाधा उपस्थित होती हो, तो भी तुम्हें अपने भाई के प्रति अपने मन में द्वेष का भाव नहीं पैदा होने देना चाहिये क्योंकि धन का मूल्य तो होता है, पर भाई के प्रेम का मूल्य नहीं होता। सच मानो, भाई के प्रेम का बंधन टूट जाने पर तुम सदा के लिये अकिंचन बन जाओगे।

कुटुम्ब में जितने सदस्य हैं, सबको सुख चाहिये, शांति चाहिये, पर सबको सुख और शांति कैसे प्राप्त हो सकती है···क्या इस प्रश्न पर कभी विचार किया है ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है—कुटुम्ब के सभी सदस्य प्रेम के सूत्र में आबद्ध रहें, एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों के पालन में सजग और सचेष्ट रहें।

हे मनुष्य, यदि तुम्हारे कुटुम्ब के प्राणी तुम्हें प्यार नहीं देते, तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम चिंता न करो। उनके प्यार न देने पर भी तुम अपने अमृतमय प्यार से उनके हृदय को सींचते रहो, उनके दुःखों की ज्वाला को बुझाते रहे। यही तुम्हारा श्रेष्ठ-धर्म है, यही तुम्हारा परमोच्च कर्तव्य है।

वैर और ईर्ष्या की आग वैर और ईर्ष्या से नहीं बुझती। सच मानो, यदि तुम बैर और ईर्ष्या की आग को बैर और ईर्ष्या से बुझाने का प्रयत्न करोगे, तो उस आग की लपटें और भी अधिक भयानक होगीं। इतनी भयानक होगीं कि उनमें पड़ कर तुम्हारा सारा कुटुम्ब जलकर भस्म हो जायेगा।

तुम्हें केवल अपने कुटुम्बियों को ही अपने स्नेह से नहीं सींचना चाहिये, वरन् उन्हें भी सींचना चाहिये, जो तुम्हारे पड़ोस में रहते हैं, तुम्हारे पास आते-जाते हैं। पड़ोसियों और दूसरों को स्नेह देने से ही तुम्हारे हृदय में उस समभाव की स्थापना होगी, जो परमात्मा को अति प्रिय है।

तुम्हें केवल धन प्राप्त करने के लिये ही प्रयत्न नहीं करना चाहिये। तुम्हें इस बात के लिये भी प्रत्यन करना चाहिये कि तुम्हारा मन निरंतर पवित्र संस्कारों और विचारों से युक्त रहे। यदि तुमने अपने मन के कोष में पवित्र विचारों और संस्कारों के रत्न भर लिये, तो तुम उन रत्नों से संसार को ही नहीं, स्वर्ग को भी खरीदने में समर्थ हो सकते हो।

तुम परमात्मा से धन और मुक्ति के लिये प्रार्थना मत करो। तुम प्रार्थना करो कि तुम्हारे मन के भीतर सदैव सरलता, पवित्रता और समता की गंगा बहती रहे। तुम्हारे मन में जितनी ही अधिक सरतला, पवित्रता और समता होगी, उतना ही अधिक तुम मानवता के निकट भी पहुंच सकोगे।

जिस निषकपट भाव से धेनु अपने वत्स को प्यार करती है, उसी प्रकार तुम्हें भी दूसरों को अपना प्यार देना चाहिये। दूसरों को प्यार देकर तुम अपना मंगल तो करोगे ही, अपने समाज और अपने देश का भी मंगल करोगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम्हारा कुटुम्ब तुम्हारे समाज की एक इकाई है। तुम जो कुछ भी अपने कुटुम्ब में करोगे, उसका सीधा प्रभाव तुम्हारे समाज पर पड़ेगा। अतः अपने कुटुम्ब में प्रेम, सहानुभूति और सौहार्द की गंगा बहाओ। तुम्हारे प्रयत्नों से तुम्हारे कुटुम्ब के भीतर प्रवाहित गंगा तुम्हारे सारे समाज को शीतल बना देगी।

तुम मनुष्य हो, तुम्हारा एक मात्र धर्म है मानवता। जानते हो, तुम्हें मानवता धर्म का पालन किस प्रकार करना चाहिये ? स्वय-हित को छोड़ कर, और पर-हित के लिये चिन्ता करके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपनिषद्

भेद-बुद्धि चाहे वह किसी प्रकार की क्यों न हों, अज्ञानता है। मानव मात्र को इस अज्ञानता से दूर रहना चाहिये, क्योंकि यह अज्ञानता मानव की मानवता को कलंकित करती है।

तुम जाति, वर्ण, प्रान्त और भाषा भेद को अपने हृदय में स्थान देकर उच्च नहीं बन सकते, क्योंकि उच्च बनने के लिये तुम्हें श्रेष्ठ मानव बनना पड़ेगा और तुम्हारे हृदय में भेद के विकार हैं, वे तुम्हारे उच्चासन के लिये उन दीमकों के सदृश्य हैं, जो कागजों के भीतर रहकर उन्हें चाट जाते हैं।

विश्व में कहीं भी द्वैत नहीं है। अतः मानव मानव के मध्य में भी भेद नहीं होना चाहिये। जाति, वर्ण और नाम का जो भेद चारों ओर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह तो केवल कर्मों का विकार है।

जगत में जितने भी प्रकार के भेद हैं, केवल व्यावहारिक हैं। अतः मिथ्या हैं, असत्य हैं। वास्तव में कहीं कोई भेद नहीं है। सर्वत्र अद्वैत्य है, एकत्व है।

जो मनुष्य अखण्ड मानवता को भेद दृष्टि से देखता है, उसकी ऋषियों ने तीव्र निन्दा की है। उन्होंने कहा है—ऐसा मनुष्य घोर अज्ञानता रूपी मृत्यु को प्राप्त करता है। उस मृत्यु को प्राप्त करता है, जिसमें अन्धकार ही अन्धकार होता है।

तुम्हें यदि अमरत्व प्राप्त करना है, तो उसके लिये केवल एक ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपाय है और वह यह कि विद्या को ग्रहण करके भेद की दीवारों को ढहा दो और अखण्ड मानवता के मार्ग पर चलो।

तुम जिस मनुष्य को अपने से हेय और नीच कुल का समझ रहे हो, उसके भीतर भी वही प्राण है, जो तुम्हारे भीतर है। यदि तुम देख सकते तो देखते कि तुम दोनों के प्राणों में कोई अन्तर नहीं है। फिर तो यही कहना पड़ेगा कि तुम उस मनुष्य का नहीं; स्वयं अपने को ही हेय और नीच समझ रहे हो।

सम्पूर्ण सृष्टि में जितनी भी वस्तुयें हैं, ईश्वर से आच्छादित हैं। चींटी से लेकर हाथी तक ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जिसमें ईश्वर न हो।

तुम्हारे पास भोग के जितने पदार्थ हैं, उनका उपभोग तुम त्याग के साथ करो। यदि तुम त्याग के साथ उपभोग न करोगे, तो वे लोग भूखे रह जायेंगे, जो तुम्हारे अड़ोस-पड़ोस में रहते हैं। जो लोग तुम्हारे अड़ोस-पड़ोस में रहते हैं, जानते हो वह कौन हैं? वे तुम्हारे ही रूप हैं। यदि तुम देख सकते तो तुम देखते कि जो आत्मा तुम्हारे भीतर है, वही उनके भी भीतर है।

किसी की सम्पत्ति का अपहरण मत करो। लालच के वशीभूत होकर अधिक धन इकट्ठा मत करो। तुम्हें इन दोनों के कारण सुख नहीं, दुःख ही प्राप्त होगा, क्योंकि इन दोनों से दरिद्रता और असंतोष की ही प्राप्ती होती है।

सारा मानव समाज नरक के सदृश्य बनता जा रहा है। जानते हो क्यों? इसलिये कि समाज का प्रत्येक मनुष्य आज धन और अधिकार के लिये गीद्ध के समान लोलुप बन गया है। जब तक यह लोलुपता मानव हृदय में बनी रहेगी, मनुष्य को वास्तविक सुख प्राप्त कभी नहीं होगा।

जब तक मनुष्य-न्याय और धर्म से उपार्जित सम्पत्ति पर संतोष नहीं करेगा, मानव जगत में लूट और हिंसा होती ही रहेगी। उसी प्रकार होती रहेगी, जिस प्रकार हिंसक पशुओं में होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम अपनी चालाकियों से भरी हुई बुद्धि को चाहे जिस किसी कोमल वस्त्र में लपेटो—देश भक्ति के कोमल वस्त्र में, विश्व बन्धुत्व के कोमल वस्त्र में और वसुधैव कुटुम्बकम् के कोमल वस्त्र में, किन्तु कुछ भी लाभ नहीं होगा। न तो हिंसा कम होगी और न अशांति दूर होगी। ऋषियों का कहना है, चालाकियों से भरी हुई बुद्धि को छोड़ कर, दूसरों की समपति और दूसरों के अधिकारों का आदर करो। केवल इसी से तुम्हें वह वस्तु प्राप्त हो सकती है, जिसके लिये तुम प्रयत्न कर रहे हो।,

जो मनुष्य सभी भूतों में परमात्मा को देखता है, वह न तो किसी की सम्पत्ति का अपहरण करता है और न किसी से घृणा करता है। अतः यदि समाज में सुख और समता का प्रसार करना चाहते हो, तो सभी प्राणियों में परमात्मा को देखने और जानने का प्रयत्न करो।

तुम किससे बैर कर रहे हो? जिससे तुम बैर कर रहे हो, जिसे तुम धर्माविलम्भी समझ रहे हो, वह तो तुम्हीं हो। तुम्हारे मन में आश्चर्य अवश्य पैदा होगा, पर सच बात तो यही है कि संसार में एक को छोड़ कर दूसरा कोई नहीं है।

यदि तुम भेद बुद्धि का परित्याग कर दो, तो यह सारा जगत तुम्हारे लिये स्वर्ग बन जायेगा, क्योंकि भेद बुद्धि को छोड़ देने पर पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक अमीरी-गरीबी और छूत-अछूत में कोई अंतर नहीं रह जायेगा।

तुम्हारे मन की कामना ही शत्रु है। तुम इसी शत्रु को जीतो। इस शत्रु को जीतने पर तुम देवता बन जाओगे जीवन में ही अमरत्व का सुख प्राप्त करोगे।

जिस प्रकार प्रचंड आंधी तिनके को उड़ा ले जाती है और वृक्षों को उखाड़ फेंक देती है, उसी प्रकार तुम्हारे मन की कामना तुम्हारे जीवन तरु को उखाड़ती जा रही है। तुम्हें उससे बचना होगा। उससे बचने पर ही तुम उस ब्रह्मत्व को प्राप्त कर सकते हो, जिसके लिये तुम्हारा जन्म हुआ है।

मन में कामना न रहने पर शरीर सम्बन्धी पीड़ायें भी तुम्हें दुःख न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देंगी। उस समय तुम्हें तुम्हारा शरीर वैसा ही लगेगा, जैसी भुजंग को उसकी केचुल लगती है।

समाज और देश का वास्तविक कल्याण ऐसे ही लोगों से होता है, जो कामनाजयी होते हैं। ऐसे लोगों से कदापि नहीं होता, जो पदों और अधिकारों के लिये आपस में गीद्धों के समान युद्ध करते हैं, श्वानों की तरह आंखें निकालते हैं।

मानव जाति के स्तम्भ कौन हैं? वे नहीं, जो ऊंचे पदों पर हैं। अपितु वे, जो सर्व त्यागी हैं, जिनमें समदृष्टि हैं और जो मानव मात्र में अपने ही समान ममता प्रतिष्ठित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि वशिष्ठ

तुम वाह्य तीर्थों में परिभ्रमण करके व्यर्थ ही अपने समय और धन को नष्ट कर रहे हो ! तीर्थ तो तुम्हारे शरीर के भीतर ही हैं। यदि तुम चाहो तो तुम्हारे शरीर के भीतर के तीर्थ तुम्हें प्रत्यक्ष फल प्रदान कर सकते हैं। उनके नाम हैं—सत्य, क्षमा इन्द्रियनिग्रह, तप, सर्व प्राणियों पर दया, ज्ञान और धैर्य।

तीर्थों के जल में केवल स्नान करने से ही शरीर और मन पवित्र नहीं होता। यदि शरीर और मन को पवित्र बनाना चाहते हो तो क्षमा और दया की गंगा के जल में नहाओ। क्षमा और दया की गंगा के जल में नहाने से तुम्हारा शरीर और मन इतना पवित्र बन जायेगा कि तुम मनुष्य से देवता बन जाओगे।

यदि तुम सभी तीर्थों में स्नान करके यह समझते हो कि तुम्हारा शरीर सर्व प्रकार से शुद्ध हो गया है, तो यह तुम्हारा भ्रम है। शरीर तो उसी मनुष्य का शुद्ध होता है, जिसका मन शुद्ध होता है। अपने मन के भीतर झांक कर देखो, तीर्थों के सलिल जल में स्नान करने से क्या वह शुद्ध हुआ है ?

यदि तुम यह समझते हो कि धन संचय करने से तुम्हें अधिकाधिक सुख प्राप्त होगा, तो यह तुम्हारी भूल है। तुम्हें जगत में सुख धन से नहीं, तप से प्राप्त होगा। अतः धन संचय के लिये प्रयत्न करना छोड़कर तप संचय के लिये प्रयत्न करो। इस नश्वर जगत में श्रेष्ठ मनुष्य वही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है, जो तप-संचय के लिये अपने समस्त लौकिक सुखों का परित्याग कर देता है।

मन के तीव्रगामी रथ पर सवार होकर दौड़ने वाली इन्द्रियां वश में न होने के कारण बीच में ही महापतन के गर्त में गिर जाती हैं। अतः प्रबल पुरुषार्थ के द्वारा इन्द्रियों को अपने वश में करो, इन्हें स्वच्छन्दता पूर्वक दौड़ने मत दो। वास्तविक सुख की यही कुंजी है।

क्या तुम मोक्ष प्राप्त करना चाहते हो? यदि हां, तो तुम्हें सम, सत विचार, सतोष और सतसंग की सेवा करनी पड़ेगी, क्योंकि तुम्हारा प्रिय मोक्ष जिस राजगृह में निवास करता है, उसके द्वार पर यहीं चारों पहरा देते हैं। जब यह प्रसन्न होंगे, तभी उस राजगृह का द्वार तुम्हारे लिये खुल सकेगा, अन्यथा नहीं।

क्या तुम प्रतिदिन देवों की प्रार्थना करते हो? यदि तुम देवों की प्रार्थना करने के पश्चात् असत्य भाषण करते हो तो सच मानो, तुम्हें उस प्रार्थना का फल किंचत मात्र भी प्राप्त नहीं होगा। देवता उसी मनुष्य के ऊपर प्रसन्न होते हैं, जो सत्य की पूजा करता है, सत्य बोलने वालों की प्रार्थना करता है।

यदि तुम्हारे पास श्रेष्ठ ज्ञान है, तो तुम उन मनुष्यों से घृणा मत करो, जो अज्ञानता के सागर में डूब रहे हैं। तुम्हारे श्रेष्ठ ज्ञान की सार्थकता इसी बात में है कि तुम उन डूबने वालों को बाहर निकालो, उनके बीच में रहो और उनके हृदय के भीतर से उस अंधकार को मिटा दो, जिसके कारण वे अपने आप को समझ नहीं पा रहे हैं।

यदि तुमने अपने घर से चोरों को भगा दिया, तो कौन सा शूरता का काम किया? शूरता का काम तो तुम्हारा तब समझा जायेगा, जब तुम अपने मन के चोरों को भगाओगे। जानते हो, मन के घर के चोर कौन हैं? तुम्हारे मन के घर के चोर हैं—हिंसा, द्रोह, लोभ और मोह आदि।

इस जगत में यदि तुम किसी से बचकर रहना चाहते हो, तो उनसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बचकर मत रहो, जो नीची जाति में पैदा हुये हैं, जो कम ज्ञानी हैं, जो निर्धन हैं और जो बुरे रोगों से ग्रसित हैं। तुम्हें वास्तविक रूप में जिन से बचकर रहना है उनके नाम तो यह हैं—सत कर्म न करने वाला, दूसरों से ईर्ष्या करने वाला और अपने कर्तव्यों से विमुख रहने वाला।

प्रतिदिन उषा काल में दूसरे मनुष्यों की निद्रा टूटती हो या न टूटती हो, पर उन मनुष्यों की निद्रा उषा काल के पूर्व ही टूट जाती है, जो ज्ञानी होते हैं, जो प्रसन्नचित्त होते हैं, और जो सदाचरण को ही पवित्र कर्म मानते हैं।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा नाम इस संसार में सदा बना रहे, तो तुम्हें एक महान कार्य करना पड़ेगा। वह कार्य है, अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाना, ज्ञान के आलोक को चारों ओर फैलाना।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे दुःखों का नाश हो, तो तुम्हें मन से शुद्ध और शरीर से बलवान बनना पड़ेगा। इस जगत में शुद्ध मन और बलवान शरीर वाला पुरुष ही अपने दुःखों के फंदों को काटने में समर्थ होता है। जो लोग स्वयं शुद्ध और बलवान न बनकर दूसरों के समक्ष हाथ फैलाते हैं, उनके हाथ आजीवन दूसरों के समक्ष फैले ही रहते हैं।

यदि तुम पर कोई आपदा आ जाय तो उसे दूर करने के लिये किसी मनुष्य की सहायता मत ढूंढ़ो। जिसकी सहायता से आपदा के वे घने बादल छटेंगे, वह तो तुम्हारे हृदय के भीतर ही विद्यमान है और उसका नाम है—धैर्य। धैर्य का अंचल पकड़ो, तुम्हारी नाव किनारे पर अवश्य लग जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि याज्ञवल्कय

पति के प्रयोजन के लिये पति प्रिय नहीं होता। अपने ही प्रयोजन के लिये प्रिय होता है। इसी प्रकार सभी पुत्र, धन और देवता आदि सभी केवल अपने ही प्रयोजन के लिये प्रिय होते हैं।

इस जगत में यदि कुछ रमणीय है, यदि कोई ध्यान करने योग्य है और कुछ चिंतनीय है, तो वह आत्मा है केवल आत्मा है। आत्मा के अतिरिक्त इस नश्वर जगत में न तो कुछ ध्येय है और न कुछ गेय है।

जो मनुष्य आत्मा का दर्शन करता है, आत्मा के सम्बन्ध में सोचता है और आत्मा के सम्बन्ध में मनन, चिंतन करता है, उसे किसी और के सम्बन्ध में सोचने और विचार करने की आवश्यकता नहीं रहती। वह आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करके सपूर्ण विज्ञान का पंडित बन जाता है।

जो मनुष्य आत्मा को न जानकर हवन करता है, यज्ञ करता है और महान तप करता है। उसके वे सभी शुभ और पवित्र कर्म उसी प्रकार मिट जाते हैं, जिस प्रकार बालू पर खिंची हुई लकीरें मिट जाती हैं।

दरिद्र वह मनुष्य नहीं है, जिसके पास धन नहीं होता, अपितु दरिद्र वह मनुष्य है, जो आत्मा को नहीं जानता, जिसके पास आत्म ज्ञान नहीं होता।

कृपण वह मनुष्य नहीं है, जो धन का दान नहीं देता, अपितु कृपण वह मनुष्य है, जो आत्मा को पहचान कर दूसरों के साथ आत्मवत् व्यवहार नहीं करता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ ब्राहमण वही है, जो आत्मा को जानता है। यदि कोई शूद्र आत्मा को जानता है, तो वह ब्राह्मण ही नहीं देवता से भी अधिक श्रेष्ठ हैं।

आत्मा ऐसी वस्तु नहीं जो दृष्टि से देखी जा सके वह दृष्टा है। आत्मा ऐसी भी वस्तु नहीं, जो कुछ कह सके। वह केवल श्रोता है और आत्मा ऐसी भी वस्तु नही, जो किसी का मनन कर सके। वह केवल मन्ता है।

जगत में यदि कोई सब कुछ जानता है, तो वह आत्मा है, यदि कोई सब कुछ सुनता है तो वह आत्मा है, यदि कोई सब का मनन करता है तो वह आत्मा है और यदि कोई पूर्ण विज्ञाता है, तो वह आत्मा है।

आत्मज्ञान उन मनुष्यों के भी आनन्द का भंडार है, जो महान शक्ति शाली होते हैं, जो समृद्धिवान होते हैं, जो विस्तृत भूखंड के अधिपति होते हैं और जो देश-देशों के होते हैं प्रतापी स्वामी।

वेदों और शास्त्रों में कहा गया है कि पितृ लोक, गन्धर्व लोक, देव लोक और मनुष्य लोक में भी सौ प्रकार के आनन्द होते हैं। उन सभी आनन्दों में आत्मानन्द अद्वितीय होता है, अपूर्व होता है। उसके लिये मनुष्यों में ही नहीं, पितरों, देवताओं और गन्धर्वों में भी प्यास होती है।

श्रेष्ठ कर्मों से प्राप्त होने वाले सभी प्रकार के आनन्दों में आत्मानन्द एक ही होता है, अपूर्व होता है। मनुष्य की तृषा को मनुष्य ही नहीं, देवताओं की भी तृषा को मिटा देने वाला होता है।

आत्मानन्द उन्हें भी तृप्ति प्रदान करता है, जिनकी तृप्ति निष्काम कर्मों से भी नहीं होती। आत्मानन्द उनके हृदय में भी संतुष्टि का सागर बहाता है, जिन्हें वेदों और उपनिषदों के श्रवण से संतुष्टि नहीं होती।

आत्मानन्द परम आनन्द है। वह आन्नद है, जिसकी प्राप्ति किसी लोक में नहीं होती। जो मनुष्य इस आनन्द को प्राप्त कर लेता है, वह अपने मानव शरीर में ही परमात्मा के सहश्य हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

Cost:... Date:- 13/9/88

जो मनुष्य आत्मा को जानता है, आत्मा को जानकर कर्म करता है, वह निष्पाप होता है, आप्त काम होता है। ऐसा मनुष्य न तो बार-बार जन्म लेता है, न बार-बार मरता है, वह ब्रह्म के सदृश्य हो कर ब्रह्म में ही समाविष्ट हो जाता है।

जो मनुष्य आत्मा को जानता है, वह शान्त होता है। कामनाओं से शून्य होता है। वह केवल अपनी ही ओर नहीं देखता, सबकी ओर देखता है। वह सबको अपने में और अपने को सब में जानता है।

जो मनुष्य आत्मा को जानता है, वह किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाता। अतः उससे कभी बुरा कर्म नहीं होता वह सब प्रकार से निष्पाप होता है, निष्कलंक होता है। उसकी धवलता चन्द्रमा को भी लज्जित करती है।

ऐसा कोई दुःख नहीं, जो आत्मा के जानने वाले को पीड़ा पहुंचा सके, और ऐसा कोई पाप नहीं जो उसके मन को दग्ध कर सके। वह सम्पूर्ण दुःखों और पापों का शमन करने वाला होता है।

जहाँ अविद्या होती है, और जहाँ आत्मज्ञान का प्रकाश नहीं होता, वही अपने से भिन्न कोई अन्य होता है, वहीं अन्य-अन्य की बात सुनता है और वही अन्य-अन्य का शोषण तथा पोषण करता है।

जहाँ आत्मज्ञान का प्रकाश दिन-रात प्रकाशित होता रहता है, वहाँ अपने से भिन्न कोई अन्य नहीं होता। वहां जो कुछ होता है, सब अपना ही होता है, और जो कुछ किया जाता है, अपने ही लिये किया जाता है।

आत्मा नित्य है, अमर है। वह बन्धनों से रहित है, अविजित है। उसमें बुढ़ापा और तरूणाई नहीं आती। वह जैसा कल था, वैसा आज भी है और कल भी वैसा ही रहेगा।

आत्मा सब में होती है। एक समान होती है। शरीर का रूप-रंग होता है, पर आत्मा का रूप-रंग कुछ नहीं होता। जो लोग जाति, रूप और रंग को दृष्टि में रख कर आत्मा को जानने का प्रयत्न करते हैं, वे उसे करोड़ों वर्षों में भी नहीं जान सकते।

जो मनुष्य जाति, रूप और रंग की दीवार को ढहा कर कर्म का व्यापार करता है, जो सब के हित को अपना हित मानता है और जिसे चांडालों के यहाँ भोजन करने में भी संकोच नहीं होता, समझ लो वह श्रेष्ठ आत्मदर्शी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि जैमिनी

श्रद्धा देवी धर्म की पुत्री है। उनके द्वारा विश्व-पवित्र होता है। अभ्युदयवान बनाता है। इतना ही नहीं, वे सावित्री के सदृश्य जगत को उत्पन्न करती हैं, उसे दुःखों, शोकों और रोगों से बचाती हैं। अतः, यदि अपना कल्याण चाहते हो तो अपने हृदय में श्रद्धा देवी की मूर्ति स्थापित करो।

आत्मवादी विद्वान धर्म का चिन्तन श्रद्धा के द्वारा ही करते हैं और उस चिन्तन के द्वारा उस सुयश को प्राप्त करते हैं, जिसे अमरता की संज्ञा दी जाती है।

यदि तुम्हारे घर में कुबेर के कोष का धन है और यदि तुम इन्द्र के पद पर आसीन हो, किन्तु तुम्हारा हृदय श्रद्धा से शून्य है, तो समझ लो अकिंचन हो, भिखारी के सदृश्य हो।

जिनके पास कुछ नहीं रहता, जो पूर्णरूप से अकिंचन होते हैं, ऐसे हेय और अस्तित्वहीन समझे जाने वाले मनुष्य भी श्रद्धा के द्वारा उस दिव्य लोक को प्राप्त करते हैं, जिसकी प्राप्ति बड़े-बड़े भूपतियों के लिये भी दुर्लभ होती है।

मनुष्य की मनुष्यता और पशु की पशुता के बीच में एक रेखा अंकित है। वह रेखा श्रद्धा को छोड़कर और कुछ नहीं है। मनुष्य श्रद्धा के ही कारण मनुष्य कहलाता है और श्रद्धा से शून्य होने का कारण पशु कहलाता है।

यदि तुम ब्रह्मवेत्ता हो करके भी, उच्चवंश में जन्म लेकर के भी बुरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर्मों के द्वारा जीविका उपार्जन करते हो, तो निश्चित रूप से समझ लो, तुम्हें नरक की यन्त्रणताओं को भोगना पड़ेगा।

जो ईश्वर में श्रद्धा नहीं करते, जो धर्म की मर्यादाओं को भंग करते हैं, जो अपनी वासनाओं की पूर्ति के लिये रहते हैं और जो कृतघ्नी होते हैं, वे कितने ही पुण्य क्यों न करे, नरक की पीड़ाओं से बच नहीं सकते। और तो और स्वयं विष्णु भी उन्हें नरक की पीड़ाओं से बचा नहीं सकते।

जो मनुष्य सहायता करने का बचन देकर सहायता नहीं करता, जो दिन-रात अहंकार के रथ पर आरूढ़ रहता है, जो दूसरों के वैभव को देख कर जलता है और जो दूसरों में दोष निकालने को ही धर्म मानता है, उसे नरक के दुःखों को अवश्य भोगना पड़ेगा। और तो और स्वयं शिव जी भी उसे नरक के दुःखो से बचा नहीं सकते।

जो मनुष्य जीवों की हिंसा में प्रवृत रहता है, जिसके जीवन का अधिकांश समय पर निंदा में ही व्यतीत होता है और जिसके द्वारा जल के संस्थान नष्ट किये जाते हैं, नरक के दुःखों की रचना ऐसे ही मनुष्यों के लिये हुई है। यदि कोई नरक में रहने वाले ममुष्यों की कोई सूची तैयार करे, तो उस सूची में निश्चय ऐसे मनुष्यों की संख्या सब से अधिक होगी, जिन्होंने अपने मित्रों को लांच्छित किया है, जिन्होंने अतिथियों, भूखों और बालकों को खिलाये विना स्वयं खा लिया है, तथा जिन्होंने संन्यास लेकर अपने आश्रम को कलंकित किया है।

वे मनुष्य कदापि स्वर्ग के सुखों की आशा न करें, जो देवताओं के प्रति कृतज्ञ नहीं होते, जो पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ नहीं होते और जो कृतज्ञता पूर्वक अपने माता-पिता के चरणों में मस्तक नहीं झुकाते।

यदि तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं और वे वृद्ध हो गये हैं तो तुम्हें मंदिर में जाकर देवता की मूर्ति के समक्ष शीश झुकाने की आवश्यकता नहीं है। यदि तुम कृतज्ञता पूर्वक अपने वृद्ध माता-पिता के चरणों में अपना शीश झुकाओ तो निश्चित रुपेण तुम्हें वही फल प्राप्त होगा, जो मंदिर में देवता की मूर्ति के समक्ष झुकाने से प्राप्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्या तुम स्वर्ग जाना चाहते हो ? यदि हां, तो तुम्हें सच बोलना पड़गा, हिंसा से दूर रहना होगा और स्वाध्याय पूर्वक धर्म का चिन्तन करना होगा।

स्वर्ग की रचना ऐसे मनुष्यों के लिए हुई है, जो प्रतिदिन प्रातःकाल हवन करते हैं, प्रार्थना करते हैं, और श्रद्धा से उल्लसित होकर परमात्मा का स्मरण करते हैं, उन्होंने जो कुछ प्रदान किया है, उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

जो मनुष्य अपने माता-पिता की सेवा करता है, गुरुजनों की आज्ञाओं का अनुसरण करता है और भीतर बाहर से पवित्र होता है, उसे स्वर्ग में जाने के लिए ईश्वर की कृपा की भी आवश्यकता नहीं होती। उसे अपने आप ही स्वर्ग प्राप्त हो जाता है। यों भी कह सकते हैं कि स्वर्ग स्वयं चल कर उसके पास पहुँच जाता है।

यदि तुम स्वर्ग में जाना चाहते हो तो तुम्हें बड़े परिश्रम से एक ऊंची सीढ़ी तैयार करनी पड़ेगी। जानते हो यह ऊंची सीढ़ी क्या है ? वह ऊंची सीढ़ी है, जीवों पर दया करने की। दूसरों की भलाई की और दूसरों की भलाई के लिए अपने सुखों के परित्याग की। यदि तुम इस सीढ़ी के निर्माण का दृढ़ संकल्प करो, तो निश्चय जानों, स्वर्ग तुम्हें बहुत निकट दिखाई पड़ेगा।

स्वर्ग की चिन्ता मत करो। चिन्ता इस बात की करो कि तुम बड़ों का सम्मान कर रहे हो या नहीं, तुम भय से कांपते हुये मनुष्यों को क्षमादान दे रहे हो या नहीं और तुम दया की याचना करने पर दया दिखा रहे हो या नहीं। यदि तुम इनकी चिन्ता करो, तो स्वर्ग तुम्हारे लिए स्वयं चिन्तित होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि अंगिरा

वे अज्ञानी लोग सकाम कर्मों को संपादित करके यह समझते हैं कि हमने अत्यन्त महत्वपूर्ण काम किये हैं। पर वे यह नहीं जानते कि उनकी सकामकता उन्हें पतन के गर्व में गिरा देगी। कितना ही पवित्र कर्म क्यों न किया जाय, यदि उसके मूल में फल की आसक्ति होगी, तो यह कहने में सकोच नहीं किया जा सकता है कि व्यर्थ सिद्ध होगा।

जो ज्ञानी लोग वनों में या एकान्त में रहते हैं, आसक्तिरहित कर्म करते हैं, श्रद्धा का सेवन करते हैं वे अपने रजोगुण रहित कर्मों से सूर्य के मार्ग के द्वारा उस स्थान में पहुंच जाते हैं, जहां जीवन-मरण से रहित परम पुरुष का निवास रहता है।

सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं, क्योंकि वह देवयान मार्ग सत्य से ही परिपूर्ण है, जिसके द्वारा ऋषिगण परम-सत्यधाम में पहुंचते हैं। जो सत्य की पूजा करता है, वही उस मार्ग पर चल सकता है, वही उस मार्ग से आगे बढ़ सकता है।

परमात्मा तो अतीत है। उसे इन्द्रियों के द्वारा न तो देखा जा सकता है, और न उसका ग्रहण किया जा सकता है। वह तो केवल शुद्ध अंतः-करण वाले मनुष्य के शुद्ध अन्तःकरण द्वारा ही, ज्ञानदृष्टि से देखा जा सकता है, समझा जा सकता है और ग्रहण किया जा सकता है।

परब्रह्म परमात्मा न तो बचन से, न बुद्धि से, और न बहुत सुनने से प्राप्त होता है। वह तो केवल उसी को प्राप्त होता है, जिस पर अनु-कम्पा करके उसे अपने को प्राप्त करा देता है। उसका प्राप्त होना केवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसकी कृपा और उसकी सेवा पर ही निर्भर करता है।

परमात्मा उस मनुष्य को प्राप्त नहीं होता, जो पुरुषार्थ करने में हिचकता है। परमात्मा उस मनुष्य को भी प्राप्त नहीं होता, जो लक्षणों से रहित तप करता है तथा जो परमार्थ में संलग्न रहता है, किन्तु ज्ञानी मनुष्यों की आत्मा इन उपायों के द्वारा परमात्मा के धाम में अवश्य पहुंच जाती है, यों भी कह सकते हैं कि परमात्मा में समाविष्ट हो जाती है।

अविद्या में स्थिरता होकर अपने को परम ज्ञानी और परम बुद्धिमान कहने वाले मनुष्य उसी प्रकार भटकते और ठोकरें खाते हैं, जिस प्रकार अंधे के द्वारा चलाया जाने वाला अंधा भटकता और बार-बार ठोकरें खाकर गिरता है।

कार्यकारण स्वरूप परमात्मा को जान लेने पर जीवात्मा के हृदय के द्वार खुल जाते हैं। सारे संदेह दूर हो जाते हैं और वे सभी कर्म नष्ट हो जाते हैं, जिन्हें शुभ और अशुभ कहते हैं।

परमात्मा जहां रहता है, वहां न तो सूर्य होता है, न चन्द्रमा होता है, न तारा गण होता है और न बिजलियां होती हैं। फिर वह स्थान दिव्य प्रकाण से प्रकाशित रहता है। वह प्रकाश परमात्मा का होता है, केवल परमात्मा का। सूर्य, चन्द्रमा, तारागण और बिजलियां परमात्मा के ही उस प्रकाश से प्रकाशित होता है।

तुम अमृत स्वरूप परब्रह्म को कहां खोज रहे हो? वह तो तुम्हारे सामने है, तुम्हारे पीछे है, तुम्हारे दाहिने है, तुम्हारे बांये हैं और तुम्हारे चारों ओर है। यह सम्पूर्ण जगत जो चारों ओर फैला हुआ है दिखाई दे रहा है, अमृत स्वरूप परब्रह्म का श्रेष्ठ रूप है।

जीवात्मा और परमात्मा उन दो पक्षियों के सदृश्य हैं, जो साथ-साथ, श्रद्धायुत भाव से एक वृक्ष की एक ही डाल पर निवास करते हैं। उनमें से एक तो उस वृक्ष के कर्म रूपीं फलों को खाकर उनका स्वाद लेता है, उनका उपभोग करता है, किन्तु दूसरा न तो स्वाद लेता है, न उप-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भोग करता है । वह तो केवल देखता रहता है, देखता रहता है

जीवात्मा शरीर की डाल पर परमात्मा के साथ बैठा तो रहता है, पर वह शरीर की आसक्ति में डूबा रहता है, शरीर की आशक्ति में डूबा रहने के कारण वह नाना प्रकार के शोकों और दुःखों से ग्रसित होता रहता है । जब कभी परमात्मा की कृपा होती है । तभी वह उन शोकों और दुःखों के बन्धनों से छूट पाती है ।

जिस प्रकार हवा के झोंकों और वर्षों के थपेड़ों से मणि के ऊपर मिट्टी की राशि नष्ट हो जाती है और मणि अपने वास्तविक रूप देदीप्यमान हो उठती है, उसी प्रकार सत्संग और भजन के प्रभाव से जीवात्मा के ऊपर पड़ा हुआ सघन पर्दा हट जाता है, वह अपने वास्तविक रूप में प्रकाशित हो उठता है । उस समय वह दुःखों और शोकों से रहित होता है, बिल्कुल रहित होता है ।

शरीर के भीतर परम प्रकाशित परमात्मा रहते हुये भी दृष्टिगोचर नहीं होता । यदि उसे देखना चाहते हो, तो ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो, संयम से जीवन व्यतीत करो और दुखियों की सहायता की अग्नि में अपने को जला डालो । परमात्मा तुम्हारे शरीर से बाहर निकलकर, तुम्हारे सामने खड़ा हो जायगा ।

परमात्मा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और विराट् से भी विराट है । वह दूर से भी अधिक निकट है । उसकी खोज में मारे-मारे क्यों भटक रहे हो ? वह तो तुम्हारे शरीर की गुहा में ही बैठा हुआ है ।

जिस प्रकार नदियां अपने नाम और असतित्व से शून्य होकर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार ज्ञानी मनुष्यों की आत्मा नाम और रूप से रहित होकर परमात्मा में समाविष्ट हो जाती हैं, उसमें विलीन हो जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि आपस्तम्ब

मनुष्य को स्वर्ण, रजत और धन का संग्रह न कर के अच्छे विचारों का संग्रह करना चाहिये, क्योंकि स्थायी और परम सुख धन से नहीं, अच्छे विचारों से ही प्राप्त होता है।

वास्तविक सुख क्या है—मन की शान्ति और संतोष। यदि मन में शान्ति और संतोष नहीं है, तो पास में करोड़ों की सम्पत्ति होने पर भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता। अत: मनुष्य को मन की शान्ति और संतोष के लिये ही प्रयत्न करना चाहिये।

जो मनुष्य नाना प्रकार के दुःखों से ग्रसित प्रणियों की ओर ध्यान न देकर, केवल अपने सुखों के लिये ही प्रयत्न करता रहता है, उससे बढ़ कर क्रूर हृदय कोई दूसरा नहीं होता।

यदि मनुष्य अपने अड़ोस-पड़ोस और समीप के मनुष्य के अभावों की ओर से आखें बन्द करके यज्ञादि करता है, तो उन यज्ञों से पैदा हुआ धुंआं देवताओं की आँखों में कडुवाहट उत्पन्न करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करते।

धर्म का सोपान है परहिताय। यदि मनुष्य परहिताय की ओर ध्यान न देकर धर्म के देवता को संतुष्ट करना चाहता है, तो उसके सम्पूर्ण प्रयत्न निष्फल ही होगें।

मनुष्य अपने सुख और स्वाद के लिये स्वस्थ्य और सुन्दर प्राणियों की हत्या करके प्रसन्न होता है। किन्तु यह वह नहीं जानता कि अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस क्रूर कर्म से अपनी मानवता को कलंकित कर रहा है। ईश्वर ने उसे मनुष्य इसलिये नहीं बनाया है कि वह मूक और निरीह प्राणियों का वध करे बल्कि, इसीलिये बनाया है कि वह उनका पालन करे।

मनुष्य के ज्ञान की शोभा इस बात में है कि वह संसार के प्राणियों के दुःखों पर विचार करके, उन्हें उनसे छुड़ाने का प्रयत्न करे। यदि विवेकवान मनुष्य ऐसा नहीं करता, तो उसके विवेक को व्यर्थ ही समझना चाहिये।

वह मनुष्य बड़ा पुण्यात्मा और धर्मात्मा है, जो सदा यह सोचता रहता है कि काश, मैं सम्पूर्ण दुःखी प्राणियों के हृदय के भीतर निवास करके, अकेला ही सबके दुःखों को भोग सकता हूं।

क्या तुम अपने को दयालु और परोपकारी समझते हो? यदि हाँ तो अपने हृदय में घुस कर देखो, क्या तुम्हारे हृदय में यह विचार है। कि मेरे समस्त पुण्य पापियों के पास चले जायें और पापियों के सारे बुरे कर्म मेरे पास आ जायें।

जिस मनुष्य के हृदय में यह रोगियों, विकलागों और अंगहीनों को देख कर दया नहीं उत्पन्न होती उसे मनुष्य नहीं, राक्षस समझना चाहिये।

क्या तुम अपने को सामर्थ्यवान कहते हो, यदि हाँ, तो भयातुर प्राणियों की रक्षा करे। यदि तुमने सामर्थ्यवान होकर दुःखी और भयापुर प्रणियों की रक्षा नहीं की तो निश्चय जानो, तुम्हें उनकी आह की अग्नि में जलना होगा।

दुःखी, दीन और भय से आकुलित प्राणियों की रक्षा करने से जो सुख प्राप्त होता है, स्वर्ग का सुख उसकी तुलना में सहस्रांश भी नहीं होता। अतः यदि सुख की कामना है तो, दीनों और दुखियों की रक्षा में अपना मन लगाओ।

मैं जल से बाहर निकली हुई आकुल मछलियों को छोड़ कर स्वर्ग भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नहीं जाना चाहता। यदि ईश्वर अपने सम्पूर्ण लोकोत्तर वैभवों को मुझे दे, तो भी मैं यही कहुंगा कि मैं व्याकुल मछलियों के पास रेत में ही रहूंगा।

मैं नर्क में रहूं या स्वर्ग में, किन्तु मेरे मन और मेरे शरीर द्वारा जो पवित्र कर्म हुये हैं, उनके सुखद फल दुखियों को सदा प्राप्त होते रहें -मैं यही चाहता हूं।

विधाता ने प्राणियों में गायों की रचना करके मनुष्यों का बड़ा उपकर किया है, क्योंकि मनुष्यों की जो भलाई गायों से होती है, वह किसी अन्य से नहीं होती। इसीलिये मैं सतत् गायों के बीच में रहना चाहता हूं। मेरा दृढ़ विश्वास है, यदि मैं गायों के बीच में रहूं, तो शरीर से ही नहीं, मन से भी सदा स्वस्थ्य और निरोग रहूंगा।

क्या तुम अपने बुरे कर्मों के फल से मुक्त होना चाहते हो यदि हां, तो अपने को संकटों में डाल करके भी उस मनुष्य की रक्षा करो, जो सहायता के लिये तुम्हें बुला रहा है। तुम इस बात पर विचार न करो कि जिसे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है, वह कौन है ? तुम इस बात पर विचार करो, तुम उसे कितनी सहायता दे सकते हो ? तुम उसकी सहायता करके उसका नहीं, अपना ही उपकार करोगे, क्योंकि उसकी सहायता करके तुम्हारी ही मानवता सूर्य के सदृश्य आलोकित होगी।

जिस मनुष्य की बुद्धि बुरे रास्तों की ओर जाती है, उसके लिये किसी भी धर्म में स्थान नहीं है। उसे मानव जाति का कलंक ही समझना चाहिये। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। मनुष्य यदि सच्चे मन से अहिंसा धर्म का पालन करे, तो उसे बिना किसी जप और तप के ही परम पद प्राप्त हो जाता है।

साधु और सज्जन किसे कहते हैं ? साधु उसे नहीं कहते जो पीत वर्ण के वस्त्र धारण करता है। साधु और सज्जन उसे कहते हैं, जो सभी प्राणियों के हित को अपने चित्त में धारण करता है।

गुरुजनों और महान् पुरुषों की उपेक्षा करके यदि कोई अनुष्टान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और जप-तप से ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करे, तो उसका वह प्रयत्न बालू की दीवार उठाने के प्रयत्न के समान ही व्यर्थ जायेगा।

कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य विषयासक्त होने पर भी मोक्ष की कामना करता है। वह यह नहीं जानता कि, मुक्ति और विषयासक्ति में परस्पर वैर है। अतः यदि तुम मुक्ति चाहते हो, तो तुम्हें सांसारिक विषयों की आसक्ति को छोड़ना पड़ेगा।

क्या तुम भगवान को नैवेद्य अर्पित करना चाहते हो ? यदि हां, तो दीनों की सेवा करो, विकलागों को अपनी शरण में लो। भगवान को प्रसन्न करने के लिये, दीनों की सेवा और विकलागों को शरण में लेने से बढ़ कर कोई दूरा नैवेद्य नहीं होता।

जो मनुष्य किसी जीव का वध करता है, वह किसी अन्य का नहीं स्वयं परमात्मा का ही वध करता है, क्योंकि परमात्मा स्वभूतों में निवास करते हैं।

यदि तुमने तीर्थों की यात्रा के लिये धन संग्रह किया है, तो उसे दीनों और दुखी की सेवा में खर्च कर दो, क्योंकि दीनों की सेवा से बढ़ कर कोई दूसरा तीर्थ नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि अगस्त्य

सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों को वश में करना तीर्थ है, समस्त प्राणियों पर दया करना तीर्थ है और हृदय की सरलता भी एक तीर्थ है। जो मनुष्य इन तीर्थों में स्नान करता है, उसका जीवन शुद्ध सोने के सदृश्य चमक उठता है।

दान, सत्य, मन का संयम और संतोष भी एक पावन तीर्थ है। जो मनुष्य इन तीर्थों में परिभ्रमण करता है, वह सूर्य की भांति तेजवान होता है और वह सौ वर्ष से अधिक जीवित रह कर संसार के समस्त सुखों का उपभोग करता है।

प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ है। ज्ञान और धैर्य भी तीर्थ है। तप भी सुपावन तीर्थ के सदृश्य है। इन समस्त तीर्थों में अच्छे कार्यों में प्रवृत रहने वाले मनुष्य का शुद्ध अन्तःकरण सबसे बड़ा तीर्थ है।

पानी में स्नान करने से शरीर की शुद्धि अवश्य होती है, पर मन की शुद्धि तो यम, संयम और ब्रह्मचर्य आदि तीर्थों में स्नान करने से ही होती है। जगत में श्रेष्ठ मनुष्य वही है जो शरीर की अपेक्षा मन की शुद्धि पर अधिक ध्यान देता है।

शरीर की शुद्धि से मनुष्य आंशिक निरोग बन सकता है, पर जीवन का वास्तविक सुख तो उसे उसी समय प्राप्त हो सकता है, जब उसका मन निरोग होगा, स्वस्थ्य होगा और पूर्ण रूप से शुद्ध होगा। अतः वास्तविक सुख की कामना करने वाले प्रत्येक मनुष्य को मन की शुद्धता पर विशेष महत्व देना ही चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शुद्ध वही है, जिसका मन विकारों से शून्य है। जो लोभी है, हिंसक है, विषयासक्त है, असत्य भाषी है और बंचक, है वह करोड़ों तीर्थों के पवित्र जल में स्नान क्यों न करे, अशुद्ध ही रहता है।

यदि तुम निर्मल और सब प्रकार से शुद्ध बनना चाहते हो, तो केवल शरीर को स्वच्छ रखने से ही काम न चलेगा। इसके लिये तुम्हें अपने मन को माँजना होगा, मन के भीतर से उन मैलों को बाहर निकलना होगा, जिनके कारण तुम्हारा मन मलिन हो गया है।

कौवा बार-बार जल में डुबकियाँ लगाने के पश्चात् भी गन्दी वस्तुयें ही खाता है। इसी प्रकार जो लोग जल में स्नान करने को ही पवित्र समझते हैं, वे कौवों के समान ही विषयों की ओर दौड़ते हैं। यदि जीवन का कल्याण चाहते हो तो काग-प्रवृति को छोड़ो। चित्त को निर्मल बनाओ, हंसों का सुन्दर बाना धारण करो।

कितने जीव हैं, जो जल में ही जन्म लेते हैं, जल में ही सदा निवास करते हैं और जल में ही अपनी सांसें भी तोड़ देते हैं, किन्तु क्या उन्हें मौक्ष मिलता है? क्या उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है? निश्चित रूपेण न तो उन्हें मोक्ष मिलता है; न स्वर्ग की प्राप्ति ही होती है, क्योंकि, वे जल में रहने पर भी मानसिक विकारों से ओत-प्रोत रहते हैं।

तुम प्रश्न कर सकते हो मानसिक मल किसे कहते हैं? विषयों में आसक्त होना ही मानसिक मल है और विषयों से आनासक्त होने का ही नाम मानसिक निर्मलता है।

यदि मदिरा से भरे हुये घड़े को गंगा के पवित्र जल में बार-बार डुबोया जाए, तो क्या भीतर से उसकी शुद्धि हो सकती है? नहीं हो सकती। इसी प्रकार वह मनुष्य बार-बार तीर्थों के जल में नहाने से शुद्ध नहीं हो सकता, जिसके मन के भीतर विकारों के मल का अम्बार रहता है।

यदि तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है, तो तुम कितना ही दान क्यों न करो, कितना ही स्वाध्याय क्यों न करो। कितना ही कीर्तन-वन्दन क्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

न करो और कितना ही पवित्र ग्रन्थों का पाठ क्यों न करो, सब व्यर्थ ही जायेगा। उसी प्रकार व्यर्थ जायेगा, जिस प्रकार बंजर भूमि में बीजा-रोपण करने से परिश्रम और बीज—दोनों व्यर्थ जाते हैं।

इन्द्रियों को वश में करने वाला मनुष्य जहां भी कहीं निवास करता है, उसके लिये वहीं काशी होती है, वहीं कुरूक्षेत्र होता है और वहीं होता है नैमिषारण्य। वह अपने पैरों में तीर्थों को बांधे हुए, धरती पर सुख से विचरण करता है।

जो मनुष्य विकारों के मल से रहित, ज्ञान के जल से परिपूर्ण मानस तीर्थ में श्रद्धापूर्वक स्नान करता है, स्वर्ग उसके निकट चला आता है। वह अपने मानव शरीर में ही देवता के सदृश पवित्र बन जाता है।

यदि तुम तीर्थों का वास्तविक फल प्राप्त करना चाहते हो, तो अपने हाथों को संयमित रखो, अपने पैरों को संयमित रक्खो, अपने विचारों को संयमित रखो, अपनी विद्या अपने पद को भी संयमित रखो। देखो, कहीं ऐसा न हो कि तुम कुमार्ग की ओर चले जाओ भ्रष्टाचार के पंक में फंस जाओ। यदि ऐसा हुआ, तो सच मानो, तुम्हें तीर्थों का रंच मात्र भी फल प्राप्त नहीं होगा।

जो मनुष्य अहंकार से शून्य होता है, जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक वस्तु से संतुष्ट रहता है और जो आवश्यकता से अधिक धन का संचय नहीं करता, वह अपने घर में ही पवित्र से पवित्र तीर्थों के फलों का भागीदार होता है। उसके भाग्य की मनुष्य ही नहीं देवता भी प्रशंसा करते हैं।

जो मनुष्य खान की तरह धन के पीछे नहीं दौड़ता, जो थोड़े में ही संन्तुष्ट रहता है और जो केवल धन प्राप्ति के लिये नये-नये उद्योगों में प्रवृत नहीं होता, देवता भी उसका समादर करते हैं, उसके लौकिक और पारलौकिक सुखों का सतत ध्यान रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि गौतम

अधिक दिनों तक परीक्षा करने के पश्चात् ही किसी को अपना मित्र बनाना चाहिये। मित्र बनाने के पश्चात् उसका परित्याग नहीं करना चाहिये।

राग, द्वेष, दर्प, क्रोध और उपकार में विलम्ब करने वाला मनुष्य प्रशंसनीय होता है। कुवृतियों को कार्य रूप में परिणत करने में जो मनुष्य जितना ही अधिक बिलम्ब करता है, वह उतना ही अधिक दुःखों से बचता है।

जो मनुष्य जितने ही अधिक समय तक ज्ञानी मनुष्य का साथ करता है, जितने ही अधिक समय तक वृद्धों की अधिक सेवा करता है और जितने ही अधिक समय तक सतपुरुषों की संगत में रहता है, वह उतना ही अधिक सुखी रहता है।

जो मनुष्य विजयी होता है, जो वृद्धों का आदर करता है, जो विद्वानों के विचारों को सुनने में धैर्य का परित्याग नहीं करता और जो गुरुजनों का आदर करता है, वह सम्मान का पात्र होता है।

जो मनुष्य धर्मयुक्त वचनों को श्रद्धा से सुनता है और जो किसी के प्रश्न का उत्तर सोच-विचार कर देता है, वह बहुत दिनों तक दुखों से बचा रहता है।

जो मनुष्य इन्द्रियों के सुखों के लोभ के वशीभूत होता है, वह अवश्य संकट ग्रस्त हो जाता है। इसके विपरीत सन्तोषी और निराशक्त मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के लिये सर्वत्र धन ही धन रहता है सुख ही सुख रहता है ।

संतोष ही वास्तविक सुख और असन्तोष ही दुःख है । अतः सुख की इच्छा रखने वाले मनुष्य को संतोष का ही आश्रय लेना चाहिये ।

जो मनुष्य केवल शरीर की ओर ध्यान देता है, उसे अंत में दुःखों का भागी बनना पड़ता है । क्योंकि शरीर की ओर ध्यान देने से शरीर तो अच्छा रहता है, पर मन कुरूप हो जाता है जो विचारों का प्रेरक होता है ।

यदि सौंदर्य की प्यास हो, तो मन की सुन्दरता की खोज करो । मन की सुन्दरता को प्राप्त करने से ही सारी तृषा शान्त हो जाती है ।

जो मनुष्य प्रत्येक स्थिति में शान्त बना रहता है, वह मनुष्य होते हुये भी देवता के सदृश्य होता है । ऐसे मनुष्य जहां भी होते हैं, वहां सूर्य की तरह अंधकार को मिटाते रहते हैं ।

यदि मोह करना ही है, तो ऐसी वस्तु से मोह करना चाहिये जिसका विनाश कभी न हो । ऐसी वस्तु तो आत्मा के अतिरिक्त और कोई नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि भृगु

जो मनुष्य सदा कुमार्ग पर चलते रहते हैं, और जो सबका अहित करते हैं, उन्हीं को दुष्ट समझना चाहिये। ऐसे मनुष्यों से बच कर रहने और चलने में ही सुख प्राप्त होता है।

जो लोग धर्म और अधर्म का विचार करते हुए वेदोक्त मार्ग पर चलते हैं और दूसरों के हितों में संलग्न रहते हैं, उन्हें साधु कहा जाता है। ऐसे मनुष्यों की संगत में रहने से मंगल ही मंगल होता है।

जो परमात्मा की भक्ति में सहायक है, साधु पुरुष जिसका पालन करते हैं और जो स्वयं अपने लिये आनन्ददायक होता है। उसे धर्म कहते हैं।

यह संसार ईश्वर का स्वरूप है। इसका कारण भी ईश्वर ही है और स्वयं मैं भी ईश्वर का अंश हूं—इस ज्ञान को ही ज्ञान कहा जाता है।

परमात्मा ही सम्पूर्ण देवतामय है। मैं बड़ी श्रद्धा से उसकी पूजा करूंगा। मनुष्य की इसी श्रद्धा को भक्ति कहते हैं।

सम्पूर्ण प्राणियों में परमात्मा का ही निवास है। इस अभेद बुद्धि को ही समता कहते हैं।

सुख और दुःख में एक समान रहने और जो कुछ मिल जाए उसी में संतुष्ट रहने को ही चित्त की शान्ति कहते हैं।

जो मनुष्य घर का परित्याग कर देता है। कुटुम्बियों की ओर से निरासक्त हो जाता है और धन का संचय नहीं करता, उसी को सन्यासी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो मनुष्य पत्थर और स्वर्ण को एक समान समझते हैं, मित्र और शत्रु के साथ एक-सा व्यवहार करते हैं और इन्द्रीय सुखों में लिप्त नहीं होते, उन्हीं को विरक्त कहते हैं।

सच्चे संन्यासी सम्पूर्ण जीवों और प्राणियों से स्नेह करते हैं, किसी में भी आसक्ति नहीं रखते और सबको अपना ही स्वरूप समझते हैं।

सच्चे सन्यासी मठ बना कर नहीं रहते। वे सन्ध्या होते ही वनों और गुफाओं में चले जाते हैं। जो कुछ प्राप्त ही जाता है, स्वाद से दूर उसी को खा कर सतुष्ट रहते हैं। जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर अंधकार नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार सच्चा सन्यासी जहां भी पहुंचता है। अपने ज्ञान के प्रकाश से अज्ञानता के अन्धकार को नष्ट कर देता है।

केवल वस्त्र धारण करने से ही कोई संन्यासी नहीं बन जाता। संन्यासी बनने के लिये मन को उसी प्रकार तपाना पड़ता है जिस प्रकार सोने को आग में तपाया जाता है ?

केवल घर का परित्याग करने से ही क्या होगा ? जब तक स्वादों में लिप्त जिह्वा की बागडोर को अपने हाथों में दृढ़ता से नहीं लोगे, तब तक सन्यास धर्म का पालन नहीं हो सकेगा।

तुम व्यर्थ ही दूसरों पर कुपित होते हो, तुम अपनी इन्द्रियों पर कुपित क्यों नहीं होते, जो तुम्हें दिन-रात भटकाती रहती हैं। सच मानो, जब तक तुम अपनी इन्द्रियों को बस में नही करोगे, तुम से धर्म का पालन नहीं हो सकेगा।

अधिक कहो नहीं, जो कुछ कहो, उसे करो। कहने से नहीं करने से ही कुछ होगा। जब तक अपने चित्त को कर्म में नहीं लगाओगे कंगाल ही बने रहोगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि बैशम्पायन

मूर्खों की संगत में मत रहो। जो मनुष्य मूर्खों की संगति में रहता है, उसे जाल में फंसे हुए पक्षीं की भांति ही छटपटाना पड़ता है।

धन की खोज में इधर-उधर न भटक कर, साधु पुरुषों की खोज करो। जो मनुष्य साधु पुरुषों की खोज करता है और उनकी संगत में रहता है, उसे अपने आप ही सब प्रकार के सुख प्राप्त होते रहते हैं।

साधु पुरषों में रहने से हृदय में धर्म बुद्धि उत्पन्न होती है। ऐसा कोई भी सुख नहीं है, जो धर्म बुद्धि से प्राप्त न होता हो।

जिन पुरुषों के पास शुद्ध विद्या हो, और जो सदा शुद्ध कर्मों में सलग्न रहते हो, उन्हीं की संगति में रहने का प्रयत्न करो। जो मनुष्य इस प्रकार के श्रेष्ठ पुरुषों की संगति में रहता है, उसे मोह से उत्पन्न कष्ट झेलने नहीं पड़ते।

सबसे बड़ा सुख वह है, जिसे अपने ज्ञान का दम्भ होता है। ऐसे मनुष्य से यथा साध्य बचने का प्रयत्न करना चाहिये।

जिस प्रकार पुष्पों के सौरभ के सम्पर्क में जो वस्त्र, जल, वायु, तैल और भूमि सुवासित हो जाती है, उसी प्रकार अच्छे मनुष्यों की संगति में रहने पर उनके गुणों से मन और हृदय प्रभावित होता रहता है।

जिस प्रकार जल से अग्नि शान्त हो जाती है, उसी प्रकार ज्ञान से सांसारिक से ताप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य ज्ञान का आश्रय लेता है वह सांसारिक संतापों पीड़ित नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम्हारा मन शारिरिक कष्टों से पीड़ित है, तो तुम्हें अपने मन के भीतर घुस कर देखना चाहिये कि कहीं कोई मानसिक कष्ट तो नहीं है। क्योंकि मानसिक कष्ट से ही शारीरिक शरीर की ओर ध्यान न देकर मन की ओर ध्यान दो। सच मानो, यदि तुम्हारा मन स्वस्थ्य रहेगा, तो तुम्हारा शरीर भी सदा स्वस्थ्य रहेगा। जो लोग मन की ओर ध्यान नहीं देते, वे ही सदा शरीर से अस्वस्थ रहते हैं।

तुम-भूत पिशाच से डरते हो, पर उस तृष्णा से नहीं डरते, जो तुम्हारे मन के भीतर छिप कर बैठी हुई है। सच मानों तुम्हारे मन की तृष्णा तुम्हारे लिए भूतों और पिशाचों से भी अधिक दुःखदायनी है। यदि दुःखों से बचना चाहते हो, तो तृष्णा को अपने मन के भीतर से निकाल दो।

तुम तृष्णा के वशीभूत होकर जिन बुरे कर्मों को बड़े चाव से करते हो, उनसे तुमको कभी सुख प्राप्त नहीं होगा। सच मानों, उन बुरे कर्मों के रूप में तुम अपने हाथों से ही अपने विनाश के लिये खाईयां खोदते हो।

तृष्णा कभी वृद्ध नहीं होती। वह अब मन में समा जाती है, तो निरन्तर बढ़ती ही जाती है। अतः तृष्णा को मन से दूर ही रखना चाहिये। उसके लिए एक ही उपाय है—अच्छे मनुष्यों की संगति करो।

जिस प्रकार लकड़ी अपने भीतर से ही उत्पन्न हुई आग से जलकर नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने मन के भीतर से ही पैदा हुए लोभ, मोह और तृष्णा की आग में जल कर नष्ट हो जाता है।

विद्वान पुरुषों ने उच्च स्वरों से घोषणा की है—तृष्णा नहीं, संतोष ही श्रेष्ठ है। सुख से जीवित रहना चाहते हो, तो विद्वान पुरुषों की घोषणा को सुनो और अपने हृदय में स्थान दो।

तुम अपनी जिस तरुणाई और अपने जिन प्रिय जनों तथा जिस सम्पदा पर भूले हुए हो वह तो परछाईं की तरह है। अभी है, थोड़ी ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देर के पश्चात् लुप्त हो जायेगी। अतः इनके मोह में न पड़ कर, उस ज्ञान के मोह में पड़ो जो तुम्हारे लिये सुख का द्वार उन्मुक्त करेगा।

जो मनुष्य धर्म के लिए धन प्राप्त करना चाहता है, उसे धन की ओर से उदासीन ही हो जाना चाहिए। क्योंकि शरीर में कीचड़ लगा कर उसे धोकर साफ करने की अपेक्षा यही अच्छा है कि कीचड़ से दूर ही रहा जाए।

जो मनुष्य सत्य बोलता है और अपने को क्रोध से दूर रखता है, जीवन में उसी को सुख और शान्ति प्राप्त होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि रमण

तुम समर्पण करना तो चाहते हो। किन्तु क्या समर्पण का अर्थ जानते हो? बिना अर्थ समझे हुये किया हुआ समर्पण भी सफल नहीं होता।

समर्पण का अर्थ कैसे समझोगे हो? बार-बार विचार करने और अनुशीलन करने से। जब तक अपने समर्पण पर बार-बार विचार नहीं करोगे। समर्पण का अर्थ समझ में नहीं आयेगा। यदि समर्पण के पश्चात् भी सफलता प्राप्त न हो, तो रुको नहीं। बार-बार अनुशीलन करो। बार-बार अनुशीलन करने से गुथि खुल आयेगी और तुम सफलता के पास पर पहुंच जाओगे।

मनसा, वाचा और कर्मणा से किये हुए समर्पण और ज्ञान में कोई अन्तर नहीं होता। क्योंकि शुद्ध ज्ञान का दूसरा नाम आत्मसमर्पण है।

क्या तुम ईश्वर से प्रेम करते हो? यदि हां ती सौदेबाजी मत करो। सौदेबाजी के साथ किया हुआ समर्मण कभी पूर्ण नहीं होता।

यदि तुम ईश्वर की भक्ति, ज्ञान और प्रेम के पथ पर चलना चाहते हो, तो ईश्वर से किसी भी चीज का मांगगा छोड़ दो। जब तक ऐसा नहीं करोगे, ईश्वर के प्रेम के सच्चे राही नही बनोगे।

क्या तुम मुक्ति चाहते हो? यदि हां, तो अपने मन की अहंकार और ममता का विनाश करो। वास्तविक मुक्ति इसी को कहते हैं।

अहंकार और ममता दोनों साथ-साथ रहते हैं। एक का विनाश करने पर दूसरे का विनाश अपने आप ही हो जाता है। अत: तुम्हें अपने मन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भीतर से दोनों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

वास्तविक ज्ञानी उसी को कहते हैं जो अहंकार और ममता पर विजय प्राप्त करने में सफल होता है। जो ममता को संग में लेकर चलता है, उसे ज्ञानी और साधु कभी नहीं समझना चाहिये।

भक्ति श्रेष्ठ है या ज्ञान। इस पर विवाद मत करो। क्योंकि दोनों में कोई अन्तर नहीं है, दोनों एक समान है।

ईश्वर क्या है—उस बात को जानने के लिये दुखियों की सेवा करनी चाहिये। जब तक दुःखियों की सेवा नहीं करोगे, ईश्वर को सच्चे रूप में नहीं समझ सकोगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महर्षि कर्वे

अपने निश्चय का परित्याग कभी न करो। कितनी ही विघ्न-बाधायें सामने आयें, कितनी ही आपदायें मार्ग रोकें, किन्तु रुको नहीं। निश्चय के पथ पर आगे बढ़ते जाओ। अवश्यमेव तुम्हारा निश्चय पूर्ण होगा।

यदि कार्य में सफलता नहीं प्राप्त हो रही है, तो आकुल होकर कार्य को छोड़ मत दो। परिश्रम के साथ कार्य में लगे रहो। सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

ध्येय को प्राप्त करना चाहते हो, तो कठिनाईयों से भयभीत न हो। कठिनाईयों को पैरों से कुचलते हुये मंजिल की ओर बढ़ो। तुम्हारा ध्येय तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

किसी के जीर्ण-शीर्ण शरीर को देखकर यह नहीं समझ लेना चाहिये कि वह कुछ नहीं कर सकेगा। चींटी बहुत छोटी है, किन्तु वह धीरे-धीरे चल कर पर्वत के ऊपर भी पहुंच जाती है। इसी प्रकार जीर्ण-शीर्ण मनुष्य में भी कार्य करने की अदभुत शक्ति छिपी रहती है। अतः शरीर को नहीं शक्ति को भी आंकना चाहिये।

निराश मत हो। निराशा के अंधकार में भी आगे बढ़ते जाओ। निश्चय आशा का सूर्य उदय होकर तुम्हारा स्वागत करेगा।

सचाई के रास्ते पर चलो। सत्य को परमेश्वर मानकर उसकी पूजा करो, तुम्हारी सारी कठिनाईयां अपने आप ही दूर होती जायेंगी।

तुम गरीब हो इसका दुःख नहीं है; दुःख तो इस बात का है कि,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विद्यार्थी अवस्था में ही तुम्हें फैशन ने घेर रखा है। सच मानो, विद्यार्थी जीवन और फैशन में आपस में बड़ा बैर है।

विद्या धन से नहीं, परिश्रम से आती है। यदि पास में धन नहीं है, घबड़ाओं नहीं। परीश्रम करके पढ़ो। विद्या अवश्य प्राप्त होगी।

सामाजिक आडम्बरों में धन खर्च मत करो। धन बड़े परिश्रम से पैदा होता है। अतः उसे सदा ऐसे कामों में खर्च करो, जिससे अपनी भलाई होने के साथ ही साथ समाज की भी भलाई हो।

कठिन से कठिन दुःख पड़ने पर भी कर्तव्य पालन से विरक्त नहीं होना चाहिये। दुःख तो दूर हो जायेगा, पर कर्तव्य पालन न करने से जो हानि होगी, वह कभी पूरी न हो सकेगी।

शिक्षा प्रभाव पूर्ण उसी समय हो सकती है, जब शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगी। जो शिक्षा ऊंग्रेजी की माध्यम से दी जाती है। वह भारतीय जीवन के लिये उपयुक्त नहीं हो सकती।

जीवन और समाज की उन्नति के लिये स्त्रियों को शिक्षित करना परमावश्यक है। अतः जितना भी अधिक स्त्री शिक्षा के लिए त्याग करना पड़े करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मदालसा

हे पुत्र, तू शुद्धात्मा है। तुम्हारा कोई नाम नहीं है। तुम्हारा यह शरीर भी तुम्हारा नहीं है। यह तो पंच भुतों के द्वारा निर्मित है, फिर तू किसलिये शोकित है ?

पुत्र, तुम्हारी पाँचों इन्द्रियों में भांति-भांति की जो कल्पनायें होती हैं, उनसे भी तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। वे भी पंच भूतात्मक ही हैं। अतः तू किसलिये रो रहा है ?

संसार में निर्बल भूत सबल भूतों के सहयोग से उनृति को प्राप्त करते हैं, इसी प्रकार अन्न, जल और दूसरे प्रकार के विविध खाद्य पदार्थों के सहयोग से शरीर का भी विकास होता है, पर तुम्हारी तो भौतिक पदार्थों से न उन्नति होती है, न विकास होता है, फिर तू भौतिक पदार्थों से मोह क्यों करता है।

तुम्हारा यह शरीर रूपी चोला तुम्हारे शुभ कर्मो के ही कारण प्राप्त हुआ है। अतः शरीर रूपी चोले के प्रति मन में आसक्ति रखना उचित है।

यह मेरा पुत्र है, यह मेरी मां है, यह मेरे पिता है, यह मेरी पत्नी है और यह मेरा भाई है—यह सभी सम्बन्ध नाते और तो पंच भूतात्मक हैं। इनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः इनके मोह में फंस कर कर्तव्य को भूल जाना उचित नहीं है।

यद्यपि जगत के सभी भोग पदार्थ दुःख जनक है, किन्तु मोह ग्रस्त मन फिर भी इनके पीछे भागता रहता है। भांति-भांति के दुःख भोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की आसक्ति के ही कारण पैदा होते हैं। श्रेष्ठ जब भोगों की ओर नहीं भागते, इसीलिये वे सदा सुखी और प्रसन्न चित रहते हैं।

स्त्रियों की जो मधुर हंसी मन को विमोहित करती है, वह हड्डियों के प्रदर्शन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसी प्रकार सुन्दर नेत्र मज्जा की कालिमा ओर मोटे-मोटे कुछ मास के पिडों के अतिरिक्त कुछ नहीं है जिस युवती स्त्री के सौंदर्य पर विमोहित होकर पुरुष अपने स्वरूप को भूल जाता है, वह हड्डियों और मांस के बने हुए एक आकार को छोड़कर और कुछ नहीं होती। अत: उसके मोह में फंसकर अपने स्वरूप को भुला देना उचित नहीं है।

पृथ्वी पर सवारी चलती है, सवारी पर शरीर बैठा रहता है। शरीर के भी भीतर एक अन्य पुरुष विद्यमान रहता है, किन्तु पृथ्वी और सवारी के प्रति उतनी ममता नहीं रहती, जितनी ममता शरीर के प्रति रहती है—यही तो सबसे बड़ी अज्ञानता है।

दीन-दुखियों को भोजन देकर तृप्त करना, सभी प्राणियों पर दया करना, सभी प्राणियों का पालन करना और ज्ञान की दृष्टि से जगत की सम्पदा को देखना—श्रेष्ठ राजा के यही कर्तव्य है।

दीन-दुखियों की सहायता के लिए धन प्राप्त करना, स्त्रियों के प्रति मातृभाव रखना, न्याय और सत् की रक्षा के लिए युद्ध करना—यहीं वीर राजाओं का धर्म है।

सभी प्रकार की इच्छाओं का त्याग करना ही श्रेष्ठ धर्म है। जगत में उसी मनुष्य को सुख प्राप्त होता है, जो कामनाओं के पीछे नहीं दौड़ता। तुम्हें धन के लिए कामनायें नहीं, श्रेष्ठ मनुष्यों की संगत के लिए ही कामनायें करनी चाहिए।

यदि कामना करनी ही है, मुक्ति की प्राप्ति की कामना करो, क्योंकि मुक्ति की प्राप्ति की कामना अन्यान्य शुद्र कामनाओं को नष्ट कर देती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

युधिष्ठिर

गृहस्थ के अन्न में सभी प्राणियों का भाग होता है। अतः सच्चा गृहस्थ वही है, जो उदारता पूर्वक सभी प्राणियों को भोजन देकर संतुष्ट करता है।

भोजन देने में यह नहीं देखना चाहिये कि जिस मनुष्य को भोजन दिया जा रहा है, वह किस जाति और कुल का है? इसके विपरीत यह देखना चाहिये कि वह कितना भूखा है?

जो मनुष्य किसी भूखे मनुष्य को भोजन देकर उसे संतुष्ट करता है, उसे यज्ञ करने के समान ही फल प्राप्त होता है।

सत पुरुष वही है, जिसके घर में अतिथियों के लिए आसन, स्थान पीने के लिए ठंडा जल, भोजन के लिए अन्न और स्वागत के लिए मीठी वाणी सदा प्रस्तुत रहती हैं! ऐसे सत् पुरुष के घर में देवता भी निवास करने के लिए उत्कंठित रहते हैं।

जो मनुष्य प्यासे मनुष्यों को पानी भूखों को भोजन और परिश्रान्त मनुष्यों को सुख पहुंचाता है, तथा रोगियों की सेवा करता है, उसे श्रावन महिने की झड़ी के समान ही देवताओं की कृपा निरतंर मिलती रहती है।

तुम जिस पुत्र, जिस स्त्री और जिस भृत्य को इतन प्रेम कर रह हो, क्या वे भी तुम से इतना ही प्रेम करते हैं सच मानो, जिस दिन तुम्हारे प्रेम और आदर में कमी हो जायगी, उस दिन उनका रुख बदल जायगा। अतः उनकी आसक्ति में फंसना उचित नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

केवल अपने लिये ही भोजन बनाना उचित नहीं है । अपने लिए भोजन बनाते हुए सदा दूसरों का भी ध्यान रखना चाहिये ।

जो मनुष्य किसी के द्वारा क्रोध किये जाने पर भी क्रोध नहीं करता, वह अपने को क्रोध से उत्पन्न दुःखों से तो बचाता ही है, दूसरों को भी दुःखों से बचाता है । ऐसे मनुष्यों की गिनती देवताओं की कोटी में होती है ।

जो मनुष्य क्षमावान होता है, उसकी सर्वत्र विजय होती है । यदि तुम अपने विरोधियों से दुःखी हो, तो तुम्हें क्षमा का सहारा लेना चाहिये । तुम्हारे मन के दुःख अवश्यमेव नष्ट हो जायेंगे ।

क्रोधी मनुष्य के हृदय में सच्चाई, शुद्धता, धैर्य और सहनशक्ति का पूर्ण रूप में अभाव होता है, क्योंकि जहाँ इन गुणों का निवास नहीं होता ।

क्षमा ही धर्म है, क्षमा ही ज्ञान है और क्षमा ही सर्व श्रेष्ठ कर्तव्य है । जो मनुष्य क्षमा की इन विशेताओं को जानता है, वह मनुष्य अपने जीवन में क्या नहीं कर सकता ?

यदी तुम मृत्यु के पश्चात् ब्रह्मलोक में जाने की अभिलाषा रखते हो, तो यज्ञ, जप और तप कुछ भी न करो । केवल क्षमा की सीढियां बनाओ । तुम्हारी क्षमा की सीढियां तुम्हें अवश्य ब्रह्म लोक में पहुंचा देंगी ।

रुपये-पैसे के दान से कुछ नहीं होगा । समस्त प्राणियों की रक्षा करो । यही सबसे बड़ा दान है । जो मनुष्य इस दान धर्म का पालन करता है, उसे देवता भी अपना मित्र बनाते हैं ।

विद्वान वही है, जो धर्म को जानता है । इसके विपरीत धर्म और ईश्वर को न जानने वाला मनुष्य महा अज्ञानी होता है । ऐसे मनुष्य से सदा दुर ही रहना चाहिये ।

जो शिक्षित होने पर भी बुरे कर्मों में लिप्त रहता है, असत्य बोलता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है, लोभ के वशीभूत रहता है, उसे मुर्ख ही समझना चाहिये । इसके विपरीत जो अनपढ़ होने पर भी सत् कर्मो में संलग्न रहता है,उसे विद्वान समझना और शिक्षित समझना चाहिये ।

लोग प्रति दिन मनुष्यों को मरते हुये देखते हैं और यह जानते हैं कि एक दिन उन्हें भी यमलोक में जाना पड़ेगा, फिर भी वे संसार में ही रहने की अभिलाषा रखते हैं । इससे बढ़कर दूसरा आश्चर्य क्या हो सकता है ।

माँ भूमि से भी अधिक गौरवमयी होती है । पिता आकाश से भी अधिक ऊंचा होता है । मन वायु से भी अधिक गमनशील होता है और चिन्ता अग्नि से भी अधिक दहनशील होती है—जो मनुष्य इस ज्ञान को जानता है वही श्रेष्ठ ज्ञानी होता है ।

यदि लोभ और मोह जैसे परम बलशाली शत्रुओं से अपनी रक्षा चाहते हो, तो मन को संयमित करो, संयम ही एक ऐसा अस्त्र है, जो इन शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा करने में समर्थ हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भगवान बुद्ध

बैर से बैर कभी शान्त नहीं होता। बैर शान्त होता है अबैर से। अतः यदि तुम्हारे साथ कोई बैर करे, तो उसके प्रति अबैर का व्यवहार करो। निश्चय, एक दिन आयेगा, जब वह तुम्हारा मित्र बन जायेगा।

अज्ञ मनुष्य यह नहीं सोचता कि उसे एक न एक दिन इस जगत से जाना ही होगा, पर विज्ञ लोग सदा इस बात को अपने मन में सदा इस बात को सोचते रहते हैं। यही कारण है, उनकी जगत और जगत की वस्तुओं में आसक्त नहीं होती और जब आसक्त नहीं होती, तो उनके मन में विकार भी उत्पन्न नहीं होता।

जो उद्योगी मनुष्य सोच-विचार कर काम करता है, प्रमाद के वशीभूत नहीं होता और व्यवहार में सुजनता रखता है, उसे सफलता तो प्राप्त होती ही है, उसके यश में वृद्धि भी होती है।

प्रमाद के चक्र में मत फंसों। मन को वासना में शून्य बनाओ। प्रमाद और वासना ही है, जो तुम्हें महान् और अनन्त से मिलने नहीं देती। अतः जितना भी शीघ्र हो सके, इन दोनों पर्दों को फाड़ कर फेंक देना चाहिये।

तुम समझते हो, तुम्हारी असफलता और तुम्हारी अभावमयता का कारण तुम्हारा दुर्भाग्य है। नहीं, तुम्हारी असफलता का तुम्हारे भाग्य से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका सम्बन्ध तो तुम्हारे उस मन से है, जो वासना की आंधी में दिन रात तिनके के समान उड़ा करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि कोई मुझसे कहे कि, तुम दीनों पीड़ितों को छोड़ कर स्वर्ग में जा कर रहो, तो मैं अस्वीकार कर दुंगा, क्योंकि मुझे वहां भी सुख प्राप्त नहीं होगा। जानते हो क्यों ? इसलिये कि, वे दीन और पीड़ित मेरे अपने ही रूप है।

तुम जिस शरीर के मोह में फंस कर अपने कर्तव्य को भूल रहे हो, वह समुद्र के फेन के समान है। जिस प्रकार फेन का कोई अस्तित्व नहीं होता, उसी प्रकार तुम्हारे शरीर का भी कोई अस्तित्व नहीं है। अतः शरीर की ओर ध्यान न देकर आत्मा की ओर ध्यान दो। आत्मा की ओर ध्यान देने से ही तुम मृत्यु—जेता बन सकते हो।

ताजे दूध की तरह किया हुआ निन्दित कर्म भी शीघ्र फल नहीं देता। वह तो उस आग के समान जलता है, जो भस्म की ढेरी के नीचे छिपी रहती है।

यदि तुम्हारा मित्र दुष्ट प्रकृति का है, तो शीघ्र ही उसका साथ छोड़ दो, क्योंकि उसकी मित्रता से तुम्हें लाभ तो बिल्कुल न होगा, किन्तु उस के बुरे आचरण तुम्हारे जीवन के तरु के मूल को भी निर्बल बना देंगे।

बुरी प्रकृति के पुरुषों की संगति मत करो। यदि संगति करनी ही हो, तो सत पुरुषों को ढूंढ़ों, क्योंकि बुरी प्रकृति के मनुष्यों की संगति विष और सत् पुरुषों की संगति अमृत के समान होती है।

जिस प्रकार ठोस पर्वत प्रबल से प्रबल आंधी से विचलित नहीं होता, उसी प्रकार सत पुरुष निन्दा और प्रशंसा से विचलित नहीं होते। वे दोनों अवस्थाओं में सम बने रहते हैं, बिल्कुल सम।

कुशल सारथी के द्वारा शिक्षित अश्वों की भांति जिसकी इन्द्रियां शांत रहती हैं, उसकी प्रशंसा मृत्यु लोक के मनुष्य ही नहीं, स्वर्ग लोक के देवता भी करते हैं।

जो मनुष्य अभिमान रहित है और जिसने अपने मन के भीतर से ईर्ष्या को बाहर निकाल दिया है, उसकी तुलना में देवता भी तुच्छ होते हैं। दूसरे शब्दों में देवता भी उससे स्पृहा करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुमसे कभी कोई निंदित कर्म हो जाये, तो उसे पुनः-पुनः मत करो। बार-बार निन्दित कर्म करने से दुःख का संचय होता है। ऐसा संचय जो कभी समाप्त नहीं होता।

यदि तुम कोई पवित्र कर्म करते हो, तो उसे पुनः-पुनः करो, क्योंकि पवित्र कर्मों से सुख और शान्ति का संचयन होता है। ऐसा संचयन जो कभी कम नहीं होता, कभी समाप्त नहीं होता।

मुख से कटु वचन मत निकालो। तुम्हारे कटु वचन को सुन कर वह मनुष्य भी कटु वचन बोलेगा, जिसके प्रति तुमने मुख से कटु वचन बाहर निकाले हैं। जानते हो, तुम दोनों की इस कटुता का क्या परिणाम होगा? शत्रुता की अग्नि की भीषण लपेंट उठेगी, जिनमें जल कर तुम दोनों का जीवन राख बन जायेगा।

अज्ञ मनुष्य निन्दित कर्म करते हुये सोच-विचार नहीं करते, पर जब उनके निन्दित कर्म की ज्वालायें उन्हें जलाने लगती हैं, तो वे ईश्वर और भाग्य को दोष देते हैं। वे यह नहीं जानते कि उनके निन्दित कर्म की ज्वालायें बन कर उन्हें जला रही हैं।

जिस मनुष्य की आकांक्षायें समाप्त नहीं होती, उसे संन्यास ग्रहण करने और पीत वस्त्र धारण करने में भी शान्ति नहीं मिलती क्योंकि शान्ति और आकांक्षाओं से चिर शत्रुता है।

लोभ से दूर रहो। तुम्हारे पास जो कुछ और जितना है, उसी पर संतोष करो। सच मानो, यदि तुम लोभ के वशीभूत होकर अपने हाथों और पैरों को चलाओगे, तो तुम्हें कुछ और तो न मिलेगा, वह अवश्य छिन जायेगा, जो तुम्हारे पास है।

आलस्य मत करो। आलस्य तुम्हें सफलता से दूर तो ले जायेगा ही, घुन की तरह तुम्हारे शरीर को भी चाट जायेगा, क्योंकि न जाने कितने रोग हैं, जो आलस्य के विकार से ही पैदा होते हैं।

तुम दूसरे के धन को जल के बुलबुले और मृग मरीचि के सदृश्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समझो। यदि तुमने इस विचार को दृढ़ता के साथ अपने हृदय में स्थान दे दिया, तो साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या, स्वयं मृत्यु का देवता भी तुम्हें प्रणाम करेगा।

जो मनुष्य रुपयों की वर्षा होने पर भी विचलित नहीं होता और निरंतर समबुद्धि बना रहता है, उसे अपने आप ही बुद्धत्व प्राप्त हो जाता है, क्योंकि समबुद्धि का ही दूसरा नाम बुद्धत्व है।

तुम मल से घृणा करते हो, पर द्वेष को अपने भीतर छिपाये रहते हो, सच मानो, मैल की दुर्गन्ध से कहीं अधिक बढ़ कर उस द्वेष की दुर्गन्ध है, जिसे तुम अपने हृदय में लिये हुये घूमा करते हो।

आग तो केवल तुम्हारे घर और तुम्हारे घर की वस्तुओं को ही जलाती है, पर द्वेष तो तुम्हारे उस जीवन को भी जला कर भस्म कर देगा, जो तुम्हें बड़ी कठिनाईयों के पश्चात प्राप्त हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भगवान महावीर

धर्म सर्व श्रेष्ठ और मंगलमय है। कौन-सा धर्म ?—अहिंसा, संयम और तप।

जिस मनुष्य का मन अहिंसा, संयम और तप में संलग्न रहता है। उसे मनुष्य ही नहीं, देवता भी आदर पूर्वक नकस्कार करते हैं।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह—यह पांच महाव्रत हैं। इन पांच महाव्रतों के अनुसार आचरण करते हुये धर्म पालन में लगे रहने से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

किसी भी जीव को न मारना, बिना दिये हुये किसी की वस्तु को न लेना, विश्वासघात न करना और असत्य न बोलना—जो इन चारों नियमों का पालन करता है, उसी को वास्तव आत्मनिग्रही कहते हैं।

जो मनुष्य अधर्म करता है, पापों के आचरण में संलग्न रहता है, उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। ऐसा मनुष्य जीवित रहते हुये भी मृतक के समान ही होता है।

मनुष्य को अपनी युवा अवस्था में ही धर्म का आचरण कर लेना चाहिये। यह नहीं सोचना चाहिये कि जब वृद्धा अवस्था आयेगी तब धर्म का आचरण करेंगे। सच मानो, वृद्धावस्था में कुछ नहीं हो सकेगा, क्योंकि वृद्धा अवस्था में रोगों का आक्रमण तो होता ही है, इन्द्रियां भी आसक्त हो जाती है।

जो मनुष्य स्वयं दूसरों की हिंसा करता है, हिंसा कराने में दूसरों को प्रोत्साहन देता है, वह अपने लिये शत्रुओं की संख्या बढ़ाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करता। जिस तरह कांटों की वाणी में चारों ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कांटे ही कांटे होते हैं, उसी प्रकार इस प्रकार के मनुष्य के चारों ओर शत्रु ही शत्रु होते हैं।

संसार में चल, अचल तथा जड़ और चेतन जितने भी प्राणी हैं, उन पर किसी प्रकार का दंड का प्रयोग नहीं करना चाहिये। जो लोग ऐसा करते हैं, वे नरक के दुःखों के भागी बनते हैं।

संसार में जितने जीव हैं, वे सभी जीवित रहना चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता। अतः किसी जीव को मरने के लिये विवश करना महा पाप है। जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें मनुष्य के रूप में राक्षस ही समझना चाहिये।

अगर तुम अपने को ज्ञानी समझते हो, तो तुम्हारा कार्य यही होना चाहिये कि किसी जीव की हिंसा मत करो, क्योंकि यही सब से बड़ा ज्ञान है।

अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को पीडा पहुंचाना या पीड़ा पहुंचाने के लिये दूसरों को प्रोत्साहित करना सबसे बड़ा अधर्म है। जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें युग-युगों तक की यातनायें मिलती हैं।

क्या तुम अपने को साधु कहते हो यदि हां, तो यह देखो, तुम दूसरों को दुःख पहुंचाने वाली वाणी बोलते हो या नहीं? यदि दूसरों को दुःख पहुंचाने वाली वाणी बोलते हो, तो तुम्हें श्रेष्ठ साधु बनने का दावा छोड़ देना चाहिये।

क्या तुम अपने को श्रेष्ठ मानव समझते हो? यदि हां, तो यह देखो कि तुम्हारे हृदय में दूसरों को दुःख पहुंचाने का भाव तो नहीं है? यदि है तो तुम श्रेष्ठ मानव नहीं कहे जा सकते।

यदि तुम किसी को पाप कर्म करते हुये देख रहे हो, तो भी तुम्हें पाप युक्त वाणी नहीं बोलनी चाहिये। जो मनुष्य प्रत्येक स्थिति में अपने मन और अपने हृदय को संयम की डोरी में कसे रहता है, उसी को श्रेष्ठ साधु समझना चाहिये।

बिना दिये हुये किसी की वस्तु को मत लो। इसे चोरी कहते हैं। चोरी से बढ़ कर संसार में दूसरा कोई पाप नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महात्मा ईसा

जिनके भीतर दैन्यभाव उत्पन्न हो गया है, वे प्रशंसा के पात्र हैं, क्योंकि ईश्वर का साम्राज्य उन्हीं के लिये है।

जो लोग अति भाव से द्रवित होकर आंसू बहाते हैं, वे वंदनीय हैं। क्योंकि उन्हें ईश्वर का आश्वासन प्राप्त होगा।

जिनके हृदय में विनय और विनम्रता का निवास रहता है, वे धन्य है, क्योंकि वे सम्पूर्ण पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर लेंगे। जिनके हृदय में धर्माचरण की अभिलाषा की तीव्रता रहती है, वे धन्य है, क्योंकि पूर्णता उन्हीं को प्राप्त होगी।

जो पुरूष दयालु हैं, दूसरों के प्रति अपने हृदय में दया रखते हैं वे धन्य हैं, क्योंकि ईश्वर की दया उन्हीं को प्राप्त होगी।

जिनका अन्तःकरण छल और कपट से रहित है, सब प्रकार से शुद्ध है, वे प्रसंशा करने के योग्य हैं, क्योंकि ईश्वर का साक्षात्कार उन्हीं को होगा।

जो लोग हर एक प्रकार की स्थिति में अपने मन को शान्त रखते हैं, वे धन्य हैं, क्योंकि ईश्वर के सच्चे पुत्र वे ही कहे जायेंगे।

धर्म के प्रति दृढ़ता दिखाने के कारण जिन्हें कष्ट प्राप्त होता है और जो उस कष्ट को धैर्य पूर्वक सहन करते हैं, वे धन्य है, क्योंकि ईश्वर के प्रेम के वास्तविक अधिकारी वे ही होंगे।

यदि तुम्हारा दाहिना नेत्र तुम्हें कुमार्ग पर ले जाता है, तो निकाल कर फेंक दो। सच है, तुम कुरूप बन जाओगे, पर तुम्हारा शरीर नरक का दुःख भोगने से बच जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दुष्ट मनुष्य का विरोध मत करो। वह तुम्हारे जिस अंग पर आघात कर रहा है, उसके सामने अपना दूसरा अंग भी कर दो अर्थात एक गाल पर चपत लगा रहा हो, तो दूसरी ओर का गाल भी उसकी ओर कर दो।

अपने शत्रुओं से घृणा मत करो। जो तुमसे घृणा करता है, तुम्हारा अमंगल चाहता है, उस पर भी तुम प्रेम की वर्षा करो और उसके मंगल की कामना करो।

ईश्वर और धन, दोनों का प्रेम एक साथ नहीं हो सकता। तुम्हें किसी एक के प्रेम को छोड़ना ही पड़ेगा। अच्छा हो, तुम धन से प्रेम न करके ईश्वर से प्रेम करो, क्योंकि ईश्वर से प्रेम करने पर तुम्हे धन तो प्राप्त हो जायेगा, पर धन से प्रेम करने पर ईश्वर प्राप्त नहीं होगा।

यदि तुम सच्चे मन से याचना करोगे, तो तुम्हारी झोली अवश्य भर जायेगी। खटखटाने से ही द्वार खुलता है। अतः खटखटाना सीखो सच्ची याचना करना सिखो।

यदि मैं देव पद को प्राप्त करके भी मृदुवाणी न बोलू, तो मेरा अस्तित्व खोखली झंकार के समान ही होगा। अतः मृदु वाणी बोलो, मृदु वाणी तुम्हें मनुष्य से देवता बना देगी।

यदि मुझमें पर्वतों को भी उठा लेने की शक्ति हो, और प्राणीयों के प्रति प्रेम न हो, तो मेरी वह शक्ति निरर्थक होती है। अतः प्राणियों से प्रेम करो। प्राणियों से प्रेम करने से ही तुम शक्तिमान बन जाओगे।

प्रेम सोने की वह कुन्जी है, जो मनुष्य ही नहीं, ईश्वर के भी हृदय के द्वार खोल देती है। अतः प्रेम का सहारा लो। तुम्हें मनुष्य ही नहीं ईश्वर के भी हृदय का प्रेम प्राप्त होगा।

तुम जिसे पापी समझकर पत्थर मार रहे हो, उसे पत्थर न मारकर अपने हृदय का प्यार दो, क्योंकि अपने हृदय में घुसकर देखो तुमने भी उसी की तरह प्यार किये हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एपिक्यूरस

कलह और विवाद दोनों हमें बहुत अच्छे लगते हैं, किन्तु हम यह नहीं जानते कि इन दोनों से हम स्वयं अपनी कितनी हानि करते हैं ? अतः हमें इनसे बचना चाहिये ।

हम जब दूसरों पर क्रोध करते हैं, तो प्रचंड रूप धारणा कर लेते हैं । हम समझते हैं कि हम जिस पर क्रोध कर रहे हैं, हमारे क्रोध से उसका अपकार होगा । यह हमारी भयंकर अज्ञानता है । क्रोध से दूसरे का नहीं, स्वयं अपना ही अपकार होता है ।

तुम दूसरों की क्या भलाई करोगे ? हृदय के भीतर पैठ कर देखो, क्या तुमने अपनी भलाई की है । अर्थात् क्या तुमने मानवी गुणों को अपनाया है ।

तुम दूसरों की बुराईयों को सुधारने की बात करते हो तो यह तुम्हारी विडम्बना है । अपने हृदय के भीतर घुसकर देखो, क्या तुमने अपनी बुराइयां सुधारी हैं ?

कीचड़ में पत्थर फैंकोगे, तो क्या होगा क्या कीचड़ उछल कर तुम्हारे शरीर में लग नहीं जायेगी ? इसी प्रकार बुराई के बदले बुराई करोगे तो बुराई ही मिलेगी । भलाई चाहते हो तो बुराई के बदले भलाई करना सीखो ।

यदि तुम बुरे मनुष्यों को अच्छे मार्ग पर चलाकर उनकी भलाई कर ना चाहते हो, तो यह काम उपदेश से नहीं हो सकेगा । यह होगा भला बन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर उदाहरण प्रस्तुत करने से। तुम जितना ही अपने को भला बनाओगे दूसरे लोग भी तुम्हें वेचकर उतना ही भला बनेंगे ।

यदि तुम्हारे साथ भोजन करने और बैठकर जल पीने तथा बात-चीत करने से बुरे लोग अच्छे बन सके, तो उन्हें अपने साथ भोजन करा में तुम्हें हिचकिचाना नहीं चाहिये, क्योंकि तुम बुरे आदमी को अच्छा बनाकर महान् कार्य करोगे ।

बुरे आदमियों को अच्छा बनाने में यदि तुम्हारा अपमान होता हो तो उस अपमान को प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लो। क्योंकि बुरे आदमी को अच्छा बनाकर तुम उस संसार को सुन्दर वनाओगे, जो ईश्वर की कला है। ईश्वर की कला अपने आप में सुंदर बनी रहे यही हमारा और तुम्हारा धर्म होना चाहिये।

तुम जिसकी भलाई करना चाहते हो, उसकी कठोर बातों को भी सहन करो। यदि कठोर वाणी के बदले कठोर वाणी का ही प्रयोग करोगे तो तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी। तुम्हारी इच्छा तो तब पूरी होगी, जब तुम विष को पचाकर अमृत दोगे। बिना विष को पचाये हुये, दूसरों की भलाई कदापि नहीं की जा सकती ।

जो लोग बड़े-बड़े भवनों में रहते हैं और अच्छे वाहनों पर चलते हैं, वे गरीबों की भलाई क्या कर सकते हैं ? गरीबों की भलाई के लिये तो कांटों की राह पर चलना पड़ता है, स्वयं गरीब बनना पड़ता है।

मेरी इच्छा के अनुसार ही कार्य हो। इस आकांक्षा को भीतर से निकाल दो। यदि सुखी बनना चाहते हो, तो अपने हृदय में इस विचार को स्थान दो जैसी और जिस प्रकार की स्थिति होगी, मैं उसी के अनुसार कार्य करूंगा ।

किसी दूसरे आदमी के दोषों से तुम्हारा अहित होगा, इस विचार को तुम्हें अपने हृदय से निकाल देना चाहिये। तुम्हारा अहित तो तुम्हारे ही उन दोषों से होगा जिन्हें तुम बड़े प्यार से अपने हृदय में छिपाये रहते हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जब दूसरों का अहित होता है, तो तुम कहते हो कि यह तो संयोग से हो गया, किन्तु अपना अहित होने पर तुम दुःखी बन जाते हो सच्चे मनुष्य की पहचान यह नहीं है सच्चा मनुष्य तो वह है, अपने और दूसरों के अहित को एक समान समझता है।

तुम्हें अपने बालक में तो सुन्दरता दिखाई पड़ती है, किन्तु दूसरों के बालकों में तुम्हें कुरूपता को छोड़कर और कुछ नहीं दिखाई पड़ती। यह अन्तर तुम्हारे मन के मोह के कारण है। तुम्हारा मन मोह से जितना ही ही अधिक ग्रसित होगा उतना ही अधिक तुम्हारे और दूसरों के बीच का अन्तर बढ़ेगा।

सच्चे मनुष्य को अपने दुःखों के तराजू से ही दुसरों के दुःखों को भी तौलना चाहिये। ऐसे ही मनुष्य देश और समाज की शोभा होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाणक्य

विपत्तियों से सुरक्षा पाने के लिये धन को बचाना परमावश्यक है। धन से भी अधिक आवश्यक है स्त्री की रक्षा करना। स्त्री से भी अधिक आवश्यक है अपनी रक्षा करना। जो मनुष्य इन तीनों बातों को दृष्टि में रखकर कार्य करता है, वह सदा संतुष्ट रहता है।

जिस स्थान में अपना सम्मान न हो, जिस स्थान में अपने भाई बन्धु न हो और जिस स्थान में रहने से विद्या तथा सज्जनों के सतसंगों का लाभ न प्राप्त हो वहां कदापि नहीं रहना चाहिए। ऐसे स्थानों में रहने पर, मनुष्य को दारुण दुःख को छोड़कर और कुछ नहीं प्राप्त होता।

मनुष्य को ऐसे लोगों के साथ मित्रता कदापि नहीं करनी चाहिए, जो जीविका विहीन हों, जो धृति रहित हों, जो भय से शून्य हों, जो लज्जा विहीन हों और जो कुशलता से रहित हों। जो मनुष्य इन गुणों से शून्य मनुष्यों से मित्रता करता है, उसे पश्चाताप करना पड़ता है।

जो मनुष्य निश्चित वस्तुओं का परित्याग करके अनिश्चित वस्तुओं को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, उसके हाथ से निश्चित वस्तुयें भी निकल जाती हैं। अनिश्चित वस्तुओं की प्राप्ति का कोई प्रश्न ही नहीं रहता, क्योंकि वे तो पहले से ही अनिश्चित रहती हैं।

जिस मनुष्य का पुत्र आज्ञाकारी हो, और जिसकी पत्नी मधुर-भाषिणी, इच्छाओं के अनुसार काम करने वाली हो और जो मनुष्य प्राप्त धन से संतुष्ट रहता हो, उसके लिये यह पृथ्वी ही स्वर्ग के सदृश्य होती हैं, क्योंकि इन तीनों वस्तुओं से जो सुख प्राप्त होता है, वह स्वर्ग को छोड़कर और कहीं नहीं मिलता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपने मन में जो सोचो, उसे इधर-उधर विचारों के रूप में प्रगट मत करो। जिस प्रकार कृपण मनुष्य सोने को बचाकर रखता है, उसी प्रकार अपने मन में सोची हुई बात को बचा कर रखो और बहुत ही गुप्त ढंग से उसे कार्यान्वित करो। सफलता का यह एक ऐसा मंत्र है, जो कभी विफल नहीं होता।

अज्ञानता दुःख का कारण होती है। युवा अवस्था भी यदि नियंत्रित न हो, तो दुःख ही देती है। किन्तु दूसरों के घर जाकर रहना तो और भी अधिक दुःख का कारण बनता है। ऐसे दुःख का कारण बनता है, जिसे वज्रसा कठोर हृदय भी सहन करने में सक्षम नहीं होता।

वह माँ शत्रु और वह पिता बैरी के सदृश्य होता है, जो अपनी संतानों को शिक्षा से वंचित रखता है। शिक्षा से वंचित संतानें मनुष्य जाति में उसी प्रकार अशोभनीय होती हैं, जिस प्रकार हंसों में बगुला अशोभनीय होता है।

यदि अपने बालकों का भविष्य परमोज्जवल बनाना चाहते हो, तो उन्हें अपने दुलार की गंदी हवा में मत रखो। जिस प्रकार गंदी हवा में रहने से रोग पैदा हो जाते हैं, उसी प्रकार दुलार से बालकों में अवगुण पैदा हो जाते हैं। ताड़ना का रस कड़वा अवश्य होता है, पर सच मानो, उचित ताड़न से ही छोटे-छोटे बालकों में गुण पैदा होते हैं।

ऐसा मनुष्य कभी भी दुःख की आग में जलने से बच नहीं सकता, जो आचरण की उपेक्षा करता है, जो चरित्र को धूल की तरह उड़ाता फिरता है, जो बुरे स्थानों में निवास करता है और जो दुर्जनों की संगति में रहता है। यदि संसार में सुखपूर्वक जीवन बिताना चाहते हो तो इन बातों को ध्यान में रखकर चलो।

यदि मुझसे कोई यह प्रश्न करे कि दुर्जनों और सांपों में कौन अधिक दुःखदायी होता है, तो मैं बिना किसी संकोच के उत्तर दूंगा कि दुर्जन, क्योंकि सांप तो काल आने पर ही डसते हैं, पर दुर्जन मनुष्य तो पग-पग पर महाविपत्ति का कारण बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रलयकाल उपस्थिति होने पर, समुद्र भी अपनी मर्यादा का परित्याग कर देता है, किन्तु जो साधु पुरुष हैं, जो सज्जन हैं, और जो सदाशय हैं, वे महाविपत्ति के समय भी अपनी मर्यादा को नहीं छोड़ते। उनकी बुद्धि हरएक काल में हरएक स्थिति में सम रहती है, भेद रहित रहती है।

जिस प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करने वालों के मन में पाप, जिस प्रकार मौन रहने वालों के मन में कलह और जिस प्रकार रात में जागने वालों के मन में भय नहीं होता, उसी प्रकार उद्योगी और परिश्रमी मनुष्यों के जीवन में गरीबी का दुःख नहीं होता। अतः यदि गरीबी के दैत्य से मुक्ति पाना चाहते हो, तो उद्योगी बनो, पुरुषार्थी बनो।

शोक उत्पन्न करने वाले, अधिक रोगी और दुर्बल पुत्रों को उत्पन्न करने से दुःख को छोड़कर और कुछ प्राप्त नहीं होता। यदि जीवन में वास्तविक सुख प्राप्त करना चाहते हो, तो केवल एक ही ऐसा पुत्र प्राप्त करो जो निरोग हो, बलवान हो और गुणों से युक्त हो। सच मानो तुम्हें इस प्रकार से एक पुत्र से जो सुख प्राप्त होगा, उसकी तुलना स्वर्ग के सुखों से भी न हो सकेगा।

जिस मनुष्य को अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—इन चारों में एक भी प्राप्त नहीं होता, सच मानो, वह केवल मरने के लिए ही जीवन धारण करता है।

तुम क्यों धन के लिए मारे-मारे घूम रहे हो? तुम धन इसीलिए चाहते हो न कि तुम्हें सुख मिले। यदि तुम मूर्खों का आदर मत करो, यदि तुम प्रतिदिन कुछ-न-कुछ बचाया करो और यदि तुम आपस में कलह न करो, तो मैं सच कहता हूं कि तुम्हें वही सुख प्राप्त होगा, जो धन से प्राप्त होता है, क्योंकि धन की देवी लक्ष्मी वहीं निवास करती है, जहां यह तीनों बातें होती हैं।

जब तक शरीर स्वस्थ्य है, और जब तक मृत्यु दूर है, इसी अवधि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में जितने भी अच्छे काम कर सको कर लो। शरीर जब रुग्ण हो जायेगा, अथवा उसका अन्त हो जायेगा तो उसे कुछ भी न होगा, कुछ भी तो नहीं होगा।

यदि तुम संचित करना चाहते हो, तो केवल विद्या को ही संचित करो। जिस प्रकार कामधेनु हरएक काल में हरएक स्थिति में मन वांछित फल प्रदान करती है, उसी प्रकार विद्या भी तुम्हें सदा मन वांछित फल प्रदान करेगी। चाहे तुम घर में रहो चाहे तुम वन में रहो चाहे तुम स्वदेश में रहो और चाहे तुम विदेश में रहो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

टालस्टाय

संसार में कई धर्म और अनेक सम्प्रदाय हैं। प्रत्येक धर्म और प्रत्येक सम्प्रदाय का मनुष्य अलग-अलग ढंग से ईश्वर का स्मरण करता है, पर ईश्वर को जानने और उसकी ईश्वरता का अनुभव करने का मार्ग एक ही है।

ईश्वर क्या है—क्या तुम जानते हो ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो विवेकवान मनुष्यों के हृदय को स्पर्श करता रहता है। आओ सोचें, ईश्वर क्या है ? ईश्वर वह है, जो तुम्हारे जीवन को उसी प्रकार चलाता है। जिस प्रकार कठपुतलियां नचाने वाला कठपुतलियों को चलाता अथवा नचाता है।

मनुष्य को प्रेम अवश्य करना चाहिए। पर किस से प्रेम करना चाहिये ? उससे जो दोषरहित हो। ऐसा तो फिर ईश्वर को छोड़कर दूसरा कोई नहीं है। फिर क्यों न अपने हृदय का सारा प्रेम ईश्वर के चरणों पर उडेल दिया जाय।

यह एक प्रश्न है, मुझे क्या करना चाहिए ? मुझे अपने से और दूसरों से असत्य कदापि नहीं बोलना चाहिए। सदा सत्य ही बोलना चाहिए। यदि हाथों में खडग लेकर यमराज भी सामने खड़ा हो तो भी सत्य से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए।

हम इस बात को जानते हैं कि असत्य भाषण का परिणाम दुःख को छोडकर और कुछ नहीं होता। फिर भी हम दिन-रात असत्य बोलते रहते हैं। सच मानो, जिन दुःखों से तुम्हारा हृदय फटा जा रहा है उनके मूल में तुम्हारा असत्य भाषण ही है। यदि दुःखों और कलेशों से बचना चाहते हो तो असत्य बोलना छोड़ दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम्हारे मान का भंग होता है तो होने दो, यदि तुम्हें यश मिल रहा हो तो उसे फटे कपड़े की भांति छोड़ दो, पर भूल करके भी असत्य भाषण मत करो। सच मानो, तुम असत्य बोलकर जो वस्तु प्राप्त करना चाहते हो, वह बालू की दीवार की तरह ढह जायेगी।

तुम जिस सुख और शान्ति के इच्छुक हो, वह तुम्हें प्रवचंना से प्राप्त न होगी। वह प्राप्त होगी परिश्रम से—पुरुषार्थ से। अतः जीवन में वास्तविक सुख चाहते हो तो प्रवचंना छोड़कर पुरुषार्थ करो।

क्या तुम जानना चाहते हो, झूठ किसे कहते हैं ? तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारी अन्तरात्मा जो कुछ कह रही है, उसे छिपाना ही झूठ है। मैं कहता हूं, तुम्हारी अन्तरात्मा जो कुछ कह रही है, उसे साहस के साथ आचरित करो। उसके विरुद्ध आचरण करना प्रवचंना है। समझ लो, उससे तुम्हारा कदापि कल्याण न होगा।

हो सकता है, आत्मा की आवाज के विरुद्ध आचरण करने से तुम्हें कुछ दिनों तक हरियाली दिखाई पड़े, पर समझ लो तुम्हारी वह हरियाली बहुत शीघ्र क्षितिज में डूब जाएगी। क्योंकि झूठ और कपट का व्यापार बहुत दिनों तक अस्थाई नहीं रह सकता।

यदि तुम्हारी बुद्धि कहती है कि तुम्हारे जीवन का लेखा-जोखा ठीक नहीं है, तो साहस के साथ उसे प्रगट कर दो। तुम उसे जितना ही छिपाओगे, सच मानो तुम्हारे जीवन के पथ पर उतने ही कांटे बिछेंगे।

यदि असत्य के पथ पर चलते हुए, तुम्हें यह ज्ञात हो जाय कि तुम असत्य-पंथित हो, तो तुम शीघ्र पीछे की ओर लौट पड़ो। असत्य के मार्ग पर बहुत दूर जाने की अपेक्षा सत्य के मार्ग पर गिरकर आहत हो जाना कहीं अच्छा है।

तुम अपनी उलझनों को सुलझाने के लिए असत्य का आश्रय क्यों ले रहे हो ? सच मानो तुम्हारी उलझनें प्रवचंना से नहीं, सत्य से ही सुलझेंगी। अतः प्रवचंनाओं को छोड़कर सत्य का ही अंचल ग्रहण करो।

दूसरों से झूठ बोलने से तुम केवल उलझनों में आग्रस्त हो सकते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो। पर अपने से झूठ बोलने से तुम्हारा सम्पूर्ण जीवन ही नष्ट हो जाएगा। अतः भूल करके भी आत्म-प्रवचंन मत करो।

यदि यह बताने पर भी कि तुम गलत रास्ते पर चल रहे हो। तुम्हारे कदम गलत रास्ते पर आगे बढ़ते जा रहे हैं, तो सच मानो तुम्हारे जीवन का सुधार कभी नहीं हो सकता। मनुष्य की तो बात ही क्या स्वयं परमात्मा भी तुम्हें सुपथ पर नहीं चला सकता।

यदि कोई मनुष्य सत्य से भयभीत होने पर भी असत्य को ही अंगीकार करता जाता है, तो उसे आजीवन यह बात समझ में नहीं आएगी कि उसे क्या करना चाहिए।

तुम ऊंचे और सुन्दर भवन में रहते हो और तुम्हारे पास रुपया भी अधिक है। क्या तुम इसी से यह समझते हो कि तुम सत्यपंथी हो। सच मानो धन और सुन्दर भवन सत्यपंथी की पहचान नहीं है। सत्यपथी की पहचान है, सबको अपने ही समान समझकर सबके साथ अपने ही समान व्यवहार करना। तुम अपने धन और अपनी अमीरी पर गर्व कर रहे हो? सच मानो तुम्हारे पास धन और अमीरी का जो पिंजड़ा है, उसमें न जाने कितने मनुष्यों के शरीरों के तंतुओं के तार लगे हुए हैं। अतः अपनी अमीरी पर गर्व न करके उनसे प्यार करो जो तुम्हारे पैरों के पास बैठे हुए हैं।

तुम परमात्मा को स्वर्ग की ऊंचाई में खोज रहे हो? अरे मूर्ख, जो लोग तुम्हारे पैरों के पास बैठकर तुमसे प्रार्थना कर रहे हैं। क्या तुमने कभी उनमें भी परमात्मा को खोजा है? सच मानो, परमात्मा स्वर्ग की ऊंचाई में नहीं तुम्हारे पैरों के पास बैठे हुए मनुष्यों में ही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संत शेख सादी

सच्चे फकीर या संत का आदर्श कुछ और ही होता है। वे खुदा या ईश्वर को छोड़कर और किसी को नहीं जानते। वे सबको तो बिना किसी भेद के अपना प्यार देते हैं, किन्तु स्वयं खुदा या ईश्वर को छोड़कर और किसी के प्यार की आकांक्षा नहीं करते। उनकी तृप्ति ईश्वर के प्यार को छोड़कर और किसी के प्यार से नहीं होती।

मनुष्य को चाहिए, वह अपनी अच्छी स्थिति में उन लोगों की ओर अपना हाथ बढ़ाता रहे, जो दीन-दुखी हैं, जिन्हें दूसरों की सहायताओं की आवश्यकता रहती है। जो मनुष्य दीन-दुखियों की सहायता करते रहते हैं, उन पर पड़ने वाली विपत्तियां अपने आप टल जाती हैं।

जो मनुष्य बुद्धिमान होता है, वह दूसरों के खेल-कूद से भी शिक्षायें ग्रहण कर लेता है, किन्तु जो मनुष्य मूर्ख होता है, वह तत्व ज्ञान के सौ अध्याओं से भी कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करता।

जो मनुष्य भोजन के स्वाद की ओर ध्यान नहीं देता और अल्प भोजन से ही संतुष्ट हो जाता है, उसे ईश्वरी ज्ञान का प्रकाश दृष्टिगोचर होने लगता है। इसके विपरीत मनुष्य भोजन के स्वाद की चिन्ता में ही मग्न रहता है और कंठ तक भोजन करने के पश्चात् भी तृप्त नहीं होता, वह महा अज्ञानी होता है। यदि उसे स्वयं ईश्वर भी गुरु रूप में कुछ ज्ञान दे तो भी उसके मन के भीतर ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता।

सांसरिक मनुष्य की आंखें केवल दो वस्तुओं से भर सकती हैं। उनमें एक तो है संतोष और दूसरी है कब्र की मिट्टी।

यदि तुम्हारे पास अतुल धन राशि है, अतुल स्वर्ण राशि है, तो तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अकेले उससे लाभ न उठाओ । तुम्हारी मानवता तो इस बात में है कि तुम उससे दूसरों को भी लाभ उठाने का शुभ अवसर प्रदान करो ।

एक ओर जीवन को बिताने की आशायें और दूसरी ओर जीवन समाप्त होने की आशंकायें । जीवन को बिताने की आशाओं में जीवन को खतरे या विपत्ति में डालना बुद्धिमानी की बात नहीं कही जा सकती ।

मनुष्य को न तो काम-काज से घबड़ाना चाहिए और न विपत्तियों से दुःखी होना चाहिए, क्योंकि सुख का अमृत उस अंधेरे में ही रहता है, जो भय और दुःखों से भरा रहता है ।

धैर्य सभी लोग नहीं धारण कर सकते, क्योंकि वह बड़ा कड़ुवा होता है । यदि मनुष्य साहस करके धैर्य को धारण करे, तो बिना किसी संशय के यह बात कही जा सकती है कि धैर्य के फल का रस बहुत सुस्वाद होता है ।

ईश्वरीय दयादृष्टि पर ध्यान दो । ईश्वर सबके गुणों को भी देखता है, और दोषों को भी देखता है, किन्तु वह अप्रसन्न होकर किसी की जीविका या रोटी नहीं छीनता ।

यदि तुम्हें अपने पैरों के नीचे दबी हुई चींटी के दुःख का पता है, तो तुम्हें जानना चाहिए कि यदि तुम हाथी के पैरों के नीचे दबो तो तुम्हें भी उसी प्रकार का दुःख होगा । दूसरों के दुःख को समझे बिना अपने दुःख का वास्तविक बोध कभी नहीं होता ।

यदि तुम झगड़े और कलह का सामान देखो तो मौन हो जाओ, मौन ही वह प्रहरी है, जो झगड़े और कलह के फाटक को बन्द कर देता है ।

यदि तुम्हारे साथ कोई बदमिजाजी करे, तो तुम उसके साथ दया और कृपा का बर्ताव करो । मैं सच कहता हूं, तलवार की तीव्र धार रेशम के पतले और कोमल धागे को नहीं काट सकेगी ।

कोमल वाणी और नम्रता तथा प्रेम और इनका का ऐसा प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होता है कि मनुष्य उसके द्वारा उन्मत्त हाथी को भी एक बाल से बांध सकता है, बांध कर चाहे जहां ले जा सकता है।

यदि मनुष्य प्रलोभन को ठुकरा दे तो वह सम्राट से भी अधिक ऊंचा आसन प्राप्त कर सकता है, क्योंकि संतोष ही है जो मनुष्य के मस्तक को ऊंचा बनाता है, उसे गौरव प्रदान करता है।

हमें इस बात की अभिलाषा नहीं करनी चाहिए कि हमारा शरीर शीघ्र से शीघ्र मिट्टी में मिल जाये। इसके विपरीत हमें इस बात की अभिलाषा करनी चाहिए कि हम दूसरे की भलाई में मिट्टी में मिल जायें।

यदि मनुष्य सुख-दुख की चिन्ताओं से ऊपर उठ जाय तो इसमें रंच-मात्र भी संशय नहीं कि आकाश की ऊंचाई भी उसके पैरों के नीचे आ जाएगी।

आदतों के कारण बुरा काम करने वाला मनुष्य किसी-न-किसी शत्रु के चंगुल में फंसता ही रहता है। वह कहीं भी जाकर रहे, तो भी उसकी आदतों के कारण उसके शत्रु पैदा होते ही जायेंगे। और तो और यदि वह आकाश पर जाकर रहे, तो उसकी आदतों के कारण शत्रुओं से उसका पिंड न छूट सकेगा।

जो मनुष्य किसी बदमिजाज या बुरे मनुष्य को उपदेश करता है, उसे समझना चाहिए कि वह जो कुछ उपदेश कर रहा है उससे उसकी तृप्ति हो चुकी है या नहीं ? जो लोग बिना तृप्ति के उपदेश करते हैं, उनका उपदेश टीन की आवाज के ही समान होता है। उसका प्रभाव रंच मात्र भी किसी के ऊपर नहीं पड़ता।

यदि लालची मनुष्य को संपूर्ण संसार का धन दे दिया जाय तो भी वह भूखा ही रहेगा। इसके विपरीत संतोषी मनुष्य का पेट रोटी के एक टुकड़े से ही भर जाता है।

भोग-विलास एक आग है, नरक की आग। मनुष्य को उससे बचते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहना चाहिए। जब वह प्रज्वलित हो तो उस पर सब का शीतल जल डाल दें। उसे बुझाने के लिए सब्र को छोड़कर और दूसरी चीज नहीं हो सकती।

जो मनुष्य अच्छे समय में नेकी नहीं करता वह बुरा समय आने पर अधिक-से-अधिक विपत्तियों और चिन्ताओं में आग्रस्त होता है। ईश्वर मनुष्य को अच्छे समय में इसीलिए लाता है कि वह अधिक-से-अधिक भलाई के काम करे और अच्छे काम करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुरुनानक

जो मनुष्य सुख-दुख और मान-अपमान को एक समान समझता है तथा हर्ष और शोक को अपने हृदय में स्थान नही देता, वही जगत के तत्त्व को पहचानता है।

कोई मनुष्य अपना शत्रु नहीं है। अपना शत्रु है, अपने ही हृदय का काम और क्रोध। अतः किसी मनुष्य से अपना सम्बन्ध न तोड़कर, अपने हृदय में स्थित काम और क्रोध से अपना सम्बन्ध तोड़ो।

हे जिज्ञासुओ, निन्दा और स्तुति के बंधनों को काटकर स्वतंत्र बनो और उस आत्मपद की खोज में अपना मन लगाओ, जिसकी खोज के लिए तुम सबने मानव-जन्म धारण किया है।

मनुष्य काम और क्रोध के वशीभूत होकर परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को भुला देता है। उसकी यह अज्ञानता ही उसके महा दुःखों का कारण बनती है।

मनुष्य शरीर को ही सत्य मानकर अपने मन को उसके अभिसार में रमाये रहता है। वह इस बात को जानते हुए भी नहीं समझता कि जिस प्रकार सुन्दर स्वप्नों का संसार बिखर जाता है, उसी प्रकार एक दिन यह शरीर भी बिखर जाएगा।

यह जगत जो तुम्हारे सामने फैला हुआ है, स्वप्नवत है। इसमें जो सत्य है, उसे छोड़कर और कुछ न रहेगा और सत्य है केवल परमात्मा। अतः परमात्मा को ही प्राप्त करने की चेष्टा करो।

मृगतृष्णा की भांति ही यह संसार भी है। जिस प्रकार तृषित मृग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चमकते हुए रेत के कणों को पानी समझकर उसकी ओर दौड़ता है, उसी प्रकार मन भी संसारिक पदार्थों की ओर दौड़ता है, पर मृग की भांति ही मन को भी पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। अतः कल्याण चाहते हो तो मन को भागने न दो। उस पर अपना अधिकार स्थापित करो।

हे सज्जनो, यह मन पकड़ में नहीं आता। उपभोगी की मृगतृष्णा इसके भीतर बस गई है। अतः यह स्थिर नहीं रहता। भागता ही रहता है, भागता ही रहता है।

जिस क्रोध की आंधी ने तुम्हारे ज्ञानतर को ढहा दिया है, वह कहीं अन्यत्र नहीं था। वह तो तुम्हारे हृदय के ही भीतर था। अतः तुम्हारा जो सर्वनाश हुआ है, वह तुम्हारे ही कारण हुआ है।

बड़े-बड़े योगी प्रयत्न करके थक जाते हैं, पर मन वश में नहीं होता। मन तो वश में उसी समय होता है, जब परमात्मा की अनुकम्पा प्राप्त होती है। अतः परमात्मा की अनुकम्पा को ही प्राप्त करने का प्रयत्न करो।

हे मनुष्यो, तुम्हारा यह मानव-जीवन बड़ा अमूल्य है। इसे व्यर्थ के कामों में नष्ट मत करो। इसका एक-एक क्षण अच्छे कामों में लगाओ, केवल अच्छे कामों में ही लगाओ।

अभिमान, लोभ और वंचकता को छोड़ दो। जब तक इनका परित्याग नहीं करोगे, मन सत्य में न लगेगा, परमात्मा की ओर न जायेगा।

जानते हो, सबसे बड़ी अज्ञानता क्या है? मानव शरीर पाकर अहंकार और मद-मत्सर में लिप्त होना, क्योंकि मानव शरीर इसके लिए नहीं मिला है।

हे सज्जनो, वेदों, शास्त्रों और पुराणों का पाठ करने से वास्तविक सुख नहीं प्राप्त होगा। वास्तविक सुख प्राप्त होगा, केवल हरि की शरण में जाने से। अतः यदि सुख चाहते हो तो सभी प्रपंचों को छोड़ कर हरि की शरण में जाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संसार में सर्वश्रेष्ठ वही मनुष्य ज्ञानी है, जो न दुःख से पीड़ित होता है और न हर्ष से हर्षित होता है। ऐसा सम चित्त वाला मनुष्य प्रत्येक मनुष्य के लिए वन्दनीय होता है।

हे मन, तू जिस शरीर को अपना मान रहा है क्या वह तेरा है? यदि वह तेरा है, तो शरीर का रूप जो कल था वह तू आज मुझे दिखा दे।

तुम जानते हो, मनुष्य को भय से रहित मोक्ष पद क्यों नहीं प्राप्त होता? उसकी अपनी ही अज्ञानता से स्त्री, पुत्र, पुत्री और माता-पिता आदि जो साथ छोड़ देंगे, वह उन्हीं को प्रसन्न करने में अपने समय को बिताता रहता है। और जो परमात्मा निरन्तर उसके साथ रहेगा, वह उसकी ओर देखना तक पसन्द नहीं करता।

हे मन, सोच-विचार कर काम कर कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में तुमसे कोई बुरा काम हो जाये और परमात्मा रुष्ट हो जाये। यदि परमात्मा रुष्ट हो जाएगा तो फिर सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाएगा।

हे मन, यदि पास में कौड़ी न होने से भूखा रहना पड़ता है, तो चिन्ता मत करो। चिन्ता करो इस बात की कि तुमसे कोई अनैतिक काम न हो जाए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री शंकराचार्य

ब्रह्म ही सत्य है। जगत जो कुछ है, सब नाशवान है। ब्रह्म ही है, जो चिरंतन है, सास्वत है।

सूर्य घट को प्रकाशित करता है। जिस प्रकार घट का विनाश होने पर भी सूर्य बना रहता है, उसी प्रकार शरीर का विनाश होने पर आत्मा बनी रहती है। घट की भांति शरीर का ही विनाश होता है, आत्मा का नहीं।

जो मनुष्य विवेकवान होते हैं, सत्‌चित्त होते हैं। ब्रह्म की जिज्ञासा उन्हीं के भीतर जागृत होती है।

यदि मन में वैराग्य न हो तो समाधि लगाना व्यर्थ है, क्योंकि समाधि के सुगन्धित और सुन्दर पुष्प वैराग्य के तरु में ही लगते हैं।

भक्ति ही मुक्ति का कारण है और भक्ति है अपने भीतर घुसकर अपने दोषों को देखना, दोषों और बुराइयों को देखकर उन्हें बाहर निकालने का प्रयत्न करना।

यदि तुम जगत में आनन्द प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें उन सभी पदार्थों से अपने को पृथक करना होगा जो नाशवान हैं। जो लोग नाशवान पदार्थों में ही आशक्ति रखते हैं, संसार में उन्हें दुःख को छोड़कर और कुछ नहीं मिलता।

तुम जानना चाहते हो भयानक नरक क्या है ? मैं कहता हूं, विषयों और शरीर की आशक्ति को छोड़कर भयानक नरक और कुछ नहीं है।

मुक्ति क्या है—तुम जानना चाहते हो ? तो सुनो, विषयों से विराग ही मुक्ति है, वास्तविक मुक्ति है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संसार में सर्वश्रेष्ठ वही मनुष्य ज्ञानी है, जो न दुःख से पीड़ित होता है और न हर्ष से हर्षित होता है। ऐसा सम चित्त वाला मनुष्य प्रत्येक मनुष्य के लिए वन्दनीय होता है।

हे मन, तू जिस शरीर को अपना मान रहा है क्या वह तेरा है? यदि वह तेरा है, तो शरीर का रूप जो कल था वह तू आज मुझे दिखा दे।

तुम जानते हो, मनुष्य को भय से रहित मोक्ष पद क्यों नहीं प्राप्त होता? उसकी अपनी ही अज्ञानता से स्त्री, पुत्र, पुत्री और माता-पिता आदि जो साथ छोड़ देंगे, वह उन्हीं को प्रसन्न करने में अपने समय को बिताता रहता है। और जो परमात्मा निरन्तर उसके साथ रहेगा, वह उसकी ओर देखना तक पसन्द नहीं करता।

हे मन, सोच-विचार कर काम कर कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में तुमसे कोई बुरा काम हो जाये और परमात्मा रुष्ट हो जाये। यदि परमात्मा रुष्ट हो जाएगा तो फिर सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाएगा।

हे मन, यदि पास में कौड़ी न होने से भूखा रहना पड़ता है, तो चिन्ता मत करो। चिन्ता करो इस बात की कि तुमसे कोई अनैतिक काम न हो जाए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री शंकराचार्य

ब्रह्म ही सत्य है। जगत जो कुछ है, सब नाशवान है। ब्रह्म ही है, जो चिरंतन है, सास्वत है।

सूर्य घट को प्रकाशित करता है। जिस प्रकार घट का विनाश होने पर भी सूर्य बना रहता है, उसी प्रकार शरीर का विनाश होने पर आत्मा बनी रहती है। घट की भांति शरीर का ही विनाश होता है, आत्मा का नहीं।

जो मनुष्य विवेकवान होते हैं, सत्‌चित्त होते हैं। ब्रह्म की जिज्ञासा उन्हीं के भीतर जागृत होती है।

यदि मन में वैराग्य न हो तो समाधि लगाना व्यर्थ है, क्योंकि समाधि के सुगन्धित और सुन्दर पुष्प वैराग्य के तरु में ही लगते हैं।

भक्ति ही मुक्ति का कारण है और भक्ति है अपने भीतर घुसकर अपने दोषों को देखना, दोषों और बुराइयों को देखकर उन्हें बाहर निकालने का प्रयत्न करना।

यदि तुम जगत में आनन्द प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें उन सभी पदार्थों से अपने को पृथक करना होगा जो नाशवान हैं। जो लोग नाशवान पदार्थों में ही आशक्ति रखते हैं, संसार में उन्हें दुःख को छोड़कर और कुछ नहीं मिलता।

तुम जानना चाहते हो भयानक नरक क्या है ? मैं कहता हूं, विषयों और शरीर की आशक्ति को छोड़कर भयानक नरक और कुछ नहीं है।

मुक्ति क्या है—तुम जानना चाहते हो ? तो सुनो, विषयों से विराग ही मुक्ति है, वास्तविक मुक्ति है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थोमस ए केम्पिस

यदि बोलना आवश्यक हो, तो ऐसी वस्तुओं के सम्बन्ध में बोलो, जिनसे आत्मा का विकास होता हो और जिनसे मन को दिव्य प्रेरणायें प्राप्त होती हों।

शब्दों का अपव्यय और आत्म निरीक्षण अभाव मुख का एक ऐसा रोग है, जिस पर संसार की किसी औषध का प्रभाव नहीं पड़ता। उसकी यदि दवा है तो वह है संयम और अनुशासन।

यदि तुम आत्मिक उन्नति करना चाहते हो तो उसके लिए एक ही उपाय है और वह यह कि आध्यात्मिक सतसंग करो। आध्यात्मिक चर्चाओं में अपना समय बिताओ।

मन की प्यास तो लौकिक वस्तुओं से शान्त हो जाती है, किन्तु आत्मा की तृष्णा केवल सदाचार से ही शान्त होती है। आत्मा को जितना ही अधिक सदाचार के अमृत जल का पान कराया जाएगा, उतना ही अधिक उसकी सतृप्ति भी होगी।

तुम भले ही समझो कि तुम्हारी उन्नति का बाधक तुम्हारा कोई पड़ोसी या मित्र या सम्बन्धी है। मैं साधिकार और ससक्त शब्दों में कहता हूं कि इनमें से कोई बाधक नहीं है, बाधक हैं तुम्हारे मन के वे असंयमित और स्वछन्द विकार, जो तुम्हें सूखे पत्ते की भांति इधर-उधर उड़ाया करते हैं।

अपने को अधिक बुद्धिमान न समझो। इसके विपरीत सदा अपनी अज्ञानता और अलपज्ञता को स्वीकार करते रहो। सच है संसार में निर्बल से निर्बल प्राणी हैं, पर तुम्हारी भलाई तो इसी बात में है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम किसी को अधिक निर्बल मत समझो।

तुम अपने शुभ कर्मों पर गर्व मत करो। कौन जाने, तुम जिन्हें शुभ कर्म समझ रहे हो, ईश्वर की दृष्टि में वे अशुभ हों, क्योंकि तुम्हारी और ईश्वर की समझ में विपरीतता है।

मानता हूं, तुम बड़े चतुर और सुयोग्य हो, किन्तु तुम्हें अपनी योग्यता और चतुराई पर गर्व नहीं करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे पास जो चतुराई और योग्यता है, वह तुम्हारी अपनी वस्तु नहीं है, वह तो तुम्हें ईश्वर से प्राप्त हुई है।

मनुष्य के लिए यह अधिक आवश्यक है कि वह किसी एक के आदेशानुसार कार्य करे, अनुशासनबद्ध होकर जीवन व्यतीत करे। स्वछन्दता और अनुशासनहीनता से जीवन में दुःख और असन्तोष को छोड़कर और किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं होती।

यदि तुम जीवन में कुछ सीखना चाहते हो तो दूसरों को उपदेश न देकर, स्वयं दूसरों का उपदेश सुनो। जो मनुष्य दूसरों का उपदेश सुनता है हो नहीं सकता कि उसका ध्यान अपनी त्रुटियों की ओर आकृष्ट न हों। देर हो सकती है, पर बह अपनी त्रुटियों का मंथन अवश्य करेगा।

प्रत्येक मनुष्य के सामने अपना हृदय मत खोलो। केवल उसी मनुष्य के समक्ष अपना हृदय खोलकर अपनी समस्या में रक्खो, जो विवेकी हो, ईश्वरानुरागी हो। विवेकी और ईश्वरानुरागी मनुष्य से यदि लाभ न होगा, तो यह बात तो निश्चित है कि उससे हानि कदापि न होगी।

जो मनुष्य किसी के आधीन रहना नहीं जानता और जिसमें आज्ञा पालन का विशिष्ट गुण नहीं होता, वह शासन करने में सर्वथा अयोग्य होता है।

यदि तुम निरंतर आत्मपरीक्षण करने में अपने को असमर्थ समझते हो, तो प्रतिदिन एक बार संध्या या प्रातः में अपने भीतर प्रवेश करने चेष्टा अवश्य करो। तुम देखोगे कुछ दिनों में ही तुम्हारे भीतर जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है, वह तुम्हें दिखाई पड़ने लगेगा।

अपनी आंखों को अपनी ओर फेरो। दूसरों के दोषों का निर्णायक मत बनो। कौन जाने जिन दोषों को तुम दूसरों में ढूंढ़ रहे हो, वे तुम्हारे ही भीतर हों।

यदि हम जीवन के युद्ध में साहस और शक्ति के साथ दृढ़ता पूर्वक खड़े हो जायें, तो हमें यह बोध होने में देर न लगेगी कि ईश्वर हमारी सहायता के लिए हमारे समक्ष खड़े हैं।

दूसरों के दोषों और कमजोरियों को सहन करने का दृढ़तापूर्वक अभ्यास करो क्योंकि तुम्हारे भीतर बहुत से ऐसे दोष और कमजोरियां हैं, जिन्हें सदा दूसरों को सहनी पड़ती हैं।

जब तुम स्वयं अपने को ही अपनी इच्छा के अनुसार नहीं बना सकते, तो तुम दूसरों से यह कैसे आशा रखते हो कि वे तुम्हारी इच्छानुसार बनेंगे, कार्य करेंगे।

हम दूसरों के दोषों को दूर करके उन्हें पूर्ण बनाने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु हम यह नहीं देखते कि हमारे भीतर अनेक ऐसे दोष हैं, जिनके कारण हम अपूर्ण है। हमें अपने को पूर्ण बना करके ही दूसरों को पूर्ण बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

जिसे ईश्वरता का बोध प्राप्त हो जाता है, उसे संसार का संपूर्ण धन प्राप्त हो जाता है। इसके विपरीत जिसे ईश्वरता का बोध नहीं होता। समझना चाहिए, पास में अगणित भोगपदार्थ होने पर भी उसे कुछ नहीं मिलता।

संसार में वास्तविक वैभववान वही है, जो ईश्वर के साथ आलाप करता है और वास्तविक दरिद्र वह है, जो आलाप करने को कौन कहे, जिसे ईश्वरता का रंचमात्र बोध भी नहीं होता।

विज्ञता यह नहीं है कि तुम विज्ञान के पंडित बन जाओ, बल्कि यह है कि तुम इस बात को भली-भांति जान जाओ कि ईश्वर के साथ बातचीत किस प्रकार की जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कष्टों और पीड़ाओं से पराजित मत हो। जो भी कष्ट मिले, जो भी पिड़ायें सामने आये, उन्हें यह सोचकर ईश्वर की इच्छा की झोली में डाल दो कि ईश्वर ने उन्हें तुम्हें सहन करने के लिए प्रदान किए हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भाई लारेंस

ईश्वर के बारे में मानसिक वार्तालापों को छोड़कर अन्यान्य बातें सोचना अज्ञानता है। मन के भाव के अतिरिक्त और किसी भी प्रकार से ईश्वर से सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता।

विश्वास ही ईश्वर के निकट पहुँचाने वाला प्रबल साधन है। जिसके पास ईश्वर के प्रति विश्वास जितना अधिक होता है, उसे उतनी ही शीघ्रता से ईश्वरता का बोध होता है। विश्वास को छोड़कर चलने वाले मनुष्य को ईश्वर के रास्ते पर कंकड़ों और पत्थरों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता।

जो मनुष्य आध्यात्मिकता के पथ पर चलता है, उनका एक ही सम्बल है और वह है आत्मसमर्पण। जो मनुष्य आत्मसमर्पण करके ईश्वर के मार्ग पर चलता है, ईश्वर स्वयं उसका हाथ पकड़ कर उसे अपनी ओर खींच लेता है।

बुद्धि और आत्मशक्ति द्वारा होने वाली क्रियाओं में अन्तर होता है। बुद्धि द्वारा होने वाली क्रियाओं के द्वारा बहुत प्रयत्न करने पर भी ईश्वर के निकट नहीं पहुँचा जा सकता, किन्तु आत्मशक्ति द्वारा होने वाली क्रियायें सहज में ही ईश्वर के बहुत समीप पहुँचा देती है। दूरी और निकटता में जो अन्तर होता है, वही अन्तर बुद्धि और आत्मशक्ति द्वारा होने वाली क्रियाओं में भी होता है।

मनुष्य के दुःखों और पापों के परिमार्जन का कोई भी साधन नहीं है। होता केवल यह कि अपने हृदय योग के द्वारा अपने प्रेम को ईश्वर के चरणों पर स्थापित कर दिया जाय। ऐसा करने पर सारे दुःख और सारे पाप रेत की दीवार की तरह नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो मनुष्य ईश्वर के चरणों पर आत्मसमर्पण कर देता है, उसमें बड़े से बड़े कष्टों को झेलने की कटिबद्धता और दृढ़ता उत्पन्न हो जाती है। उसकी उस कटिबद्धता और दृढ़ता में ईश्वर की सहायता को छोड़कर और कुछ नहीं होता।

ईश्वर के प्रेम की प्राप्ति के लिये, न तो किसी विज्ञान की आवश्यकता है और न किसी कला की। बस अपने हृदय को ईश्वर के चरणों पर बिछा दो और संसार की किसी भी वस्तु के सम्बन्ध में न सोच कर, केवल उसी के सम्बन्ध में सोचा करो, केवल उसी का चिन्तन किया करो।

जो वस्तुएं एवं क्रियायें हमें भगवद्विमुख न करें, भगवद्-मार्ग में केवल कंटक रूप ही बनें, उनका सच्चे हृदय स त्याग ही भगवान की इच्छा की प्रक्रिया का सुन्दर स्वरूप है।

हमें यह अनुभव करना चाहिये कि ईश्वर सदा हमारे अधिक निकट ही रहता है। इस प्रकार के अनुभव से ही हम स्वतंत्रता और सरलता पूर्वक ईश्वर के साथ वार्तालाप कर सकते हैं।

हमारे मन में नाना प्रकार की शंकायें उत्पन्न होतीं ही रहती हैं। प्रयत्न करने पर भी हमें उन शंकाओं का समाधान नहीं मिलता, किन्तु जब हम उन शंकाओं से व्याकुल होकर ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, तो हमें एक सुन्दर प्रकाश अवश्य मिलता है। हम उस सुन्दर प्रकाश में शंकाओं से मुक्त हो जाते हैं और एक सुनिश्चत मार्ग पर चलने लगते हैं।

ईश्वर यह नहीं देखते कि हम उनके प्रीति में छोटा कार्य कर रहे हैं या बड़ा कार्य। इसके विपरीत वह केवल यह देखते हैं कि हम जो कार्य कर रहे, उसके मूल में हमारी भावनायें कैसी हैं।

श्रद्धा के सामने कुछ भी असंभव नहीं। विश्वास कठिन को भी सुगम बना देता है। प्रेम तो सुगम को भी अधिक सुगमता के सांचे में ढाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देता है। जिस मनुष्य के पास श्रद्धा विश्वास और प्रेम—तीनों गुण होते हैं, उसके मार्ग के कांटे अवश्य मेव मृदुल और सुंगन्धित पुष्प बन जाते हैं।

ईश्वर की शरण में जाने का सब से सरल मार्ग यही है, हम लोगों की प्रसन्नता और अप्रसन्नता का विचार न करके अपने समस्त कार्य ईश्वर प्रति करते रहें।

कदाचित हम यह समझ पाते कि हमें भगवान की कृपा और सहायता की प्रतिक्षण कितनी आवश्यकता रहती है। यदि ऐसा हो सकता तो फिर हन भगवान को कभी नहीं भूल पाते।

प्रायः लोग प्रश्न किया करते हैं कि हम क्या करें ईश्वर में हमारी अनन्य श्रद्धा हो? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है, और वह यह कि सम्पूर्ण चिन्ताओं से अपने को मुक्त कर लिया जाय। यदि तुम ईश्वर के निकट पहुँचना चाहते हो तो बाह्य विधिविधानों को चाहे वे कितने ही सुन्दर और आकर्षक क्यों न हों, छोड़ दो। जब तक तुम बाह्य विधिविधानों का आश्रय लेते रहोगे तुम्हारे और ईश्वर के मध्य में एक दीवार खड़ी रहेगी।

यदि तुम समझते हो कि तुम से कोई बुरा कार्य हुआ है, और उसके कारण तुम भीतर ही भीतर दुःख में जल रहे हो, तो एक काम करो। अपने नेत्रों में आँसू भर कर अत्यधिक दीन भाव से ईश्वर को पुकार कर खड़े हो जाओ और उसके समक्ष अपनी भूल को स्वीकार कर लो। मैं सच कहता हूं, तुम्हारे हृदय की जलन मिट जायेगी; जलन के स्थान पर हृदय में अमृत की शीतल धारा छल-छलाकर बह उठेगी।

तुम दुःखों और क्लेशों से छूट जाओ—इसके लिये मैं ईश्वर से प्रार्थना नहीं करता। मैं ईश्वर से प्रार्थना तो इस बात के लिये करता हूं तुम जिन दुःखों और क्लेशों को सह रहे हो; वह तुम्हें उन्हें सहन करने की शक्ति और साहस प्रदान करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम्हारा मन कभी ईश्वर के विश्वास के पथ से विचलित हो जाय, तो तुम दुःखित और क्षुभित मत हो। दुःख और क्षोभ तुम्हारे विश्वास को लौटा न सकेंगे। उस समय तुम्हें केवल एक ही बात करनी चाहिये और वह यह कि आर्त कण्ठ से ईश्वर को पुकारो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री जेम्स एलन

जहां पर आशंका, दुःख, चिन्ता, भय, कष्ट, क्षोभ और निरुत्साह होता है वहीं पर विश्वास का अभाव भी होता है।

कोई कठिनाई ऐसी नहीं, जो शान्ति और शक्ति के साथ चित्त एकाग्र करने से जीती न जा सके। इसी प्रकार कोई ऐसा न्यायानुमोदित उद्देश्य नहीं, जो अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के विवेकपूर्ण प्रयोग और संचालन से प्राप्त न किया जा सके।

जिन उच्च अधिकारों और स्थानों का महान् पुरुष उपभोग कर चुके हैं, वे वहां सहसा छलांग मार कर नहीं पहुंच गये थे। सच तो यह है, जिस समय उनके साथी निश्चिन्तता की नींद में मग्न रहते थे, उस समय वे वहां पहुंचने के लिए कठिन साधन और परिश्रम किया करते थे।

इच्छायें ही नरक हैं। उन्हीं में सारी पीड़ायें केन्द्रित रहती हैं। इच्छाओं का त्याग ही स्वर्ग है, जहां सभी प्रकार के सुख यात्रियों की प्रतीक्षा किया करते हैं।

तुम जिस समय स्वार्थों को छोड़कर त्याग के लिए उद्यत हो जाओगे उसी समय से तुम्हें स्थायी दुःख और शान्ति प्राप्त होने लगेगी।

जो हृदय दूसरों के प्रेम में अपने को भुला देता है, उसे केवल सर्वोत्तम परमानन्द का ही सुख प्राप्त नहीं होता, वरन् वह अमरत्व में भी प्रवेश कर जाता है, क्योंकि उसे ईश्वरता का बोध होने लगता है।

स्त्री-पुरुष सुख की खोज में इधर-उधर, चारों ओर भटकते फिरते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं। उन्हें उस समय तक सुख प्रदान नहीं हो सकता जब तक वे यह समझ नहीं लेंगे कि जिस सुख के लिए वे भटक रहे हैं, वह उनके चारों ओर फैला हुआ है।

त्याग के बिना न तो उन्नति हो सकती है और किसी उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। अतः मनुष्य को सांसारिक सफलताओं की प्राप्ति के लिए अपने पाशविक विचारों का हनन करना चाहिए।

जो मनुष्य अपने मस्तिष्क को अपनी आयोजना पर स्थिर रखेगा और स्वावलम्बी होते हुए अपने व्रत पर दृढ़ रहेगा, वह अपने विचारों को अवश्य ऊपर उठायेगा और इसमें संशय नहीं कि उसके हृदय में धर्म की ज्योति जागृत होगी।

जितने प्रकार की सफलतायें हैं, चाहे वे व्यापारिक हों, मानसिक हों, और आध्यात्मिक हों—सभी विचारों को संयमित; अनुशासित और ठीक प्रकार से संचालित करने से ही प्राप्त हो सकती हैं।

आत्म संयम धन से भी अत्यधिक लाभ प्रद है। धन से मनुष्य को जो लाभ होता है, वह अल्पकालिक होता है, पर संयम और शान्ति से जो लाभ होता है वह चिरस्थायी होता है।

सत्य मनुष्य के लिए वैसा ही आवश्यक होता है, जैसा स्त्री के लिए शील। जिस मनुष्य में सत्य नहीं है, उसे मनुष्य कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। मनुष्य चाहे जहां भी रहे, जिस किसी स्थिति में रहे, उसे सत्य का परित्याग कदापि नहीं करना चाहिए।

मनुष्य जब तक मनसा, वाचा, कर्म से असत्य का परित्याग नहीं कर देता और जब तक असत्य भाषण के पाप का बोध उसे नहीं होता, तब तक वह वास्तविक रूप में ईमानदार नहीं बन सकता।

जिस प्रकार पागल मनुष्य आकाश से सूर्य को पकड़कर नहीं ला सकता, उसी प्रकार कोई बेईमान मनुष्य ईमानदार मनुष्य को बेईमान नहीं बना सकता। यदि कोई बेईमान मनुष्य किसी ईमानदार मनुष्य को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

धोखा देना या हानि पहुंचाने का प्रयत्न करेगा तो वह हानि लौटकर उसी की होगी और ईमानदार मनुष्य उससे बिल्कुल साफ-साफ बच जाएगा।

यदि मनुष्य महान बनना चाहता है, तो उसके लिए यह आवश्यक है कि अपनी सद्दुद्धि और नैतिकता से जीवन व्यतीत करे। सद्बुद्धि और नैतिकता ही है, जो उसे महानता के पद पर प्रतिष्ठित करती है।

जो मनुष्य पक्षपात शून्य होता है, वह बुद्धिमान होता है। उसकी बुद्धि उसकी सहायिका होती है। उसके कार्य उसके रक्षक होते हैं। वह अपनी बुद्धि के द्वारा जीवन पथ पर चलकर समाज में सुख और शान्ति पाता है।

पक्षपात होनता का स्तम्भ बड़ा सुदृढ़ होता है। वह उन्नति के मंदिर के भार को संभाले हुए निरंतर उसकी शोभा को बढ़ाता रहता है।

सहानुभूति ऐसी सार्वभौमिक भाषा है, जिसे जानवर भी समझ लेते हैं। और समझकर उसके अनुसार कार्य करने लगते हैं। जो मनुष्य होकर सहानुभूति की भाषा को नहीं समझता वह पशु से भी अधिक निम्नश्रेणी का है।

स्वार्थी मनुष्य दूसरों को हानि पहुंचाकर लाभ उठाते हैं, किन्तु जो सहानुभूतिमय है, वह स्वयं हानि उठाकर दूसरों को लाभ पहुंचाता है।

स्वावलम्बन और स्वाभिमान में अन्तर होता है। स्वावलम्बन बहुत ऊंचा गुण है और स्वाभिमान बहुत ही निम्न कोटि का अवगुण है। स्वावलम्बन में कोई भी तुच्छ चीज नहीं होती। स्वाभिमान में कोई भी बड़ी चीज नहीं होती। ऐसा कोई पैमाना नहीं, जिससे स्वावलम्बन की ऊंचाई और स्वाभिमान की निचाई नापी जा सके।

जीवन के प्रत्येक भाग की उन्नति स्वावलम्बन की ही ओर देखती है। स्वावलम्बन जीवन को ऊपर उठाता ही नहीं है, उसे आलोकित भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर देता है। ऐसा आलोकित कर देता है कि उसके प्रकाश में सारे अवगुण सारे दुःख छिप जाते हैं।

भोजन कम करने से शरीर का बल नष्ट नहीं होता, शरीर का नष्ट तो उस क्रोध से होता है जो मन के भीतर छिपा रहता है। क्रोध तुम्हारे हाथी के समान बल को नष्ट ही नहीं कर देता, उसे भस्म भी कर डालता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कफ्यूसियस

जो मनुष्य ईश्वर के नियमों के विरुद्ध चलता है या ईश्वरता के विपरीत कार्य करता है, उसके लिए संसार में कोई भी ऐसा नहीं है, जिसकी वह प्रार्थना कर सके, जिसके समक्ष विनम्रता प्रदर्शित कर सके।

यदि तुम सच्चे मन से जनता की भलाई करना चाहते हो, उसके अवगुणो को दूर करना चाहते हो, तो फिर बिना किसी संकोच के अपने कार्य में लग जाओ। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जो अपनी भलाई न चाहता हो, जो अपनी हानिकर बुराइयों को न छोड़ना चाहता हो। यदि तुम्हें अपने काम में सफलता प्राप्त न हो, तो तुम्हें जनता को दोष न देकर यह देखना चाहिए कि कहीं तुम्हारे भीतर कोई त्रुटि तो नहीं है।

जो उत्थान के योग्य है, उसका उत्थान करो, उसे ऊपर उठाओ, और जो उत्थान के योग्य नहीं है, उसे उपदेशित करो, उसे प्रेरणा दो। निश्चय वह तुम्हारी प्रेरणा से उत्थान और कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होगा।

शासन वही अच्छा और उच्चकोटि का है, जिससे उसके अधीनस्थों को सुख प्राप्त होता है और जो दूर के मनुष्यों को अपनी ओर आकृष्ट करता है।

शासक वही अच्छा और उच्चकोटि का है, जो जनता पर अधिक बोझ डाल करके भी उसे क्षुब्ध नहीं होने देता। यदि जनता में क्षुब्धता उत्पन्न हो जाती है, तो वह अपने मृदुल और मानवी व्यवहार से उसे शान्त कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बुद्धिमान मनुष्य कभी भी उन विषयों के निर्णायक नहीं बनते, जिन्हें उनका ज्ञान नहीं होता। इसके विपरीत अज्ञानी मनुष्य प्रत्येक विषय में अपना निर्णय सुनाने के लिए उद्‌त रहते हैं।

जो मनुष्य अपने दोषों को दूर करने में सर्वथा असमर्थ है, उसे इस बात का कहां अधिकार है कि वह दूसरों के दोषों की ओर संकेत करे, उन्हें सुधारने का प्रयत्न करे।

किसी कार्य को करने में शीघ्रता मत करो। तुम समझते हो शीघ्रता करने से कार्य शीघ्र समाप्त हो जाएगा पर मैं कहता हूं, शीघ्रता करने से कार्य पूर्ण तो होता ही नहीं है, उसमें सुन्दरता भी उत्पन्न नहीं होती।

मनुष्य को छोटी-छोटी बातों में अपने मन को सदा उलझाये नहीं रखना चाहिए। छोटी-छोटी बातों में मन को उलझाकर रखने से बड़ी-बड़ी बातें आंखों से ओझल हो जाती हैं।

यदि तुम किसी सेवा के कार्य में लगे हो, और उसके लिए तुम्हें पारिश्रमिक मिलता है, तो तुम सेवा के कार्य को प्रधान और पारिश्रमिक को अप्रधान समझो। ऐसा करने से निश्चित रूप से तुम्हारी उन्नति होती जाएगी।

दूसरों ने उसकी पूछ नहीं की, उसे आदर प्रदान नहीं किया, इस बात को जान करके भी जिस मनुष्य के मन में उद्विग्नता नहीं उत्पन्न होती, वह किसी भी महान् पुरुष से कम नहीं होता।

वास्तविक महान् पुरुष वह है, जो कथन के पूर्व ही कार्य की क्रियाओं में लग जाता है और जो साम्प्रदादियकता दूर, सम्पूर्ण मनुष्यों के हित के लिए कार्य करता है।

साधारण कोटि के मनुष्य आपत्ति पड़ने पर अच्छे मार्गों पर चलना छोड़ देते हैं, पर जो महान् पुरुष हैं, उनके पैर विपत्तियां पड़ने पर और भी अधिक दृढ़ता के साथ सद्‌पथ पर जम जाते हैं।

शुभ को जानने वाले से शुभ का इच्छुक अच्छा होता है। सबसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अधिक अच्छा वह होता है, जो निरंतर शुभ में ही रमण करता है, विचरण करता है।

जो मनुष्य गुण न होने पर भी उसे दिखाने का ढोंग करता है, उसके हृदय में कभी सत्य की प्रतिष्ठा हो सकती है—यह बात तो सोचनी तक नहीं चाहिए।

यदि तुम जीवन में उन्नति करना चाहते हो, उसके लिए एक ही उपाय है और वह यह कि सचाई और सरलता के साथ आत्म शोधन किया करो।

जो लोग असत्यवादी होते हैं, दुराचारी होते हैं, वे बहुत शीघ्र उद्विग्न हो जाया करते हैं। इसके विपरीत जो लोग सत्यवादी हैं, सदाचारी हैं, वे हिमालय के भार को भी अपनी छाती पर रखकर सदा प्रसन्न रहते हैं।

दूसरों के जिन व्यवहारों से तुम्हें कष्ट होता है, या जिन व्यवहारों को तुम नहीं चाहते कि दूसरे तुम्हारे साथ करे, तुम्हें भी उस प्रकार के व्यवहार दूसरों के साथ कदापि नहीं करने चाहिए।

महान् वह नहीं हैं, जो ऊचे पद हैं, जिसके पास अतुल संपदा हैं। महान् वह है, जिसके मन को भय और शोक मथित नहीं करता, जो प्रत्येक स्थिति में सदा सम बना रहता है।

ओछी प्रवृत्ति के लोगों की दृष्टि बुराइयों की ओर रहती है, पर जो श्रेष्ठ मनुष्य है, जो उच्चतम है, वे केवल गुणों को ही देखते हैं।

अनन्य मित्र वह है, जो अपने मित्र के केवल गुणों को देखता है। और जो उसकी बुराइयों पर प्रत्येक स्थान में, प्रत्येक स्थिति में पर्दा डालता फिरता है।

भद्रता और श्रेष्ठता की परिभाषा भिन्न-भिन्न रूपों में की गई है, पर मेरी समझ में स्वार्थों का दमन और आचारों का पालन करना ही भद्रता है, श्रेष्ठता है।

ओछी प्रवृत्ति के मनुष्य कार्य न करके केवल प्रलाप करते हैं। इसके विपरीत जो सत्यनिष्ठ हैं, जो उच्चतम हैं, उनकी प्रलाप में नहीं कर्मठता में आस्था होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संत ज्ञानेश्वर

समस्त जीवों के प्रति मेरे मन में प्रीति उत्पन्न हो और मैं सदा सत्कर्मों में संलग्न रहूं—विश्वात्मा परमेश्वर से मैं यही आशीर्वाद मांगता हूं।

समस्त विश्व का पाप रूपी अंधकार नष्ट हो, सम्पूर्ण विश्व में सत्कर्मों के सूर्य का प्रकाश उदय हो, और सम्पूर्ण प्राणियों के तीनों प्रकार के तापों का क्षय हो—मैं विश्वात्मा प्रभु से यही वरदान चाहता हूं।

जिन महान समस्त पुरुषों से समस्त मानवों का कल्याण होता हैं, और जो सब पर अपने प्रेमामृत की वर्षा करते हैं, वे सदा प्रफुलित रहें—मैं यही चाहता हूं।

जो ईश्वर के प्रेमी प्रेम के समुद्र के सदृश्य हैं, मैं चाहता हूं, वे सदा धरती पर बने रहें।

जिनकी प्रत्येक सांस में समस्त प्राणियों का मंगल निवास करता है, वे कलंक रहित चन्द्रमा और ताप रहित सूर्य के समान होते हैं।

यदि तुम ईश्वर से याचना करते हो, तो यही याचना करो कि समस्त प्राणियो को सुख मिले और ससस्त प्राणी सत्कर्म की ओर अग्रसर हो।

क्या तुम अपनी प्रार्थना में अपने लिए मोक्ष मांगते हो ? यदि तुम ऐसा करते हो तो भूल करते हो। तुम्हें अपने मोक्ष के स्थान पर समस्त प्राणियों के लिए दुःखों से मुक्ति माननी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि चिन्ताओं से मुक्त होना चाहते हो, तो इच्छाओं का परित्याग करो। इच्छाओं से ही चिन्ता और संतोष से ही आनन्द का जन्म होता है।

मन में एक बड़ा अद्‌भुत गुण होता है। वह यह कि जब इसे किसी चीज का चसका लग जाता है, तो उस पर अपने को निछावर कर देता है, कल्याण चाहते हो तो अपने मन में विरक्ति का चसका उत्पन्न करो।

क्या तुम ईश्वर से मिलना चाहते हो ? यदि हां, तो आडम्बरो को छोड़कर मन में प्रेम भाव उत्पन्न करो। भाव मय ईश्वर की प्राप्ति केवल भावो से ही हो सकती है, आडम्बरों से नहीं।

जिस तरह तुम दिन-रात वायु के समुद्र में डूबे रहते हो, उसी प्रकार तुम्हारे चारों ओर ईश्वर का अस्तित्व विद्यमान रहता है। जगत में एक कण भी ऐसा नहीं है, जहां और जिसमें ईश्वर न हो।

तुम अपने को एकाकी मत समझो। तुम्हारे साथ सम्पूर्ण जगत बंधा हुआ है। अतः अपने लिए कुछ न मांगकर सब कुछ जगत के लिए मांगो।

क्या तुम अपने को धार्मिक कहते हो ? यदि हां, तो अपने हृदय में घुसकर देखो, तुमसे किसी का अमंगल तो नहीं हो रहा है, क्योंकि दूसरो का अमंगल करने वाला मनुष्य कदापि धार्मिक नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संत वसेसर

एक ईश्वर ही पूज्य है, अहिंसा ही परम धर्म है। अधर्म से प्राप्त वस्तु को न स्वीकार करना ही व्रत है। इच्छाओं को वश में रखना ही संयम है। शान्ति ही तप है। किसी से कपट और द्रोह न करना ही ईश्वर प्रेम है।

देव लोक और मृत्यु लोक अलग नहीं है। सच बोलना ही देव लोक है, झूठ बोलना ही मत्युलोक है। सदाचार ही स्वर्ग है, अनाचार ही नरक है।

सच्चा मनुष्य वह है जो अपने से मिलने वाले मनुष्यों को आदर से प्रणाम करता है।

मुझे ब्रह्मा का पद नहीं चाहिये, मुझे शिव और विष्णु का भी पद नहीं चाहिये। मुझे चाहिये वह श्रेष्ठ ज्ञान जिससे मैं सभी मनुष्यों का आदर कर सकूं, सब से प्रेम कर सकूं और सब की भलाई में लग सकूं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सन्त दो मौलैनम पिंगल

क्या तुम शान्ति चाहते हो; यदि हाँ तो अपने आपको भगवान की इच्छाओं को समर्पित कर दो। भगवान की इच्छाओं को सौंपने से ही, तुम्हें वह शान्ति मिल सकती है, जिसके लिये तुम दर-दर भटक रहे हो।

क्या तुम जानते हो, तुम्हें नाना प्रकार के दुःख क्यों घेरे रहते हैं ? केवल इसलिये कि तुम भगवान की इच्छाओं को नहीं, अपनी इच्छाओं को सर्वोपरि मानते हो।

क्या तुम्हें पता है, तुम बार-बार क्यों पराजित होते हो ? इसलिये कि तुम्हारे मन में संकल्प-विकल्प की आँधियाँ उठा करती हैं। संकल्प-विकल्प को छोड़कर, दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ो, विजयश्री तुम्हारा मस्तक चूमेगी।

भगवान की आस्था को मत छोड़ो। यदि ठोकर लगती है तो लगने दो। एक दिन आयेगा, जब तुम्हारे मन की आस्था ठोकरों को कोमल पुष्प बना देगी।

यदि किसी गुरुजन को देखो तो लता की तरह धरती पर फैल जाओ। गुरुजन के सामने विनम्रता दिखाना ईश्वर के समक्ष विनम्रता दिखाना होता है।

शरीर का शृंगार तो सरलतापूर्वक किया जा सकता है, पर आत्मा के शृंगार के लिये शरीर को गलाना होगा स्वार्थ को छोड़ना होगा। शरीर को गलाने और स्वार्थ को छोड़ने से ही वह चमक पैदा हो सकती है, जिससे आत्मा प्रकाशित होती है।

क्या तुम सर्वेश्वर को अपने हृदय में बसाना चाहते हो ? यदि हाँ, तो अपने मन और हृदय को स्वच्छ बनाओ। मानते हो, तुम्हारा मन और तुम्हारा हृदय कैसे स्वच्छ हो सकता है ? इंन्द्रिय जनित सुखों को छोड़ने से, स्वार्थों का परित्याग करने से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुकरात

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिये, सुख नहीं होना चाहिये, क्योंकि सत्य शास्वत है और सुख नश्वर है ।

किसी वस्तु का निर्णय करने के लिये तीन तत्वों की आवश्यकता होती है। अनुभव, ज्ञान और व्यक्त करने की क्षमता । जिन लोगों के पास यह तीनों तत्व होते हैं, उन्हीं के द्वारा किया हुआ निर्णय वास्तविक निर्णय होता है ।

जो सत्य पर दृढ़ रहता है, वही ईश्वर के प्रेम का पात्र बन सकता है। अत: प्रत्येक मनुष्य को सत्य पर दृढ़ रहने का प्रयत्न करना चाहिये ।

अच्छे जीवन की चाह प्रत्येक मनुष्य के हृदय में रहती है। किन्तु अच्छा जीवन उसी को प्राप्त होता है, जिसके पास ज्ञान, अच्छी बुद्धि और अच्छा अनुभव होता है। अत: मनुष्य को अच्छा ज्ञान, अच्छी बुद्धि और अच्छे अनुभव प्राप्त करने के लिये सचेष्ट रहना चाहिये ।

मनुष्य जितना सुखों की ओर भागता है, उतना अच्छी बुद्धि की ओर नहीं भागता, यदि वह अच्छी बुद्धि की ओर भागे, तो उसे सुखों की ओर भागना ही नहीं पड़ेगा ।

तुम जिस बात को ठीक समझते हो उसे प्रगट करने में कभी मत डरो । उस समय भी न डरो, जब तुम्हारे सिर पर तलवार हो, सच मानो, तुम्हारी दृढ़ता पर प्रसन्न होकर लोग तुम पर पुष्पों की वर्षा करेंगे ।

आत्मा अमर और अविनश्वर है । यदि तुम इस बात को जानते हो, तो फिर सत्य को प्रकट करने में भयभीत क्यों होते हो, क्योंकि तुम शरीर नहीं आत्मा हो ।

यदि तुम्हें किसी विषय का पूरा ज्ञान नहीं है, तो तुम्हें वृद्धों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परामर्श करना चाहिये। जानते हो क्यों, इसलिये कि उन्होंने जीवन की मंजिल का रास्ता तुमसे कहीं अधिक समाप्त किया है।

क्या तुम अपने को अनुभवी कहते हो। यदि हाँ तो तुम गिनकर देखो कि तुम कितनी बार मार्ग में गिर कर उठे हो? मार्ग में गिरे और उठे हुये बिना अनुभव नहीं प्राप्त होता।

सच्चे अनुभवी कौन हैं। जो जीवन के मार्ग पर बहुत दिनों तक चल चुके हैं और जो बहु संख्यक मनुष्यों से मिलकर उन्हें पहचान चुके हैं।

दार्शनिक कौन हैं? वह जिसे विविध विषयों को जानने का नशा रहता है। तुम अपने मन के भीतर घुस कर देखो, क्या यह नशा उसमें हैं? यदि नहीं है, तो अपने को दर्शनिक कहना छोड़ दो।

सत्यवादी बनने का ढोंग मत करो। क्या तुम सत्य के लिये विष-पान कर सकते हो? यदि नहीं, तो तुम्हें अपने को सत्यवादी कहने का कोई अधिकार नहीं है।

यदि तुम ईश्वर का दर्शन चाहते हो, तो सच बोलो, क्योंकि जो सत्य है, वही ईश्वर है, अगर तुम्हें सत्य की झलक मिल जाएगी, तो सच मानों तुम्हें, ईश्वर की झलक मिल जाएगी।

तुम ईश्वर-ईश्वर की रट लगाये रहते हो, किन्तु न तो सच बोलते हो और न दूसरों से प्रेम करते हो। सत्य और प्रेम के रास्ते पर चलने से ही तुम ईश्वर के पास पहुँच सकोगे। केवल रट लगाने से नहीं पहुँच सकोगे।

मैं मानता हूं कि सत्य और प्रेम के रास्ते पर चलना अत्यअधिक कठिन है। किन्तु तुम्हें यह जानना चाहिये कि इन कठिनाईयों को हँसते और मुसकराते हुये पार करने के लिये ही तुम्हारा जन्म हुआ है।

अमृत से भरा हुआ कलश तुम्हारे सामने रखा हुआ है। वह तुम्हारे लिये है। उठो और काँटों के झाड़ियों को पार करते हुये उसके पास जाकर उसे हाथ में लेकर पी जाओ।

नंगी तलवारें हाथ में लिये हुए शत्रु रास्ता रोक कर खड़े हों, तो भी आगे बढ़ो। धर्म और सत्य के लिये दृढ़ता दिखाने पर ईश्वर प्रसन्न होकर तुम्हारा हाथ पकड़ लेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री खलील जिब्रान

मेरे मित्रो ! स्मरण रखो कि जो सिक्का तुमने वृद्ध, अशक्त या आवश्यकता से पीड़ित, दरिद्र के हाथ में दिया है, वह सिक्का नहीं रह जाता। वह ईश्वरीय हृदय के साथ तुम्हारे हृदय को जोड़ने वाली स्वर्ण शृंखला बन जाता है।

प्रेम मृत्यु से बलवान है और मृत्यु जीवन से बलवान्। यह जानते हुये भी मनुष्य-मनुष्य के बीच में कितने क्षुद्र भेद खड़े कर लेता है।

मैं किसी की हत्या करने—जैसा क्षुद्र बनूं, इससे पूर्व अच्छा यही है कि कोई और मुझे मार डाले।

आवश्यकता और विलास के मध्य कोई रेखा, कोई मनुष्य नहीं खींच सकता। केवल देवदूत यह काम कर सकता है और देवदूत यह तो हमारे सद्विचारों का ही नाम है।

समझ रखो, यदि तुम्हारे हृदय में पाशविक कामनायें उत्पन्न होंगी, चाहे वे तुम्हारे लिये कितनी ही सुन्दर क्यों न होंगी तुम्हें उनकी पूर्ति के लिये पशु बनना पड़ेगा, परन्तु तुम तो मनुष्य हो, तुम्हारा हित इसी में है कि तुम्हारे हृदय में शुभ कामनायें उत्पन्न हों। शुभ कामनायें तुम्हें यदि देवता नहीं तो अच्छा मनुष्य अवश्य बनायेंगी।

महान् शोक अथवा महान् आनन्द तुम्हारे सत्य को ही प्रकट कर सकते हैं और कोई नहीं। इसका यह अर्थ हुआ कि सत्य की प्राप्ति के लिये या तो तुम्हें अपार कष्ट सहने होंगे या आनन्द की मस्ती प्राप्त करनी होगी—दो में से एक।

तुम्हें जिसकी आवश्यकता नहीं है, वह मुझे दे दो; इसमें कोई उदारता नहीं है। जिसकी आवश्यकता तुम्हें मुझ से अधिक है, वह तुम मुझे दे दो—यही सच्ची उदारता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं कब समझूंगा कि मुझे जो अन्याय, कष्ट आदि मिला, वह मेरे द्वारा किये अन्यायों का केवल पासंग मात्र है ।

अपने मर्यादित ज्ञान से दूसरों को मापने के बदले यह मापने का काम ही छोड़ दो ।

वृत्तियाँ कामनाओं का संघर्ष है— यह और कुछ नहीं है, जीवन व्यवस्थित होना चाहता है । उसकी माँग को समझो ।

धनी और कंगाल के मध्य का अन्तर कितना नगण्य है । एक ही दिन की क्षुधा या एक ही घन्टे की प्यास दोनों को समान बना देती है ।

मैं ही अग्नि हूं और मैं ही कूड़ा-करकट हूँ । मेरी अग्नि मेरे कूड़े-करकट को भस्म कर दे । इसका नाम है—शाश्वत जीवन ।

अपना मन ही अपने को भ्रम में डालता है और अपने नियम-संयम को भंग करता है । लेकिन मन से परे एक तत्व है जो नियम-संयम भंग करने वाले मन के वश में नहीं होता । मन को वश में करने के लिये उसका आश्रय लेना ही पड़ेगा ।

यह आश्चर्य देखो, मेरे दुःख का एक भाग—प्रधान भाग मेरे सुख पाने की इच्छाओं में ही है । मुझे यह जान कर नवीनता लगी कि सुख पाने की इच्छा का ही अर्थ है—दुःख ! मैंने अपने आपको सात अवसरों पर क्षुद्र बनते देखा ।

जब मैं किसी धनी मनुष्य के सामने विनम्र रंग बनता हूँ, तो जानते हो मन में क्या होता है ? मन में होता है, मैं भी उसी के समान उन्नत और अमीर बन जाऊँ । क्या यह मेरे मन की छलना नहीं है ?

जब मैं निर्बल और असहाय मनुष्यों के समक्ष सीना तान कर चलता हूँ, तो जानते हो मेरे मन में क्या होता है ? मेरे मन में होता है, मैं इन सभी मनुष्यों से श्रेष्ठ हूँ, बड़ा हूँ, उच्च हूँ । क्या यह भी मेरे मन की छलना नहीं है ।

मैं प्रायः कठिनाइयों से बचता हूँ और सरलता की ओर भागता हूँ, पर क्या इससे मुझे कार्यों में सफलता मिल सकती है ? नहीं मिल सकती; क्योंकि सुन्दर मूर्तियों के निर्माण के पहले पत्थरों को तोड़ना पड़ता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम किसी सरल कार्य को क्यों चुनते हो ? अपने हृदय में घुस कर देखो, अवश्य उसमें साहस और पुरुषार्थ का अभाव है ।

यदि मैंने अपराध करने के पश्चात् प्रायश्चित करने के स्थान पर यह कह दिया कि अरे ऐसा तो सभी लोग करते हैं, तो जानते हो इसका तात्पर्य क्या है ? इसका तात्पर्य है अपराध का समर्थन करना और यह समर्थन मुझे ऐसे गढ्ढे में गिरा देगा, जिसकी गहराई को नापने के लिये कोई पैमाना नहीं है ।

जब तुम अपनी दुर्बलताओं को सहन कर लेते हो, तो जानते हो उसका तात्पर्य क्या होता है ? उसका तात्पर्य होता है तुम अपने आपको भगवान के चरणों में समर्पित करना चाहते हो—आगे बढ़ना चाहते हो ।

किसी की गरीबी और अमीरी को देख कर अपने आपको न बदलो । सामने गरीबी हो या अमीरी, अपने वास्तविक रूप में रहो—यही जीवन की श्रेष्ठता है तुम जिन आडम्बरों से अपने जीवन को सजाना चाहते हो वे तेज हवा में तूल की तरह उड़ जायेंगे । जीवन को आडम्बरों से सजाने की अपेक्षा सादा रहना कहीं अधिक अच्छा है ।

तुम किसी कुरूप मनुष्य को देख कर जब घृणा प्रदर्शित करते हो, तो जानते हो उसका वास्तविक अर्थ क्या होता है ? उसका वास्तविक अर्थ यह होता है कि तुम उससे भी अधिक कुरूप हो, उससे भी अधिक बद-शकल हो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तपस्वी सहलतस्तरी

पवित्र भोजन के बिना एकान्त में भी उत्तम साधना नहीं हो सकती और ईश्वरार्पण किये बिना कोई भी वस्तु पवित्र नहीं हो सकती।

इन चार बातों का पालन करोगे, तभी तुमसे विशुद्ध साधना हो सकेगी—1. भूख की अपेक्षा कम भोजन करना, 2. लोक-प्रतिष्ठा का त्याग, 3. निर्धनता का स्वीकार, और 4. ईश्वरेच्छा में संतोष।

अन्याय से प्राप्त वस्तु का उपभोग करने वाले के सारे अंग पाप से लिप्त हो जाते हैं। उसकी अपनी इच्छा न हो तो भी वह पाप में ही डूबता चलता है। जो मनुष्य (न्यायपूर्वक प्राप्त) पवित्र वस्तु का उपयोग करता है, उसके सारे अंग साधना के अनुकूल बनते हैं और बाह्य संयोग रूप में ईश्वर कृपा भी उसको विशेष रूप से आकर प्राप्त होती है।

जो मनुष्य चाहता है कि उसे सच्ची निवृत्ति प्राप्त करनी है तो उसको सब प्रकार के पाप कर्मों से और विपरीत ज्ञान से हाथ खींच लेना चाहिये।

तुम जो भी काम करो, वह यदि उसकी आज्ञा के अनुसार नहीं है तो उससे तुमको दुःख ही प्राप्त होगा।

ईश्वर भक्त जब तक अदृश्य वस्तु-स्थिति की ओर प्रेम नहीं पैदा करता और 'मृत्यु सिर पर है'—यह बात याद नहीं रखता, तब तक उसमें सर्वांग सुन्दर तपश्चर्या आती ही नहीं।

ईश्वर के सिवा दूसरे किसी भी पदार्थ में जो मनुष्य सुख मानता है उसका मन ही दूषित है, इसलिये उसके हृदय में प्रभु विश्वास और पवित्रता की ज्योति का प्रकट होना कठिन है।

तुम बाहर से निर्धन दीख पड़ने वाले साधु पुरुषों के प्रति अवज्ञा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्व दिखलाते हो। पर यह अच्छी तरह जान लो कि वे ही प्रभु की सच्ची संतान, पूर्ण प्रतिनिधि और सर्वोत्तम सम्पत्तिवान् हैं।

इन छः विषयों का अवलम्बन करना ठीक है—

1. ईश्वरीय ग्रन्थ का अवलम्बन, 2. ऋषि-मुनियों के द्वारा प्रचारित ईश्वरीय आज्ञाओं का अनुसरण, 3. खान-पान को पवित्र रखना, 4. हिंसा और निन्दा करने वालों को हिंसा और निन्दा करने से बचना। 5. निषिद्ध विषयों से दूर रहना और 6. जो कुछ भी देने का विचार उठे, तुरन्त ही दे डालना।

धर्म के तीन मूल हैं :—1. विचार तथा आचार में महात्माओं के मार्ग पर चलना, 2. पवित्र खान-पान करना, 3. सत्कार्य में ही स्थिति और प्रीति रखना।

ये दो बातें मनुष्य के लिये घातक हैं :—1. लोक में मान-प्रतिष्ठा-प्राप्ति के लिये दौड़ना और 2. निर्धनता से भयभीत होना।

इस जगत् में प्रभु के समान कोई भी सच्चा सहायक नहीं और प्रभु-प्रेरित महापुरुष के समान कोई सन्मार्ग दर्शक नहीं।

मन को सत्यमार्ग पर चलाने की पहली सीढ़ी है—सत्य का स्वीकार; दूसरी सीढ़ी है—संसार से विरक्ति; तीसरी सीढ़ी है—आचरण की उच्चता और पवित्रता तथा चौथी सीढ़ी है—प्रभु के प्रति अपराधों के लिये क्षमा-प्रार्थना।

जो मनुष्य मन की मलिनता से मुक्त और सद्विचारशील हैं, ईश्वर के सान्निध्य के कारण जिसका मायाबन्धन छिन्न-भिन्न हो गया है और जिसकी दृष्टि में धूल और सुवर्ण एक समान है, वही सच्चा सूफी या ज्ञानी ऋषि है।

अल्पाहार में, दिव्य शान्ति में और लोक-संसर्ग के त्याग में साधुता रहती है।

कोई भी अत्यन्त आवश्यक वस्तु तुम्हारे पास न हो तो समझो कि तुम्हारे भले के लिये ही प्रभु की ऐसी इच्छा है, इस प्रकार सच्चे समाधान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के साथ शान्त रहने का नाम ही प्रभु पर निर्भरता है।

प्रभु पर निर्भर रहने वालों के तीन लक्षण हैं—1. दूसरों के सामने याचक न बनना, 2. मिलने पर भी न लेना, और 3. लेना भी पड़े तो उसे बाँट देना।

आत्म-समर्पण किये बिना कोई प्रभु के ऊपर निर्भर नहीं रह सकता और स्वार्थ-साधना का त्याग किये बिना आत्म-समर्पण नहीं हो सकता।

प्रभु पर निर्भर रहने वालों को तीन वस्तुएँ प्राप्त होती हैं—1. प्रभु में पूर्ण श्रद्धा, 2. अध्यात्मविद्या का प्रकाश, और 3. परमात्मा का साक्षात्कार।

ईश्वर ने तुमको जो देना स्वीकार किया है, उसमें जरा भी संदेह न रखना—इसी का नाम निर्भरता अर्थात् प्रभु के ऊपर निर्भर रहना है।

जिस वस्तु की जरूरत हो, वह वस्तु जिसके पास हो उसी से जान-पहचान करनी चाहिये। तुम्हें मोक्ष चाहिये तो वह भी ईश्वर के पास भरपूर होने के कारण उसी से जान-पहचान करने पर प्राप्त होगा, संसारिक भाई-बन्धुओं से नहीं।

प्रभु को पाने के लिये दीनता और हीनता (लौकिक पदार्थ न रखना) के समान दूसरा सहल मार्ग नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महात्मा श्री तैलंग स्वामी

आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये योग सीखना पड़ता है। इसके लिये गृह-त्याग या अरण्यवास की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार के कुछ नियम हैं जिनका केवल चिन्तन करके तदनुरूप आचरण करने से योगफल और आत्मज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये अन्य किसी प्रकार की कठिन साधना नहीं करनी पड़ती, केवल उनका ही अनुध्यान करने पर योगफल प्राप्त किया जाता है; उनको भी सरल योग कहते हैं। योगफल प्राप्त करने के लिये जिन सब वृत्तियों का निरोध करना आवश्यक होता है, उनको किये बिना योगफल की प्राप्ति नहीं हो सकती। उन नियमों और प्रकारों को इस नियमावली में स्थान दिया। इस प्रकार आचरण करने और हृदय में इस प्रकार के भावों को ग्रहण करने पर निश्चिय ही योगफल की प्राप्ति हो सकती है। वे नियम इस प्रकार हैं—

1. असंतुष्ट मनुष्य किसी को भी संतुष्ट नहीं कर सकता, जो सर्वदा संतुष्ट रहता है वह सबको प्रफुल्ल कर सकता है।
2. जिह्वा पाप की बातें कहने में बहुत ही तत्पर रहती है, उसको संयत करना आवश्यक है।
3. आलस्य सब अनर्थों का मूल है, यत्नपूर्वक आलस्य का परित्याग करो।
4. संसार धर्माधर्म की परीक्षा की भूमि है, सावधान होकर धर्माधर्म की परीक्षा करके कार्य का अवलम्बन करो।

किसी धर्म के प्रति अश्रद्धा न रक्खो, सभी धर्म एकसार हैं और उनमें अवश्य ही सत्य निहित है।

दरिद्र को दान दो। धनी को दान देना व्यर्थ है। क्योंकि उसको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आवश्यकता नहीं है, इसी कारण वह आनन्दित नहीं होता।

साधु का सहवास ही स्वर्ग तथा असत्संग ही नरकवास का मूल है। आत्मज्ञान, सत्पात्र में दान और संतोष का आश्रय करने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जो शास्त्र पढ़कर तथा उसके अभिप्राय को जानकर उसका अनुष्ठान नहीं करते, वे पापी से भी अधम हैं।

किसी भी कार्य के अनुष्ठान के मूल में धर्म होना चाहिये, नहीं तो सिद्धि न होगी।

कभी किसी की भी हिंसा न करो, सत् या असत् उद्देश्य से भी किसी प्राणी का वध न करो।

जो आदमी पाप-कलंक को बिना धोये, मिताचारी और सत्यानुरागी बिना हुए गेरुआ वस्त्र धारण कर ब्रह्मचारी बनता है, वह धर्म का कलंक रूप है।

बिना छप्पर के घर में जैसे वर्षा का पानी गिरता है, चिन्तनरहित मन में भी उसी प्रकार शत्रु प्रवेश करते हैं।

पापी लोग इहकाल में अनुतापाग्नि से दग्ध होते हैं, वे जब-जब अपने कुकर्मों को याद करते हैं, तब-तब उनके प्राणों में अनुताप जग उठता है।

मननशीलता अमरत्व की प्राप्ति का मार्ग है, मनन शून्यता मृत्यु का मार्ग है।

गर्व न करो, कामोपभोग का चिन्तन न करो।

शत्रु-शत्रु का जितना अनिष्ट नहीं कर सकता, कुपथगामी मन मनुष्य का उससे भी अधिक अनिष्ट करता है।

मधुर्माक्षका जैसे पुष्प के सौन्दर्य अथवा सुगन्ध का अपचय न करके मधु संग्रह करती है, तुम भी उसी प्रकार पाप में लिप्त न होकर ज्ञान प्राप्त करो।

यह मेरा शत्रु है, यह ऐश्वर्य मेरा है, अति ज्ञानी लोग भी इस प्रकार चिन्तन करके क्लेश पाते हैं। जब अपना-आप अपना नहीं होता,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तब पुत्र और सम्पत्ति किस प्रकार अपने हो सकते हैं।

कम ही लोग भवसागर पार होते हैं, अधिकांश लोग तो धर्म का ढोंग रचकर किनारे पर ही दौड़-धूप करते रहते हैं।

संग्राम में जिसने लाखों मनुष्यों को जीत लिया है वह मनुष्य वास्तविक विजयी नहीं है। जिसने अपने-आपको जीत लिया है वही वास्तविक विजयी है।

पाप मुझ पर आक्रमण नहीं कर सकता—यह सोचकर निश्चिन्त न रहो। एक-एक बूँद जल से घड़ा भर जाता है, वैसे ही निबोध मनुष्य क्रमशः पाप मग्न हो जाते हैं।

किसी को कठोर वचन मत बोलो, कठोर वचन बोलने से कठोर बात सुननी पड़ेगी। चोट करने पर चोट सहनी पड़ेगी। रुलाने से रोना पडेगा।

जो लोग वासना को नहीं जीत सकते। उनका मन नंगे बदन, जटा-धारण, भस्म-लेपन, उपवास, मृतिका-शय्या—इत्यादि से पवित्र नहीं हो सकता।

दूसरों को जैसा उपदेश देते हो, स्वयं भी वैसे ही बन जाओ, जिसने अपने को वशीभूत कर लिया है, वह दूसरे को भी वश में कर सकता है। अपने को वश में करना ही कठिन है।

पाप और पुण्य सब निजकृत होते हैं, कोई आदमी दूसरे को पवित्र नहीं कर सकता।

यह जगत् जल-बुदबुद, मृग-मरीचिका के समान है, जो इस जगत को तुच्छ जानता है, मृत्यु उसको नहीं देख पाती।

गुरू जो उपदेश दें, उसको मन लगाकर सुनो और पालन करो।

व्यर्थ मत बोला करो, जो अधिक बोलता है, वह निश्चत ही अधिक झूठ बोलता है। जहाँ तक हो, बात कम करने की चेष्ट करो, उसके साथ ही शान्ति प्राप्त होगी।

योग सीखने के लिये वन में जाना या अनाहारी होना नहीं पड़ता। चित्तवृत्ति के निरोध का नाम ही योग है। वश में की हुई इन्द्रियादि को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इष्ट साधन में लगाने की क्षमता जिसमें है, उसके लिये घर या वन दोनों समान ही हैं। एकाग्रता योग का प्राण है; इस एकाग्रता के कारण जीवात्मा और परमात्मा एकीभूत हो जायँगे, जीवात्मा और परमात्मा में कोई भेद लक्षित न होगा, तभी साधक वास्तविक योगी होगा। ईश्वर की प्राप्ति के लिये योगाङ्गों का सहारा नहीं लेना पड़ता। भक्ति के द्वारा ही साधक ईश्वर में समाहित हो सकता है। भक्त भक्ति के द्वारा भगवान को प्रसन्न करके उनमें समाहित होता है। इसी को 'समाधि' कहते हैं।

समाधि का अर्थ है ब्रह्म में मन का स्थिर हो जाना, परमात्मा और जीवात्मा का एकीकरण; अतएव समाधि योग की फलस्वरूपा है। जब चित्त वशीभूत होकर सब कार्यों से निःस्पृह होकर आत्मा में ही अवस्थान करता है, तब उसी को समाधि कहते हैं। जब विशुद्ध अन्तःकरण द्वारा आत्मा का अवलोकन करके आत्मा में ही परितृप्त होता है, तब साधक को केवल बुद्धि द्वारा प्राप्त, अतीन्द्रीय, आत्यन्तिक सुख की उपलब्धि होती है। जिस अवस्था में स्थित होने पर आत्मतत्व से च्युत नहीं होता, जिस अवस्था को प्राप्त करने पर अन्य लाभ नहीं जान पड़ते, जिस अवस्था में स्थित होने पर गुरुतर दुःख भी विचलित नहीं कर सकते, उसी अवस्था का नाम योग है। मन को आत्मा में निहित करके स्थर बुद्धि के द्वारा धीरे-धीरे विरक्ति का अभ्यास करो, अन्य कोई चिन्तन न करो। चंचल स्वभाववाला मन जिन-जिन विषयों में विचरण करे, उन-उन विषयों से उसको लौटाकर आत्मा के वशीभूत करो। रजोगुण और तपोगुण से विहीन योगी इस प्रकार मन को सर्वदा वशीभूत करके अनायास ही ब्रह्मसाक्षात्कार-रूप सर्वोत्कृष्ट सुख को प्राप्त होते हैं। सर्वत्र ब्रह्मदर्शी पुरुष समाहित चित्त से सब भूतों में आत्मा को और आत्मा में सब भूतों को देखते हैं। कामनाशून्य होकर जो योग का अभ्यास करते हैं, वे ही समाधिस्थ या मुक्त होने योग्य हैं। ईश्वर में लीन होकर जीव आत्मा और परमात्मा के मिलन का नाम 'मुक्ति' है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महान् संत श्री यादव

जवानी में मौज करना और बुढ़ापा आने पर माला लेकर भगवान को भजना, आम खाकर गुठली का दान करने जैसा है, अत: जवानी से ही प्रभु की भक्ति करनी चाहिये ।

धनी मनुष्य के आमने-सामने बैठने से तो साधु पुरुष के आगे बैठना अच्छा है । भक्तजन तो भगवान के स्मरण-कीर्तन को ही अपनी आजीविका समझते हैं ।

बबूल के पेड़ के नीचे बैठने से काँटा लगता ही है, वैसे ही दुष्टजनों की संगति से दु:ख होना अवश्यम्भावी है ।

जिस प्रकार सर्प के एक ही जहरीले दंशन से मनुष्य मर जाता है, उसी प्रकार नरक में जाने के लिये एक ही पाप काफी है ।

जैसे टूटे हुए नगारे की आवाज अच्छी नहीं होता, वैसे ही अनीतिमान् गुरु का बोध भी भक्त पर असर नहीं करता ।

फलवाली डाल वैसे झुकी रहती है, वैसे ही गुणवान् पुरुष भी नम्र बने रहते हैं ।

जिसके हृदय में प्रभु का वास होता है, वहाँ 'अहं' भाव नहीं रहता; जहाँ 'अहं' भाव रहता है वहां प्रभु का निवास नहीं होता ।

जिन विश्व रूप भगवान की कृपा से तुम्हें धन प्राप्त हुआ है, उन्हीं की सेवा में खर्च करने में ही उसकी शोभा है ।

जैसे इत्र की शीशी खोलने से सदा सुगन्ध ही आती है, वैसे ही सद्गुरु के मुख से सदा उपदेश-वाक्य ही निकला करते हैं ।

जो आदमी दूसरे को कुएँ से बाहर निकालना चाहता है, उसे पहले अपने पैर मजबूत कर लेने चाहिये । इसी तरह जो गुरु बनना चाहे, उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पहले स्वयं पूरा ज्ञानी बनना चाहिये।

जैसे नाव चारों ओर पानी से घिरी हुई रहती है, फिर भी जल उसमें प्रवेश नहीं कर सकता, उसी प्रकार संसार की घोर वासनाओं के बीच में रहते हुए भी संतजन अलिप्त रहते हैं।

मनुष्य को अपने घर पर स्नेह होता है, परन्तु पैसों वाली तिजोरी पर उससे ज्यादा स्नेह होता है, उसी प्रकार भगवान को सारा संसार प्यारा है, पर उसमें भी जो भक्तजन हैं वे उनको अधिक प्यारे हैं।

जिस प्रकार सूर्य के सामने जाने वाले को अपनी छाया नहीं दीखती, इसी प्रकार भगवान के सम्मुख जाने वाले को अज्ञान और नरक का मुंह भी नहीं देखना पड़ता।

शक्ति से उपरान्त पैसे खर्च करके तीर्थ यात्रा करने की अपेक्षा तो घर बैठे ही मन शुद्ध करना अधिक उत्तम तीर्थ सेवन है।

भला करने वाले का भला तो प्रायः सभी करते हैं, पर जो बुरा करने वाले का भी भला करता है, वही असल में भगवान का भक्त है।

सांसारिक पुरुषों को जैसे कुटुम्बियों के यहां जाना अच्छा लगता है, वैसे ही जब तुम्हें भगवान के मन्दिर में जाना अच्छा लगे, तभी समझना कि अब भक्ति का प्रारम्भ हुआ है।

ईश्वर मनुष्य के लिये अवतार लेता है, परन्तु मनुष्य अपने को ईश्वर के अर्पण नहीं करता।

जैसे सब नदियाँ समुद्र की ओर जाती हैं, वैसे ही सब धर्म प्रभु का ज्ञान बतलाते हैं।

संसार तो मुसाफिरखाना है, असली घर तो प्रभु का धाम है।

जिसे घर में चोर न घुसने देना हो, उसे दीपक जलता हुआ रखना चाहिये, वैसे ही जिसे पापों से बचना हो, उसे सदा प्रभु का स्मरण करते रहना चाहिये।

अन्धे के हाथ में जैसे रोशनी दूसरों के लिये ही होती है, वैसे ही आजकल के अधिकांश ज्ञानियों का ज्ञान भी दूसरों के लिये होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कसाई के घर पुष्ट बना बकरा आखिर मारा ही जाता है, वैसे ही मौज-मजा उड़ाने वालों की अन्त में दुर्दशा होती है।

ज्वर की दवा हो सकती है, पर कुसंग की दवा नहीं हो सकती। कुसंग से मन के भीतर जो व्याधि पैदा होती है, वह शरीर को ही नहीं आत्मा को भी रूग्ण बना देती है।

पवित्रता यह नहीं है कि तुम मल-मल कर स्नान करो। पवित्रता तो यह है कि तुम अपने हृदय में सच्चाई और धर्म को स्थान दो। सच्चाई और धर्म को हृदय में स्थान देने से ही तुम उस परमात्मा को समझ सकते हो जो पवित्र समझा जाता है।

दर्पण में अपना मुँह देखने पर तुम्हें अपने मुँह की सुन्दरता दिखाई पड़ेगी। यदि तुम हृदय रूपी दर्पण में देखो तो तुम्हें वे बुराइयाँ दिखाई पड़ेंगी, जो तुम्हारे हृदय में विद्यमान हैं। मनुष्य को दर्पण को नहीं, हृदय रूपी दर्पण को देखने का अभ्यास करना चाहिये। किसी दूसरे की बुराई देखने की अपेक्षा अपनी बुराई देखो। जो लोग अपनी बुराई देखते हैं, उनके हृदय में अपने आप ही अच्छे गुणों का निवास हो जाता है।

संसार के दुःखों का कारण केवल मोह है। यदि मनुष्य दुःखों से मुक्ति पाना चाहता है, तो उसे केवल एक ही काम करना चाहिये। वह काम है, सभी प्रकार के मोहों का परित्याग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री बल्लभाचार्य

सम्पूर्ण अहंकार के नाश होने पर जीवात्मा अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हो जाती है। जीवात्मा की इसी स्थिरता को उसकी सार्थकता कहते हैं। यदि कुछ छोड़ने योग्य है, तो वह मन का अहंकार है। अहंकार को छोड़ने पर ही वह पद प्राप्त होता है, जिसे परमपद कहते हैं।

अपने को कर्त्ता मत मानों। अपने को कर्त्ता मानोगे, तो ममता उत्पन्न हुये बिना न रहेगी और ममता उत्पन्न होने पर दुःख अवश्य भोगने पड़ेगें।

अपने को दिन-रात श्रीकृष्ण की सेवा में लगाये रहो। मानसिक सेवा सभी प्रकार की सेवाओं में श्रेष्ठ है। अतः मानसिक सेवा में आसक्ति पैदा करो।

ईश्वर में अपने को पूर्णरूप से तल्लीन कर देना ही सेवा है। इसी सेवा से उस जन्म-मरण का बोध होता है, जिसके कठिन बन्धनों में जकड़ा हुआ जीव दिन-रात दुःख और क्लेशों थे छटपटाता रहता है।

जब तक ब्रह्म का बोध नहीं होता, दुःखों से निवृत्ति नहीं होती। ब्रह्म के बोधत्व का केवल एक ही उपाय है और वह यह कि संज्ञा शून्य होकर, अपने को प्रभु की सेवा में लगा दो।

दोष पाँच प्रकार के होते हैं—सहज, देशज. कालज, संयोगज और स्पर्शज। यह पाँचों प्रकार के दोष दिन-रात काँटों के समान ही पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। उनकी पीड़ाओं से मुक्ति तो उसी समय हो सकती है, जब ब्रह्मत्व का बोध होगा। अतः तुम्हें अपना सम्पूर्ण प्रयत्न ब्रह्मत्व के बोध में ही लगाना चाहिये।

जगत में जो राग और द्वेष है, वह इसी कारण है कि ब्रह्मत्व के बोध का अभाव है। यदि मनुष्यों के भीतर से राग और द्वेष को हटाना है, तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसमें ब्रह्मत्व के बोध के लिये रूचि पैदा करनी होगी।

जिन मनुष्यों ने अपने आपको प्रभु के चरणों में निवेदित और समर्पित कर दिया है, उन्हें कभी किसी वस्तु के लिये चिन्ता नहीं करनी चाहिये, क्योंकि उनके लिये तो वह चिन्ता करता है, जिसे हम सर्वेश्वर कहते हैं।

अखिल सृष्टि के नियामक ईश्वर को रिझाने का केवल एक ही उपाय है और वह यह कि अहंकार छोड़कर अपने जीवन की बागडोर उसके हाथों में सौंप दो।

ईश्वर जब कृपा करता है, तो वह भले ही धन न दे, यश न दे और पद न दे, पर वह जन्म मरण के दुःखों से सदा के लिये मुक्त कर देता है।

ईश्वर के प्रेम के मार्ग पर चलते हुये यदि विपत्तियों का आक्रमण होता है, तो यह मत समझो कि ईश्वर के प्रेम के मार्ग पर चलना व्यर्थ है। क्योंकि ईश्वर तुम्हें कोई ऐसी वस्तु देना चाहता है, जिसके सहारे तुम छोटी-छोटी विपत्तियों को ही नहीं, बड़ी-बड़ी विपत्तियों और दुःखों पर भी विजय प्राप्त कर सकते हो।

निरन्तर 'श्रीकृष्ण शरण मम' कहते रहो। यह एक ऐसी तरी है, जो तुम्हें उत्ताल तरंगों से युक्त महसागर के उस पार लगा देगी।

हे मेरे मन, तुम मेरी बात को सुनो और मानो। श्रीकृष्ण को छोड़कर ऐसा कोई नहीं है, जो सभी प्रकार के विकारों और दोषों से मुक्त हो। अतः तुम अपने को उन्हीं में रमा दो।

चारों ओर लोभ के ही दैत्य दिखाई पड़ रहे हैं, और चारों ओर पाखण्डों की ही सत्ता है। ऐसी स्थिति में श्रीकृष्ण ही मेरी गति है, मेरी मति हैं। उन्हें छोड़कर कौन ऐसा है, जो लोभ और पाखण्डों के दैत्यों से मेरी रक्षा कर सकता है।

चारों और भ्रष्टाचार है, चारों और भय और द्रोह है। ऐसी स्थिति में श्रीकृष्ण ही मेरी गति और मति है। उन्हें छोड़कर कोई ऐसा नहीं है, जो मुझे भ्रष्टाचार और द्रोह की आग में जलने से बचा सके।

सत्कर्मों और विवेक का प्रवाह मन्द पड़ता जा रहा है, नैतिकता क्षीण होती जा रही है और नास्तिकता बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्रीकृष्ण ही मेरी गति हैं, मेरी मति हैं। उन्हें छोड़कर कोई ऐसा नहीं है, जो नास्तिकता के आघातों से मेरी रक्षा कर सके।

मेरे चारों और पाप ही पाप है, अधर्म ही अधर्म है। पापों और अधर्मों की दुर्गन्ध के कारण भली प्रकार सांस भी लेते नहीं बनती। ऐसी स्थिति में श्रीकृष्ण ही मेरी गति हैं। उन्हें छोड़कर कोई ऐसा नहीं है, जो मुझे पापों की ज्वाला में जलने से बचा सके।

यदि तुम श्रीकृष्ण को माता-पिता, गुरु, स्वामी, सखा और भाई मान कर सच्चे मन से उनकी सेवा करोगे, तो वे तुम्हारे दुःखों को दूर करने के लिये उसी प्रकार प्रयत्न करेंगे, जिस प्रकार तुम्हारे बन्धु-बांधव करते हैं।

श्रीकृष्ण की सेवा ही सब से बड़ा धर्म है। सब से बड़ा धर्म इसलिये है कि श्रीकृष्ण की सेवा मन के भीतर सर्वात्म भाव को जगाती है और भेद की भिन्नताओं को नष्ट कर देते हैं।

यदि तुम श्रीकृष्ण की शरण में जाना चाहते हो, तो अपने मन से ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, और छोटे बड़े के भेद को मिटा दो। सच मानों, जब तुम भेदों से अपने को मुक्त कर लोगे, तो श्रीकृष्ण अपनी भुजाओं को फैला कर तुमसे मिलेगें और तुम्हें अपने हृदय से लगा लेंगें।

दूसरों के दुःखों को दूर करना ही सच्ची श्रीकृष्ण सेवा है। अतः तुम से जहाँ तक हो सके, दूसरों का दुःख दूर करो। तुम्हारा दुःख तो स्वयं श्रीकृष्ण दूर करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री रामानन्दाचार्य

जो लोग अपने मन में परमात्मा के प्रति अनुराग रखते हैं, वे चाहे किसी भी जाति और सम्प्रदाय के क्यों न हों, परमात्मा की शरण के अधिकारी होते हैं और श्रद्धेय होते हैं।

परमात्मा की शरण के लिये न तो तीव्र बुद्धि की आवश्यकता है, न बल की, न वंश की श्रेष्ठता की आवश्यकता है और न विद्वत्ता की। किसी भी स्थिति और किसी भी कुल का मनुष्य दीन बन कर परमात्मा की शरण में जा सकता है।

जिस प्रकार वृक्ष प्रत्येक पक्षी को आश्रय प्रदान करता है और जिस प्रकार सरिता का जल प्रत्येक तृषित की प्यास को बुझाता है, उसी प्रकार परमात्मा प्रत्येक मनुष्य को आश्रय प्रदान करते हैं। और प्रत्येक मनुष्य की तृषा को अपने प्रेम से बुझाते हैं।

जो लोग परमात्मा की सेवा में लगे रहते हैं, वे लोक संग्रही हों या न हों और हों तो कितना हो—इसके लिये वेदों में विधान है। सामान्य रूप में परमात्मा की सेवा करने वालों का, त्याग ही आभूषण है। परमात्मा का जो सेवी जितना ही अधिक त्याग करता है, वह उतना ही अधिक श्रेष्ठ होता है।

परमात्मा के अनन्य सेवी के लिये किसी और कर्म करने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि परमात्मा की सेवा में ही सभी प्रकार के पवित्र कर्मों का समावेष हो जाता है।

तुम चाहे कितना ही दान क्यों न करो, कितना ही तप क्यों न करो और कितने ही तीर्थों में परिभ्रमण क्यों न करो, पर अहिंसा से होनेवाले फल की बराबरी कोई नहीं करता। अतः तुम्हें प्राण-प्रण से अहिंसा धर्म का पालन करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम वैष्णव हो, तो तुम्हारा सबसे पहला कर्त्तव्य यही है कि सभी प्रकार की हिंसाओं को अपने मन से निकाल दो, क्योंकि हिंसा के रहते हुए वैष्णवता के पादप में फल-फूल नहीं लगते।

सच्चा वैष्णव वही है, जो दूसरों के दुःखों को दूर करता है और जो अपने को संकटों में डाल करके दूसरों के हित साधन में प्रवृत रहता है।

विवेकी और आत्मपरायण मनुष्य जितेन्द्रिय होते हैं और लोक-संग्रह में भी निष्काय बने रहते हैं।

चिन्ता की कोई बात नहीं, यदि तुम लोक-संग्रही हो। चिन्ता की बात तो यह है कि तुम केवल अपने उपभोग के लिये लोक-संग्रह में निरत हो।

तुम्हें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि जिस मनुष्य के लोक-संग्रह में सर्वात्मकता नहीं होती, उसका लोक संग्रह उसके लिये शान्ति और सुखदायक सिद्ध नहीं होता।

राम-नाम ही औषधियों में सर्वश्रेष्ठ औषधि है। यदि तुम राम-नाम रूपी महौषधि का सेवन करते हो, तो तुम्हें संसार का कोई भी रोग पीड़ा नहीं पहुँचा सकता। जिस प्रकार कवच शस्त्रों के आघात से शरीर की रक्षा करता है, उसी प्रकार भव के रोगों से राम-नाम ममुष्य को बचाता रहता है। तुम राम-नाम लेते हुए, वेद में निहित कर्मों को सच्चाई के साथ करते जाओ। फल देने वाला तो तैयार बैठा हुआ है। उसकी चिन्ता तुम्हें नहीं करनी चाहिये, बिल्कुल नहीं करनी चाहिये।

कभी भी किसी प्रभु प्रेमी का तिरस्कार मत करो। यद्यपि प्रभु दयालु हैं, विकारों से रहित हैं, किन्तु उनके लिये अपने प्रेमी का तिरस्कार असह्य होता है।

जो प्रभु तुम्हारे हृदय में स्थिति हैं, उन्हीं का ध्यान करो। किसी और का ध्यान मत करो। किसी और का ध्यान करोगे तो भटक जाओगे, भ्रान्ति के दल-दल में फँस जाओगे।

जो काल रूपी महा नाग के फणों पर नृत्य करते हैं, जो अपने तीन पगों से आकाश-पाताल और पृथ्वी को नाप लेते हैं और जो सारे ब्रह्माण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में समाविष्ट हैं, उन्हीं श्रीकृष्ण रूपी परमात्मा के चरणों में मन लगाओ। उनके चरणों में मन लगाने से ही तुम्हारी आशायें कल्पतरु बन सकती हैं।

कितना ही कहो, परमात्मा के अनन्त गुण कहने के लिये शेष ही रह जाते हैं। जिस प्रकार कोई पंगु ऊँचे पर्वत पर नहीं चढ़ सकता, उसी प्रकार यह बात मनुष्य की शक्ति के बाहर है कि वह परमात्मा के गुणों का कथन कर सके।

तुम चन्दनादि से जिस ब्रह्मरूपी परमात्मा की पूजा करना चाहते हो, वह तो तुम्हारे मन के भीतर है। अतः तुम उसे बाहर न खोज कर, अपने मन के ही भीतर खोजो।

परमात्मा को चन्दनादि की सुगन्ध नहीं चाहिये। वह तो केवल प्रेम और त्याग की सुगन्ध से ही रीझता है। अतः अपने मन में त्याग और प्रेम की ही सुगन्ध पैदा करो।

जिस प्रकार संसार के सभी पदार्थों में जल का अंश है और जिस प्रकार सर्वत्र वायु रहती है, उसी प्रकार परमात्मा सब में छिपा रहता है, और सर्वत्र रहता है।

मैंने वेदों और शास्त्रों का अध्ययन किया, पर मुझे किसी से भी बोध प्राप्त नहीं हुआ। मुझे बोध तो उस समय प्राप्त हुआ, जब दयालु होकर गुरु ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे उपदेशित किया।

यदि तुमने मानव जन्म लेकर सत्संग नहीं किया और परमात्मा में अपना मन नहीं लगाया, तो तुम्हारा पाण्डित्य प्राप्त करना व्यर्थ है। क्योंकि बिना सतसंग किये और प्रभु में मन लगाये तुम इसी प्रकार जन्म लेते रहोगे। जन्म-मरण के दुःखों से तुम्हारा छुटकारा नहीं होगा, नहीं होगा।

क्या तुम प्रभु के अनुरागी हो? यदि हाँ, तो छोटे-बड़े और ऊँच-नीच सबसे अनुराग करो। जो सबमें अपने अनुराग को स्थापित करता है, और सबका हित करता है, वही प्रभु का श्रेष्ठ अनुरागी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री रामानुजाचार्य

हे पूर्णकाम, हे सत्य संकल्प, हे गुणों के सागर, हे दया के सिंधु और हे छोटे-बड़े तथा नीच-ऊँच का विचार न करके, सब पर एक समान अनुकम्पा करने वाले विश्वपते, मैं आपकी शरण में हूँ।

जो दुखीजनों की पीड़ाओं को नष्ट कर देते हैं, जो वत्सलता की मूर्ति हैं और जो बिना किसी कारण के भी अनुकम्पा करते हैं, मैं उन्हीं परमात्मा के प्रेम और दया का याचक हूँ।

जो सम्पूर्ण जगत के एकमात्र आधार हैं, जो जड़-चेतन सभी पदार्थों के अवयवी हैं और जो कण-कण में समाविष्ट हैं, मुझे उन परमात्मा की दया को छोड़कर और कुछ नहीं चाहिये।

हे प्रभो, आपके जिन युगल चरणों ने अखिल ब्रह्माण्ड को आक्रान्त कर रखा है, मैं माता, पिता, स्त्री, पुत्र, धन-धान्य, मोक्ष और स्वर्ग—सब को छोड़कर उन्हीं चरणों की शरण में आया हूँ।

हे प्रभो, आप क्षमा के सागर हैं। अतः मैं अब तक करने योग्य और न करने योग्य जिन बुरे कर्मों को कर चुका हूँ और जिन्हें करने का मन में विचार रखता हूँ, उन समस्त कर्मों के लिये मुझे क्षमा कर दीजिये।

हे प्रभो, मैं आपके समक्ष विनत हूँ। मैं आत्मा, संसार और जीवन के प्रति विपरीत आचरण करता आ रहा हूँ। न जाने कितने विपरीत आचरण हुए हैं और न जाने अभी कितने होंगे, मैं अपने उन सभी विपरीत आचरणों के लिये आपसे क्षमा माँगता हूँ।

जो अनादि काल से मुझे अपने बंधनों में जकड़े हुए है, जो मेरे ज्ञान को विलुप्त कर लेती है, और जो वज्र शिला-सी मेरे मार्ग में पड़कर मुझे आपकी ओर जाने से रोक लेती है, मुझे उस माया से बचाइये। आपको छोड़कर किसी में भी शक्ति नहीं है, जो मुझे उससे बचा सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शास्त्र और वेद मुझे सहस्रों माता-पिता के समान प्यार करते हैं, क्योंकि वे मुझे उस परमात्मा और ब्रह्म के सम्बन्ध में ज्ञान कराते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का एक मात्र आधार है।

जब जगत अज्ञानता के अन्धकार से आच्छन्न हो जाता है, और जब जगत के सम्पूर्ण प्राणी दुःखों से व्याकुल हो उठते हैं, तो प्राणियों के दुःखों को दूर करने और अन्धकार को विनष्ट करने के लिये, स्वयं परमेश्वर सूर्य के रूप में उदय होते हैं।

क्या तुम ब्रह्मविद्या जानना चाहते हो? आराधनामयी भक्ति को छोड़कर ब्रह्मविद्या और कुछ नहीं है। अतः ब्रह्मविद्या के प्राप्ति के लिये आराधना करना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

मैं उस ब्रह्मविद्या को प्रणाम करता हूँ, जो मुझे ब्रह्म और सम्पूर्ण जगत का ज्ञान करा देती है। जानते हो, वह ब्रह्मविद्या कैसे मिलेगी? शरणागति से। हे अनन्त, हे सर्वव्यापक, मैं आपका सेवक बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे अपने दासत्व का वह पद दे दीजिये, जिसे पाने पर और कुछ पाने की अभिलाषा नहीं रहती। जिस प्रकार चातक स्वाति-नक्षत्र के जल के लिये रट लगाये रहता है, उसी प्रकार हे परमात्मन्, मैं आपकी दया के लिये रट लगाये रहता हूँ।

हे अगोचर, मुझे स्वर्ग न दीजिये, मुझे उच्चवर्ग न दीजिये। मुझे अपना प्रेम दीजिये। वह प्रेम दीजिये, जो आपके गुणों का गान करने के लिये व्याकुल बनाये रहता है। कोयल बसन्त का गुणगान करती है। मैं भी कोयल की भाँति ही आपके गुणों का गान करता हूँ, पर कोयल तो थक कर मौन हो जाती है। मैं चाहता हूँ परमात्मन्, आपके गुणों का गान करने से कभी न थकूँ। मेरी वाणी सदा आपके गुणों का गान करती रहे।

मानव का शरीर प्रकृति की सर्वोष्कृष्ठ कलाकृति है। उसकी कर्मेन्द्रियों में सभी प्रकार के कामों के करने की शक्ति है और उसकी ज्ञानेन्द्रियों में दृष्यमान जगत को जानने की शक्ति है। वह नश्वर होते हुए भी अद्भुत शक्तियों से सम्पन्न हैं।

मनुष्य की कामनायें दिन-दिन बढ़ती ही जाती हैं। अतृप्त होने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो कामनायें बढ़ती हैं। तृप्त होने पर भी बढ़ती हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह कामनाओं से ही खेलता रहता है। कहना चाहिये कि कामनायें ही मनुष्य का जीवन है।

मनुष्य अपने को शरीर मानकर दिन-रात कामनाओं से खेलता रहता है। और मोह-ममता की जंजीरों में बँधा रहता है। मनुष्य की यह अज्ञानता ही उसके समस्त दुःखों का कारण है।

यदि मनुष्य अप्राप्य की चिन्ता छोड़कर प्राप्त में ही संतोष कर ले तो उसके दुःखों का निराकरण ही नहीं हो सकता, उसे आनन्द भी प्राप्त हो सकता है।

जड़-पदार्थों के द्वारा जड़-पदार्थों का ही परीश्रण हो सकता है, चेतन का नहीं। विज्ञान कितना ही गतिशील क्यों न हो जाये, पर वह चेतन को छोड़ नहीं सकता क्योंकि उसके नत्र भौतिक पदार्थों की ही ओर देखते हैं।

परम तत्व आनन्दमय है, रस रूप है। उसका ज्ञान होने पर अपने आप ही दुःखों से निवृत हो जाती है। अतः मनुष्य को परम तत्व का ही ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये।

जगत मानवों का समूह है। रंग-रंग के मानव, तरह-तरह के प्रकृति के मानव और तरह-तरह के क्रिया-कलापों के मानव, पर मानव की इस अनेकता के मूल में एक बहुत बड़ी एकता है। और वह यह कि सबमें ब्रह्म है, सबमें चेतन की सत्ता है। तुम मनुष्य हो। तुम अपने को जगत से पृथक मत समझो। तुम जगत के अंग हो, तुम्हारे ही ऐसे कोटि-कोटि मनुष्यों से जगत का विस्तार हुआ है।

जगत को जानने के लिये उसका चिन्तन करो, पर उसमें अपने मन को मत रमाओ। मन को तो उसी परमात्मा में रमाओ, जिसमें जगत समायाहु आ है।

सबको जगत का अंग मानो। किसी के प्रति दुर्व्यव्यवहार मत करो। क्योंकि तुम जिसके साथ दुर्व्यव्यवहार कर रहे हो, वह कोई अन्य नहीं, तुम्हीं हो।

माया जड़ भी है, और चेतन भी है। जड़ माया को छोड़कर चेतन माया के साथ विहार करो। परमानन्द की प्राप्ति होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समर्थ गुरू रामदास

मन से दुःख को निकाल दो। शरीर के कष्टों को भूल कर आत्म-स्वरूप का चिन्तन करो। अपने आप ही आनन्द की वर्षा होगी।

मन, तू दिन-रात क्यों चिन्ताओं की तरंगों में डूबा रहता है। तू तो शरीर रहित है। फिर क्यों शरीर के सुखों और कष्टों में लिप्त रहता है। जब तक तू अपने स्वरूप को नहीं पहचानेगा, तुम्हारे भीतर आनन्द का संचार नहीं होगा।

एक की मृत्यु होती है, तो दूसरा शोकित होता है। कुछ दिनों पश्चात् वह दूसरा भी मृत्यु का ग्रास बन जाता है। जगत में शोक का क्रम कभी नहीं टूटता, क्योंकि जगत का दूसरा नाम ही है—शोकों और दुःखों का घर।

तू जनता में व्याख्यान देकर सोचता है कि उससे तुम्हारा कल्याण हो जाएगा? सच मानो, तुम्हारा कल्याण व्याख्यान देने से नहीं। अपने कल्याण को छोड़कर, सच्चे मन से जनता का कल्याण करने में होगा।

तुमने अपने शरीर की रक्षा के लिये तरह-तरह के प्रयत्न किये, पर क्या तुम्हारे शरीर की रक्षा हो सकी? प्रयत्न करने पर भी काल तुम्हारे शरीर को तूल की तरह उड़ा ले गया। अतः शरीर की रक्षा में मन न लगाकर हृदय को सुन्दर बनाने में मन लगाओ। हृदय सुन्दर रहेगा तो अपने आप ही शरीर की रक्षा होती रहेगी।

तुम्हें किसी मनुष्य के सामने गिड़गिड़ना छोड़ देना चाहिये। यदि गिड़गिड़ाना ही है, तो ईश्वर के सामने गिड़गिड़ाओ। क्योंकि ईश्वर की दया प्राप्त होने पर ही तुम्हें सर्व प्रकार के दुःखों से मुक्ति मिल सकती है।

जिस तरह तुम अपने लिये सुख माँगते हो, उसी तरह दूसरों के लिये भी सुख क्यों नहीं मागते? जब तक तुम अपनी ही भाँति दूसरों के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भी सुख नहीं माँगते, तब तक तुम दुःखी ही बने रहोगे।

जिस संगत से मन धर्म से विमुख हो जाता है, विकारों के कीचड़ में फँस जाता है और दम्भी बन जाता है, अज्ञानियों को छोड़ कर ऐसी संगति में रुचि किसी की भी नहीं होती।

अपने बुरे आचरणों में परिवर्तन करो, जो कहो, उसे करो और कल्पनाओं की हवा में न उड़ो। सुख और शान्ति का यही मार्ग है।

ईश्वर के प्रेम का अधिकारी कैसे बन सकते हो? सज्जनों की संगति करके समस्त प्राणियों की भलाई करके और बुरे कामों से दूर रह के, जब तक ऐसा नहीं करोगे, ईश्वर के प्रेम का पात्र नहीं बन सकोगे।

अहंभाव का परित्याग करो। अहंभाव के कारण बड़े-बड़ विद्वान भी राक्षस बन जाते हैं। जब तक मन में अहंभाव रहेगा ईश्वर की दया कदापि प्राप्त नहीं होगी।

जो मनुष्य सोच-विचार कर बोलता है, विवेक से कार्य करता है, उसकी संगति से अतृप्तों को भी तृप्ति प्राप्त होती है। अतः ऐसे ही मनुष्यों की संगति में उठना-बैठना और रहना चाहिये।

जो मनुष्य अधिक प्रलाप करता है। उसकी संगति छोड़ दो। प्रलापी के साथ रहने से तुम भी प्रलापी बन जाओगे। फिर तो तुम कोई भी काम सोच समझ-कर, स्थिर चित्त से न कर सकोगे।

आसक्ति को छोड़ दो, क्योंकि आसक्त ही दुःख का कारण है। जब तक मन में आसक्ति रहे भी, दुःख मिलता ही रहेगा।

जो मनुष्य स्वधर्म पालन में सदा तत्पर रहता है और जो दूसरों को अपना ही रूप समझ कर उनकी भलाइयों में संलग्न रहता है, उसे मनुष्य के रूप में देवता की बात गौरव प्राप्त होता है।

जब मैं बिल्कुल अज्ञान था, तो मैं मदोन्मत्त हाथी के समान मदान्ध हो रहा था। उस समय मैं ही सर्वज्ञ हूँ—यह सोचकर मेरा मन अभिमान में मग्न रहा करता था। पर जब मैं विद्वानों के सम्पर्क में पहुँचा और कुछ ज्ञान प्राप्त किया, तो यह सोचकर कि मैं कुछ नहीं जानता—मेरा गर्व चूर्ण हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिनमें न विद्या है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है, और न धर्म विवेक हैं, वे मनुष्य होते हुए भी पृथ्वी पर भार-स्वरूप पशु के समान हैं।

सत्संगति ही सबसे बड़ा धन है। जो मनुष्य सत्संग करता है, सत्संग ढूँढ़ता है, वह मानव जगत की अमूल्य सम्पदा को बटोरने का प्रयास करता है।

मैंने भोगों को नहीं भोगा, भोगों ने ही मुझे भोग लिया। मैंने तप नहीं किया, तप ही तप्त हो गये। काल व्यतीत नही हुआ; मैं ही व्यतीत हो गया। मेरी तृप्ति जीर्ण नहीं हुई, मैं ही जीर्ण हो गया।

जब तक शरीर स्वस्थ्य है, जब तक इन्द्रियों की शक्ति पूर्णरूप से बनी हुई है, बुद्धिमान मनुष्य को अपने कल्याण के लिये उपाय कर लेनी चाहिये।

भोगों में रोग का भय है—यह सोचकर जो मनुष्य भोगों से दूर रहता है, वह महान विवेकी है।

यदि तुम ऊँचे कुल में पैदा हुए हो, तो तुम्हें अपने मन में गर्व करना नहीं चाहिये, क्योंकि, नीच कुल में पैदा हुए मनुष्य की अपेक्षा पतन तुम्हारे अधिक निकट है।

तुम अधिक धनवान होने से गर्व का अनुभव कर रहे हो? तुम्हें जानना चाहिये कि अधिक धनवान होने ही के कारण शासन का भय तुम्हारे अधिक निकट है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास

आम का वृक्ष पत्थर मारने पर मधुर फल प्रदान करता है। इसी प्रकार सन्तजन कठोर वचन कहने पर भी आशीर्वाद ही देते हैं।

आम्र का वृक्ष अपने स्वादिष्ट फल को स्वयं नहीं खाता। दूसरों को ही खिलाकर के ही संतुष्ट करता है। इसी प्रकार साधु पुरुष दूसरों की भलाई करने के लिये ही संसार में जन्म धारण करता है।

जिस प्रकार नक्षत्र समूहों में चन्द्रमा, पक्षियों में हंस और पुष्पों में कमल सुसोभित होता है। उसी प्रकार साधु पुरुष मानव समाज म शोभा पाते हैं।

जिस प्रकार वर्षा की बूंदों की आघात को चुपचाप पर्वत सहन करते हैं, उसी प्रकार साधु पुरुष दुष्ट मनुष्यों के बाण के समान तीखे वचन को बड़े धैर्य के साथ सहन करते हैं।

जिस प्रकार करोड़ों घुंघुचियाँ एकसाथ मिलकर पर्वत की बराबरी नहीं कर सकतीं, उसी प्रकार अनेक पापों का समूह झूठ बोलने के पाप की बराबरी नहीं कर सकता।

जो मनुष्य अपने मित्र के दुःखों को देखकर दुःखी नहीं होता, उसके दर्शन मात्र से ही बहुत बड़ा पाप लगता है।

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री—उन चारों की सत्यता की परीक्षा विपत्ति के दिनों में ही होती है।

जो पुत्र, अपनी माता और अपने पिता की आज्ञा का अनुसरण करता है। और उसके अनुसार ही आचरण भी करता है, वह बिना प्रयास के ही भव-सिंधु को पार कर जाता है।

जो मनुष्य मधुर वचन बोलता है, उसके लिये चारों ओर सुख का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सागर लहराता रहता है। सभी मनुष्यों को वश में करने का एक ही मंत्र है—कठोर वचन बोलना छोड़ दो।

जो मनुष्य छोटे भाई की पत्नी, बहन और पुत्रबधू को बुरी दृष्टि से देखता है। उसका वध करने में पाप नहीं लगता।

जिस राजा के राज्य में प्रजा दुःखी रहती है, उसे नरक के दुःखों को भोगना पड़ता है।

जो मनुष्य बिना गुणों के आकाश के ऊपर चढ़ना चाहता है, उसका हाल उस पतंग के समान होता है, जो डोर से कटी हुई होती है।

जिस प्रकार बबूल के पेड़ को सींचने से उसमें आम के फल नहीं लग सकते, उसी प्रकार बुरे कर्मों को करने से शान्ति और सुख नहीं मिल सकते।

जो मनुष्य जैसा कर्म करता है। उसी के अनुसार उसको फल भी प्राप्त होते हैं। क्योंकि यह संसार कर्म प्रधान है।

नर्क में निवास करना अच्छा है, किन्तु परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दुष्टों की संगति से सदा दूर ही रखे, क्योंकि दुष्टों की संगति में रहने से जो दुःख प्राप्त होता है, वह नर्क के दुःखों से भी अधिक दुःखदायी होता है।

जिस प्रकार हाथों की तालियाँ बजाने से फसलों को खाने वाले पक्षी उड़ जाते हैं। उसी प्रकार राम का भजन करने से माया अर्थात् मनप्रपंच दूर हो जाता है।

किसी को छोटा नहीं समझना चाहिये। मंत्र बहुत ही छोटा होता है, पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों उसके वशीभूत होते हैं।

इस संसार की सदा से यही रीति रही है। जो भी प्रेम करता है, स्वार्थ के ही कारण करता है। बिना स्वार्थ के कोई किसी से प्रेम नहीं करता।

शरद ऋतु के बादल गर्जना-तर्जना करके ही रह जाते हैं, वृष्टि नहीं करते। इसी प्रकार कायर मनुष्य प्रलाप तो अधिक करते हैं—पर वीरता रंच मात्र भी नहीं दिखाते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्याध संत

ब्रह्मन् ! सत्पुरुषों द्वारा पालित धर्म के अनुसार बर्ताव करें, शिष्ट पुरुषों की भाँति श्रेष्ठ आचरण करे। दूसरे लोगों को क्लेश पहुँचाये बिना ही जिससे जीवन का निर्वाह हो जाय, ऐसी ही वृत्ति अपनाने की अभिलाषा करे।

मनुष्य का यह दोषयुक्त शरीर मानों एक रथ है, आत्मा इसका सारथी है, इन्द्रियों को अश्व कहते हैं। इन सबके द्वारा इन्द्रियरूपी श्रेष्ठ अश्वों को वश में करके सदा सावधान रहने वाले रथी की भाँति धीर पुरुष कुशली रहकर सुखसुर्वक यात्रा करता है।

पाप करने वाले के प्रति बदले में स्वयं पाप न करे--अपराधी से बदला न ले। सदा साधु स्वभाव से ही रहे। जो पापी किसी के प्रति अकारण पाप करना चाहता है, वह स्वयं ही नष्ट हो जाता है।

ब्राह्मण ! यज्ञ, तप, दान, वेदों का स्वाध्याय और सत्य भाषण—ये पाँच पवित्र आचरण शिष्ट पुरुषों में सदा रहते हैं। जो काम, क्रोध, लोभ, दम्भ और उदण्डता—इन दुर्गणों को जीत लेते हैं, तथा इसी को धर्म मानकर संतुष्ट रहते हैं, वे ही शिष्ट—उत्तम कहलाते हैं और उनका ही शिष्ट पुरुष आदर करते हैं। वे सदा ही यज्ञ और स्वाध्याय में लगे रहते हैं, कभी मनमाना आचरण नहीं करते। सदाचार का निरन्तर पालन करना—शिष्ट पुरुषों का दूसरा लक्षण है। शिष्टाचारी पुरुषों में गुरु की सेवा, क्रोध का अभाव, सत्यभाषण और दान—ये चार सद्गुण अवश्य होते हैं। वेद का सार है सत्य, सत्य का सार है इन्द्रिय—संयम और इन्द्रिय—संयम का सार है—त्याग। यह त्याग शिष्ट पुरुषों में सदा विद्यमान रहता है।

जो कार्य न्याययुक्त होता है, वही धर्म माना गया है। अनाचार का नाम ही अधर्म है—यह शिष्ट पुरुषों का उपदेश है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो आस्तिक, मानहीन, द्विजों का सम्मान करने वाले, शास्त्रज्ञान और सदाचार से सम्पन्न हैं, ऐसे सत्पुरुष स्वर्गलोक के निवासी होते हैं।

सोने और चाँदी के आभूषणों की उत्कंठा क्यों करते हो? यदि आभूषण धारण करने ही हैं, तो सत्य का आभूषण धारण करो? सत्य का आभूषण धारण करने से शरीर और आत्मा दोनों की शोभा बनेगी।

मनुष्य को ऐसा काम करना चाहिये जिससे उसका कल्याण तो हो ही, दूसरों का भी कल्याण हो। जो लोग दूसरों के कल्याण को दृष्टि में रखकर अपना कल्याण करते हैं वे पूज्यनीय होते हैं। पूजा भगवान की न करो, तो कोई हानि नहीं है, पर यदि सत्य और धर्म की पूजा न करोगे तो अपने को ही नहीं, दूसरों को भी हानि पहुँचाओगे। यदि कोई झूठ बोलकर तुम्हें दुःख देता है तो उसके उत्तर में तुम्हें कदापि झूठ नहीं बोलना चाहिये। तुम असत्यवादी मनुष्य को असत्य से नहीं सत्य से ही पराजित कर सकते हो। यदि कभी कोई बुरा काम हो जाय, तो उसे छिपाने के लिये दूसरा बुरा काम कदापि नहीं करना चाहिये। बुरा काम करने से बुरा काम नहीं छिपता। बुरा काम छिपता है सतकार्य करने से, बुराई प्रकट करने से।

सब प्रकार के उपायों से लोभ और क्रोध का दमन करना चाहिये। संसार में यही लोगों को पावन करने वाला तप है और यही भवसागर से पार उतारनेवाला पुल है। सदा-सर्वदा तप और क्रोध से, धर्म को डाह से, विद्या को मानापमान से और अपने को प्रमाद से बचाना चाहिये। क्रूरता का अभाव (दया) पराधर्म है, क्षमा ही सबसे बड़ा बल है, सत्य का व्रत ही सबसे उत्तम व्रत है और आत्मा का ज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है। सत्यभाषण सदा कल्याणमय है, सत्य में ही ज्ञान निहित है; जिससे प्राणियों का अत्यन्त कल्याण हो, वही सबसे बढ़कर सत्य माना गया है। जिसके सारे कर्म कभी कामनाओं से बँधे नहीं होते, जिसने अपना सब कुछ त्याग की अग्नि में होम दिया है, वही त्यागी है और वही बुद्धिमान है।

साधुश्रेष्ठ! जो पुरुष जैसा भी शुभ या अशुभ कर्म करता है, अवश्य ही उसका फल भोगता है—इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

झूठ बोलना छोड़ दे। बिना कहे ही दूसरों का प्रिय करे तथा न कामना से, न क्रोध से और न द्वेष से ही धर्म का त्याग करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संत फरीद

अल्लाह या भगवान से प्रीति जोड़ लो। यह शरीर, जिसके लिए छल कर रहे हो, द्रोह कर रहे हो, हिंसा कर रहे हो, खाक में मिल जायेगा। इसका घर वह कब्र है, जहाँ मिट्टी ही मिट्टी है।

सच बोलो, झूठ कभी मत बोलो, जो तुम्हें मुक्के से मारता है। उसे बदले में मारो नहीं प्यार दो। उसके चरणों की धूलि लेकर चुपचाप अपने घर चले जाओ।

ऐसे विरले ही हैं, जो दरवेश के मार्ग पर चलते हैं। एक भी अप्रिय बात मत बोलो, क्योंकि परमात्मा हर एक मनुष्य के भीतर रहता है।

धूल का भी अपमान मत करो। धूल के समान महत्त्वपूर्ण चीज दूसरी कोई नहीं है। जब तक शरीर में प्राण रहता है, धूल चरण के नीचे रहती है। पर, जब प्राण निकल जाता है, तो शरीर के ऊपर आकर कवच की तरह उसकी रक्षा करती है।

दूसरों के दोष देखने में आप जितना समय लगाते हैं उतना अपने दोष सुधारने में लगाइये। आप आपना चरित्र सुधारेंगे, अपना आचरण पवित्र बनायेंगे तो संसार आप ही सुधर जायेगा।·····आप स्वयं पवित्र बनने के उद्योग में लगिये, यही कर्म का रहस्य है।

प्रत्येक मनुष्य के भाव विभिन्नता है। मनुष्य जन्म भावों की विभिन्नता में ही होता है। मनुष्य भाव की विभिन्नता का कभी भी अतिक्रमण नहीं कर पाता है। समस्त संसार किसी समय एक धर्मावलम्बी नहीं हो सकता। इसका कारण भावों की विभिन्नता है। ईश्वर करे, जगत कभी भी एक धर्मावलम्बी न हो। यदि कभी ऐसा हो जाय तो संसार का सामंजस्य नष्ट होकर विशृङ्खलता आ जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तिरुवल्लुवर

जिस प्रकार अक्षरों में 'अ' है, उसी प्रकार संसार में भगवान हैं। 'अ' की भाति ही समस्त प्राणियों के भीतर भगवान विद्यमान हैं।

यदि विद्वान का मस्तक भगवान के चरण कमलों पर नहीं झुकता, तो उसकी विद्या को व्यर्थ ही समझना चाहिये, क्योंकि विद्या का अर्थ है, पूर्ण को जानकर उसके प्रति प्रेम प्रगट करना।

जो भगवान का भक्त सम्पूर्ण प्राणियों को अपने हृदय में देखकर उनसे प्रेम करता है, उसे सहज में ही भगवान के लोक की प्राप्ति हो जाती है।

जो मनुष्य इच्छाओं और संदेहों से रहित होकर ईश्वर के चरणों में मन लगाता है, उसे संसार के दुःख कभी भी ग्रसित नहीं करते।

जो मनुष्य व्यर्थ के वाद-विवादों में न लग कर कीर्तन करते या सुनते हैं. वे उन्हें पाप और बुरे विचारों से पैदा होने वाले दुःखों को भोगना नहीं पड़ता।

जो लोग दृढ़तापूर्वक सत्य के पथ पर चलते हैं और प्रेम भरा आचरण करते हैं, वे ही इस नश्वर जगत में अमर पद के भागी बनते हैं।

यदि मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति पाना चाहते हो, तो परमात्मा के गुणों का गान करो। परमात्मा के गुणों का गान किये बिना चिन्ताओं से मुक्ति पाना कठिन है।

संसार रूपी सागर को पार करने के लिये एक ही उपाय है। वह यह कि अतिवांणी में करुणा सागर भगवान को पुकारते हुये अपने आप को उनके चरणों पर डाल दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो मस्तक भगवान के चरणों में नहीं झुकता, वह प्राण शून्य पत्थर की तरह व्यर्थ है।

जन्म और मृत्यु के बंधनों से छूटने का एक ही मार्ग है । वह यह कि सम्पूर्ण आडम्बरों को छोड़कर भगवान के चरणों पर आँसू बहाओ।

दुःखी मत हो। दयासिन्धु भगवान तुम्हारी सहायता करने के लिये तुम्हारे सामने खड़े हैं। उन्हें पुकार कर देखो, तो।

तुम व्यर्थ ही पूजा के लिये सामग्री खोज रहे हो। तुम्हारे पास अमूल्य सामग्री है—आंसू। अपने आंसूओं से भगवान के चरणों को क्यों नहीं भिगो देते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहीम

उत्तम प्रकृति के लोगों पर कुसंग का प्रभाव उसी प्रकार नहीं पड़ता, जिस प्रकार चन्दन के वृक्ष पर सर्प के लिपटे रहने पर भी उसके विष का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता।

बड़े मनुष्यों को देखकर छोटों को भूल नहीं जाना चाहिये। क्योंकि अनेक ऐसे काम हैं, जो छोटे मनुष्यों के द्वारा ही होते हैं। सुई—तलवार से बहुत छोटी होती है, पर उसके द्वारा जो कार्य होते हैं, वे तलवार से कैसे पूरे किये जा सकते हैं।

कड़ुवे खीरे के मुख को काट कर उस पर नमक मला जाता है। जो लोग मुख से कठोर वचन बोलते हैं, उन्हें इसी तरह की सजा दी जानी चाहिये।

यदि पुरुषार्थ से धन मिलता होता, तो महान पुरुषार्थी और बली भीम राजा बिराट के घर में रसोई बनाने का काम क्यों करता? धन पुरुषार्थ से नहीं, भाग्य से ही मिलता है।

अपने मन को ईश्वर का ऐसा प्रेमी बना लो कि वह दिन रात उसी प्रकार ईश्वर की ओर देखता रहे, जिस प्रकार चकोर चन्द्रमा की ओर देखता है।

मनुष्य बड़ा अज्ञानी है। वह दिन-रात धन, स्त्री, और पुत्रों के मोह में फंसा रहता है। परमात्मा रूपी उस मित्र का कभी ध्यान तक नहीं करता, जो विपत्ति के दिनों में काम आता है।

जिस प्रकार छोटे से पात्र में अधिक अनाज नहीं भरता, उसी प्रकार ओछे मनुष्यों के पेट में बड़ी बात नहीं पचती।

बड़े से बड़े मनुष्यों की भी मर्यादा किसी के सामने हाथ फैलाने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसी प्रकार घट जाती है, जिस प्रकार बलि के द्वार पर याचक बनने पर भगवान विष्णु का शरीर भी वावन अंगुल का हो गया था।

यदि मनुष्य आदर से अपने घर पर बुला कर देता है, तो चने की रोटी भी अच्छी है, किंतु घी की चुपड़ी हुई वह रोटी बिल्कुल अच्छी नहीं होती; जिसे परोसते हुये मनुष्य नाक-भौं सिकोड़ता है।

अच्छे विचारों के मनुष्य ऊँचे पदों पर पहुँचने पर उसी प्रकार गर्व करते, जिस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी का भार धारण करने पर भी शेष भगवान अपने को शेष ही कहते हैं।

ऐसी दिखावटी प्रीति मत करो, जिस प्रकार खीरा करता है खीरा तो ऊपर से मिला हुआ दिखाई पड़ता है, किन्तु उसके भीतर कई फांके होती हैं।

वंश और धन को देख करके ही लोग आपस में एक दूसरे का आदर करते हैं। जिसके पास कुछ नहीं रहता उस गरीब की ओर तो दीनबन्धु ईश्वर को छोड़कर और कोई नहीं देखता।

मनुष्य की और पानी के नल की एक ही स्थिति होती है। जिस प्रकार पानी का नल जितनी ही निचाई पर होता है, उसका पानी उतनी ही अधिक ऊँचाई पर चढ़ता है। इसी प्रकार मनुष्य में जितनी अधिक नम्रता होती है, वह उतने ही अधिक ऊँचे पद पर पहुँचता है।

दुष्ट मनुष्यों के साथ रहने पर किसका महत्व नहीं घट जाता? रावण के पड़ोस में बसने पर ही समुद्र की भी महिमा घट गई थी। भगवान राम ने उस पर पुल बनाकर उसे सीमित कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गोरखनाथ

सहसा बिना समझे हुये बोलना नहीं, चाहिये जो लोग बिना सोच-विचार किये हुये झटपट बोलते हैं, उन्हें अन्त में पछताना ही पड़ता है।

पाँव पटक कर नहीं चलना चाहिये। जो लोग ऐसा करते हैं, वे मूर्ख समझे जाते हैं। क्यों कि पाँव पटक कर चलना भी मूर्खों का एक लक्ष्ण है।

गर्व नहीं करना चाहिये कि मनुष्य जिस वस्तु पर गर्व करता है, वह उसके पास सदा नहीं रहती। नश्वर वस्तु पर गर्व करना अज्ञानता का सब से बड़ा चिह्न है।

दुःख हो या सुख—प्रत्येक स्थिति में स्वाभाविक ढंग से ही रहना चाहिये। जो लोग ऐसा करते है, वे जीवन में चिन्ताओं से बचे रहते हैं।

अर्न्तमुखी बनने का प्रयत्न करना चाहिये अर्न्तमुखी बनने का अर्थ है, सोच-समझ कर कार्य करना। जीवन में सुख का वही रास्ता है।

अपने पास के रत्न कोष को खोल कर दिखा सकते हो पर साधन के उस भेद को कभी प्रगट मत करो, जिससे तुम परमात्मा के निकट पहुँचे हो, क्योंकि साधनों का भेद प्रदर्शन के लिये नहीं होता, मन में छिपा कर रखने के लिये होता है।

यदि सब के प्रिय बनना चाहते हो, तो मीठी वाणी बोलो मीठी वाणी वशीकरण के मंत्र के सदृस्य होती है। मित्रों की तो बात ही क्या शत्रुओं का मन भी तुम्हारी मुट्टी में रहेगा।

यदि जीवन में सुख और शान्ति चाहते हो, तो द्रष्टा की भाँति रहना सीखो। नेत्रों से देखो, कानों से सुनो, किन्तु बोलो कुछ नहीं। यदि बोलने की आवश्यकता ही पड़े, तो सोंच समझ कर बोलो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हठ पूर्वक वाद-विवाद मत करो । वाद-विवाद से मन की शान्ति भंग हो जाती है, और दुःख उठाना पड़ता है ।

यह संसार दुःख रूपी काँटों के वन के समान है। अतः सोच समझ कर चलो और पैर उठाओ । जो जोग ऐसा नहीं करते, उन्हें दुःखों में फंसना पड़ता है ।

वन में जाता हूँ, तो भूख व्याकुल करती है, नगर में जाता हूँ, तो माया ग्रसित करती है और पेट भर कर खाता हूँ, नींद लगती है। पंच तत्वों से बने हुए इस शरीर को कैसे स्थिर रखा जाय यही एक बहुत बड़ा प्रश्न है ।

न तो अधिक भोजन करो, न अधिक कम करो क्योंकि दोनों दशाओं में रोग की उत्पत्ति होती है । कल्याणकारी मार्ग यही है कि मन को संयम की डोरी में कसो, संयमित जीवन व्यतीत करो ।

हँसने, बोलने और खाने के समय भी मन को संयमित रखो । ऐसा करने से ही तुम्हें उस ब्रह्म का साचर्य प्राप्त होगा, जो आनन्दमय है ।

जो मनुष्य इन्द्रियों को अपने वश में रखता है और अपने मन को ब्रह्म में स्थिति किये रहता है, मनुष्य ही नहीं, देवता भी उसकी प्रशंसा करते हैं ।

जो मनुष्य धन की आकांक्षाओं में लिप्त नहीं रहता, कामुकता से दूर रहता है और जिसके भीतर निरंतर ब्रह्म का नाद होता रहता है, स्वर्ग की देवियाँ भी उसकी सेवा करती हैं ।

संयम से जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य ही दृढ़ता से सतपथ पर चलता है ऐसे मनुष्य को देवता भी प्रणाम करते हैं ।

क्रोध के बदले क्रोध मत करो । ऐसा करने से शत्रुता घटती नहीं, बढ़ती है । यदि बैर भाव को शान्त करना चाहते हो, तो क्रोध के बदले प्रेम करना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रामकृष्ण परमहंस

ईश्वर एक है। संसार के सभी धर्म ईश्वर को ही आधार मान कर बने हैं। अत: सभी धर्मों का मूल श्रोत एक ही है।

स्त्री पुरुष का भेद केवल शरीर की दृष्टि से होता है। आत्मा की दृष्टि से न तो कोई स्त्री है, न कोई पुरुष है। स्त्रियां सब माँ हैं—केवल माँ।

जिस तरह एक ही चीनी से तरह-तरह के मिष्ठान बन जाते हैं, उसी प्रकार एक ही माँ की मधुर उपासना और आराधना सारे संसार में भिन्न रूपों में होती रहती है। आराधनाओं और उपासनाओं के ढंगों में अन्तर अवश्य होता है, पर उन में जो मिठस होती है, वह एक सी होती है, बिल्कुल समान होती है।

पहले साधन करना चाहिये। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है। अनन्य भक्ति और अनन्य प्रेम केवल साधना से ही प्राप्त होता है।

परमात्मा का दर्शन उसी मनुष्य को होता है जो पुणयत्मा होता है, जो सदा अच्छे कर्मों प्रवृत रहता है। जब किसी पुण्यात्मा मनुष्य को परमात्मा का दर्शन होता है, तो उसकी प्रवृति बालक के सदृश हो जाती है। उस समय उसे सारा संसार आनन्दमय और निराला दिखाई पड़ने लगता है।

ईश्वर चाहे अनन्त हो, चाहे अपरमित हो और चाहे असीम हो, उसकी इच्छा होने पर उसकी सार वस्तु मानव के सीमिम हृदय से आती है, आती-जाती रहती है,

ईश्वर अनन्त है। अनन्त ईश्वर जानना बहुत कठिन है, उसे जानने क। एक ही मार्ग है—भक्ति, केवल भक्ति। ईश्वर के चरणों में सिर सदा झुका रहे, उसकी याद मन में सदा बनी रहे—ईश्वर को जानने और पाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का इस से वढ़ कर सरल मार्ग कोई दूसरा नहीं है।

ईश्वर ही प्राप्य है, अतः संसार के किसी वस्तु को प्राप्त करने के पूर्व ईश्वर को ही पाने की चेष्टा करनी चाहिये। ईश्वर ही साध्य है, अतः संसार की किसी वस्तु को पाने की साधना करने के पूर्व ईश्वर की ही साधना करनी चाहिये।

जब तक मनुष्य को ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता, उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता कि परमात्मा भिन्न-भिन्न रूपों और भावों में अपने प्रेमी के लिये व्यक्त हुआ करते हैं। निसंदेह ईश्वर निराकर है, असीम है, पर वह अपने प्रेमी के लिये सीमा में बन्धता है, आकार धारण करता है।

धन्य वह नहीं है जिसके पास रुपया है, धन्य वह नहीं है जो ऊंचे पदों पर है। धन्य वह है, जिसका मन ईश्वर के गुणों से गुंजार रहता है। शूकर ही क्यों न हों, यदि वह ईश्वर प्रेमी है, तो वह अवश्य दुःख के बंधनों से छूट जायेगा।

मुझे सुख मिले या दुःख, मैं अपनी चिन्ता क्यों करू? मेरी दिन-रात चिन्ता करने वाला कोई और है, और वह है—परमात्मा।

जब तक तुम्हारा मन, धन में उलझा हुआ है, तुम्हें ईश्वर को पाने की आशा छोड़ देनी चाहिये। यदि ईश्वर को पाना चाहते हो तो उस धन को गंगा में फेंक दो। जो तुम्हारे मन को सदा उलझाये रहता है।

आकाश किसी देश का हो आकाश ही कहलाता है। पृथ्वी किसी देश की हो पृथ्वी ही कहलाती है। इसी प्रकार ईश्वर के प्रेमी और साधक को छोड़कर और कुछ नहीं कहलाते।

काली मेरी माँ है। वे जगत के आधार हैं, आधेय हैं। वे निमित्त हैं, उपादान हैं। उनका रंग काला नहीं है। वे परम मनोहर हैं परम सुन्दर हैं, मानव के लिये अगम हैं। उनका साक्षात्कार होने पर ही इस बात का पता चलता है कि उन्हें छोड़कर सगुण और निर्गुण ब्रह्म दूसरा नहीं है।

जिस प्रकार शरीर का पोषण भोज्य पदार्थों से होता है, उसी प्रकार शरीर में निवास करने वाली आत्मा का पोषणा ईश्वर के प्रेम और नाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से होता है। जिस प्रकार भोजन मिलने पर शरीर निर्बल और तेजहीन हो जाता है, उसी प्रकार ईश्वर के प्रेम के बिना आत्मा भी निर्बल और तेज हीन हो जाती है।

जब तक तुम्हारे मन में कामनाओं का सागर उमड़ रहा है, तब तक तुम्हें ईश्वर के दर्शन की आशा छोड़ देनी चाहिये। ईश्वर के दर्शन के लिये यह आवश्यक है कि अपने मन को कामनाओं के जाल से बाहर निकालो।

ईश्वर सभी प्राणियों में निवास करता है। उसके लिये न कोई छूत है, न कोई अछूत है। न कोई निर्धन है, न कोई धनी, पर संसार के सभी प्राणी यह नहीं समझते कि, वे ईश्वर में है। उनके दुःखों का कारण उनका यही अज्ञान है।

फूलों और फलों से लदी हुई वृक्षों की डालियाँ सदा झुकी रहती हैं। यदि महान बनने की अभिलाषा मन में रखते हो, तो वृक्षों की डालियों की तरह नम्र और विनीत बनना परमावश्यक है।

पवित्र आत्मा की परिभाषा लोग तरह-तरह से करते हैं, पर वास्तव में पवित्र आत्मा उसी को समझना चाहिये, जो कामिनी और कांचन के मोह जाल में नहीं फँसता।

मन एक हाथी के सदृश्य है। जिस प्रकार हाथी को बस में रखने के लिये अंकुश की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन को बस में करने के लिये संयम का होना परमावश्य है। सभी प्राणियों से प्रेम करो। ईश्वर का प्रेम अपने आप ही प्राप्त हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चैतन्य महाप्रभु

भगवान के अनेक नाम हैं। उनके सभी नाम अनन्त शक्तियों से परिपूर्ण हैं। जो मनुष्य भगवान के नाम को महाशक्तिमान समझकर भजता है, उसके सभी पाप और ताप भस्म हो जाते हैं।

जो मनुष्य अपने को तिनके के समान तुच्छ मानकर दूसरों को आदर देता है और सबमें भगवान को देखता है, वह महान् ही नहीं, अति महान् है।

हे प्रभो, मुझे धन नहीं चाहिये; मुझे पद नहीं चाहिये। मुझे चाहिये आपके चरणों की भक्ति। प्रत्येक जन्म में मेरे मन में आपके चरणों की भक्ति माँगने का विवेक बना रहे—आपसे मेरी यही याचना है।

हे नन्दनन्दन, वह क्षण कब आयेगा, जब आपके नाम-स्मरण मात्र से मेरी आँखें गंगोत्री बनेंगी। जिस प्रकार गंगोत्री से गंगा की धारा निकलती है, उसी प्रकार आपका नाम लेने पर मेरी आँखों से अश्रुधारा कब प्रवाहित होगी।

मेरा मन उपनिषदों के ज्ञान से न तो द्रवित होता है, और न तृप्त होता है। द्रवित और तृप्त होता है, केवल श्रीं कृष्ण के नाम से। प्रेम भक्ति से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विवेकानन्द

आस्तिक बुद्धि प्रत्येक मनुष्य में होती है, किन्तु कोई तो उसे समझता है और कोई उसे नहीं समझता। जो उसे समझता है, वह सत् आचरण करता है और जो उसे नहीं समझता वह असत् आचरण करता है संसार में सत् और असत् आचरण के चिन्ह इसी कारण बनते हैं।

जो चेतन एक शरीर में रहता है, वही सम्पूर्ण जीवों में निवास करता है। वह जन्म और मरण से रहित होता है। जो मनुष्य अपने शरीर में रहने वाले उस चेतन को समझकर जीवन के पथ पर चलता है, वह सदा सुखी रहता है। उसका कोई शत्रु नहीं होता। वह सबको प्रिय होता है, अति प्रिय होता है।

एक शरीर में रहने वाले चेतन को जीवात्मा और सम्पूर्ण जगत के प्राणियों में रहने वाले चेतन को परमात्मा कहते हैं। दोनों ही अच्युत है, दोनों ही अविनाशी हैं। मनुष्य का जन्म इन दोनों को जानने और समझने के लिये ही होता है।

हिन्दू धर्म की उत्पत्ति वेदों से हुई है। वेद अनादि हैं, अनन्त हैं और अपौरुषेय हैं। अतः हिन्दू धर्म भी अनादि है, अनन्त है, अपौरुषेय है।

ग्रन्थों का आदि और अन्त होता है, पर वेदों का आदि और अन्त नहीं है, क्योंकि वेद कोई ग्रन्थ नहीं है, वेद तो हैं आकाट्य सिद्धान्तों के संग्रह। जिन्होंने उन सिद्धान्तों की खोज की है, उन्हीं को हम ऋषि कहते हैं, महर्षि कहते हैं।

संसार में जितने प्राणी हैं, वे सभी काल रूपी शार्दूल से भयभीत रहते हैं। वेदों का कथन है—कालरूपी शार्दूल के भय से मुक्ति पाने का एक ही उपाय है और वह यह कि अपने आपको समझो, अपने आपको समझकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आचरण करो।

क्या तुमने कभी इस बात पर विचार किया है कि अग्नि को कौन जलाता है, पवन को कौन गति देता है और बादलों से पानी कौन बरसाता है? हो सकता है, इन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान कुछ और दे, पर मैं तो यही कहूँगा कि वह परमात्मा है, परमात्मा। अपने आपको उसी परमात्मा को समर्पित कर दो। तुम्हारे जीवन में अमृत की वृष्टि होगी, अवश्य वृष्टि होगी।

यदि तुम जीवन में सुख और शान्ति चाहते हो, तो प्रतिदिन सायं-प्रातः परमात्मा को पुकारकर कहा करो—हे परमात्मन्, तुम्हीं मेरे पिता हो, तुम्हीं मेरी माँ हो, तुम्हीं मेरे भाई हो, तुम्हीं मेरे मित्र हो और तुम्हीं मेरे गुरु तथा सर्वस्व हो। मुझे विपत्तियों से बचाओ। मैं तुम्हारी शरण में हूँ।

जिस प्रकार कमल-पत्र जल में रहने पर भी, जल से आलिप्त रहता है, उसी प्रकार मनुष्य को अपने कर्मों के फल से अलिप्त रहना चाहिये। जो मनुष्य कर्मों की फल की आकांक्षा किये बिना कर्मों में संलग्न रहता है, उसे कभी भी किसी प्रकार का दुःख नहीं होता। वह दुःख में भी सुख का अनुभव करता है, बहुत बड़े सुख का अनुभव।

प्रत्येक मनुष्य मुक्ति की कामना रखता है। पर बहुत कम लोग जानते हैं कि मुक्ति क्या है? मुक्ति है, जड़ और चेतन के भेद को समझ लेना, दुःख और सुख को समझना, पर यह अमूल्य ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है? विश्व के प्राणियों में अपने को मिला देने से।

दुःखों और सुखों के बंधन ईश्वर की कृपा के बिना टूट नहीं सकती। अतः ईश्वर की कृपा को पाने का प्रयत्न करो। मैं सब कुछ जानता हूँ—ईश्वर की कृपा इससे नहीं मिल सकती। मैं कुछ नहीं जानता—ईश्वर की कृपा को पाने का यही मार्ग है।

ईश्वर न केवल वनों में रहता है और न केवल मन्दिरों में। वह तो जन-जन में निवास करता है। तुम अपने चित्त को निर्मल और शुद्ध बना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लो, तो घट घट में बसने वाला परमात्मा तुम्हें तुम्हारे मन के भीतर ही दिखाई पड़ने लगेगा।

प्रश्न किया जा सकता है कि अन्तःकरण को निर्मल और विशुद्ध बनाने का क्या उपाय है? वेदों का कथन है—इन्द्रियों को संयमित करो। अन्तःकरण दर्पण की तरह स्वच्छ बन जाएगा।

कल्पना और शब्दाडम्बर से काम नहीं चलेगा। जिस प्रकार एक श्रमिक पत्थरों को तोड़ता है, और रक्त तथा पसीने को एक कर देता है, उसी प्रकार तुम्हें भी इन्द्रियों को संयमित बनाने में श्रम करना पड़ेगा। क्योंकि इन्द्रियाँ बड़ी सबल हैं, उन्हें पराभूत करना, सरल काम नहीं।

ईश्वर है—इस बात में दृढ़ विश्वास रखो। तुम्हारे मन का विश्वास ही तुम्हें ईश्वर के निकट पहुँचा देगा, क्योंकि ईश्वर के पास पहुँचने का सुन्दर और सफल साधन विश्वास को छोड़कर और कुछ नहीं है।

ईश्वर को प्राप्त करने के लिये तुम्हें किसी को मध्यस्त नहीं बनाना है, क्योंकि तुम्हारे और ईश्वर में कोई पृथकता नहीं है। ईश्वर को जानने या पाने की व्याकुलता को तीव्र बनाओ। ईश्वर तुम्हें तुम्हारे सामने ही दिखाई पड़ेगा।

अन्ध-भक्त मत बनो। जो कुछ कहते हो, उसे करो और जिसका अनुभव करते हो उसे देखो, पर करने और देखने के लिये पौरुष तो करना ही पड़ेगा। जितना ही अधिक पौरुष करोगे, उतनी ही अधिक सफलता भी प्राप्त होगी।

ईश्वर न तो आकाश में है और न सागर तथा पाताल में है। वह तो तुम्हारे अन्तःकरण में ही है। प्रयत्न करो, ईश्वर तुम्हें बहुत शीघ्र प्राप्त हो जाएगा, क्योंकि वह तुमसे दूर नहीं, तुम्हारे बहुत निकट है।

मूर्तियाँ ईश्वर नहीं होतीं, पर ईश्वर के गुणों की समष्टि अवश्य होती हैं। जब हम मूर्तियों के समक्ष बैठकर ईश्वर का ध्यान करते हैं, तो हमारा मन मूर्तियों के रूप में ईश्वर के गुणों में अटक जाता है और हम ईश्वर के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुणों का चिन्तन करने लगते हैं। ईश्वर के गुणों का चिन्तन करना ही ईश्वर की सच्ची उपासना है।

ईश्वर के गुणों का भी केवल कथन करने से कुछ न होगा। होगा, गुणों के साँचे में अपने जीवन को ढालने से गुणों के कथन और चिन्तन का यही उद्देश्य भी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वामी रामतीर्थ

मैं अपने पास रुपया-पैसा नहीं रखता। मेरे शरीर पर जो कुछ है वही मेरा समान है और मेरे सामने जो व्यक्ति है वही मेरा सबसे अधिक परिचित और प्रेमी है।

मैं ही भारतवर्ष हूँ, मैं ही भारत हूँ। यह भारत-भूमि ही मेरा शरीर है। कुमारीअन्तरीप मेरा चरण है। हिमालय मेरा मुकुट है। कटिलट में कोपीन की तरह विन्ध्याचल की मेखला है। पूर्वी और पश्चिमी घाट मेरी दो भुजायें हैं। जब मैं चलता हूँ तो अनुभव करता हूँ कि सारा भारत ही चल रहा है। बोलता हूँ तो ऐसा लगता है कि सारा भारत ही बोल रहा है। मैं भारत हूँ, शिव हूँ, शंकर हूँ। यही देश-भक्ति की सबसे ऊँची भूमिका है।

सत्य की प्राप्ति के लिये, धर्म के रास्ते पर चलने के लिये सारे अनुराग त्याग दीजिये। सांसारिक कामनाओं और आसक्तियों से ऊपर उठिये। यदि लौकिक आसक्तियों और स्वार्थमयी इच्छाओं से अपने को स्वतंत्र-मुक्त कर लीजिये तो फिर सत्य-प्राप्ति की बात ही क्या? स्वयं इसी क्षण सत्य हैं।

इस क्षुद्र अहं को अनन्त सागर में डुबो दीजिये और प्रभू-प्रसाद से, जीवन, प्रकाश और प्रेम में सच्चिदानन्द से एकता के अनुभव में जाग उठेंगे। तत्क्षण ही आपके भीतर से सुखदायक और वीरता पूर्ण कार्यों के रूप में परम कल्याणमय प्रवाह फूट निकलेगा यही विद्या है; यही पुण्य है। यही ईश्वर प्रेरित जीवन और यही है जन्मसिद्ध अधिकार।

परमेश्वर की दृष्टि में सब समान हैं; परमेश्वर ने सबको बनाया है। यदि हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो हमें प्राणी मात्र से प्रेम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करना चाहिये।

अपने सत्वरूप, अपने ईश्वरत्व में स्थिर रहिये। दूसरों की निंदा तथा दूसरों पर दोषारोपण करने वालों पर दया कीजिये।

अपने को अपमानित और पददलित कभी मत कीजिये। अपने ऐश्वर्य की प्रतीति कीजिये। अपने दिव्य स्वरूप में निष्ठा रखिये, अन्यथा सब अज्ञान है, सब कुछ अंधकार है।

अन्तःकरण का अज्ञान ही संसार को नरक बना देता है। इस अंधकार को दूर करने के लिये ज्ञान के अतिरिक्त जो कुछ भी करेंगे, उससे काम नहीं निकलेगा।

मृत्यु यह नहीं पूछती है कि घास में क्या है? केवल यह पूछती है कि हो क्या? जीवन का प्रश्न यह नहीं है कि पास में क्या है? प्रश्न यह है कि हो क्या?

सत्य ही भलाई है। सत्य का अनुसरण करना ही दूसरों की भलाई करना है। सत्य मनुष्य को दृढ़ और स्वतंत्र बनाता है।

जिस मनुष्य को अपने स्वाभिमान और गौरव के प्रति आस्था होती है। वह किसी भी वस्तु को बिना मूल्य पाने की अभिलाषा नहीं करता। इसके विपरीत वह कीमती से कीमती चीज को अपने पौरुष से प्राप्त करने की अभिलाषा रखता है।

संसार में मनुष्य को दुःख देने वाले तरह-तरह के रोग और व्याधियाँ हैं, किन्तु सबसे अधिक जिस रोग से दुःख प्राप्त होता है, वह मन मनुष्य के मन की इच्छा को छोड़कर और कुछ नहीं है।

यह कदापि नहीं हो सकता कि मनुष्य संसार के मजे लेता रहे, संसार के तुच्छ और निकृष्ट सुख भोगों में लिप्त रहे और ईश्वर के साक्षात्कार के दावेदार बने। इन दोनों कामों में बड़ी असंगतियाँ हैं, बड़ा विरोधाभास है। यदि मन में साहस है लगन है और दृढता है तो गरीबी और अभाव का हिमालय भी आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता।

अध्ययन के लिये वस्त्र की नहीं, धन की नहीं, दृढ़ संकल्प और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अध्यवसाय की आवश्यकता होती है। यदि पास में दृढ़ संकल्प है, अध्यवसाय है, तो बिना कपड़ों और धन के भी अध्ययन पूरा हो जायेगा।

उन्नति की कामना रखने वाले मनुष्य को दूसरों को नहीं स्वयं अपने आपको उपदेश करना चाहिये। उन्नति करने और आगे बढ़ने का यह मूल मंत्र है।

जिस तरह सूर्य बिना किसी स्वार्थ के जगत को प्रकाश देता है, और जिस तरह चन्द्रमा और तारे बिना किसी स्वार्थ के संसार को ज्योति देते हैं, मनुष्य को उसी प्रकार बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की भलाई करनी चाहिये। जीवन में सफलता प्राप्त करने का यह अचूक मंत्र है।

नियमों की रचना मनुष्य के लिये हुई है। मनुष्य नियमों के लिये नहीं बना है। मनुष्य नियमों को बना सकता है, पर नियम मनुष्य को नहीं बना सकते, क्योंकि नियमों में सीमित और मनुष्य में असीमित शक्ति होती है।

त्याग का सही और वास्तविक ढंग यह नहीं है कि वस्तुओं और व्यक्तियों से सम्बन्ध तोड़ लिया जाय, बल्कि यह है कि वस्तुओं और व्यक्तियों में दिव्यता की अनुभूति की जाय, द्वैवत का दर्शन किया जाय।

सर्व प्रथम हृदय को जीतो। यदि इससे भी काम न चले विवेक से अनुरोध करो। यदि विवेक भी पंगु हो जाय, तो प्रेम का सहारा लो। जहाँ सब निराश हो जाते हैं वहाँ भी प्रेम से आशा के दीप जलते हैं।

दूसरों को सत्यनिष्ठ बनाने का प्रयत्न मत करो। यदि बनाना ही है, तो दूसरों की चिन्ता किये बिना अपने को सत्यनिष्ठ बनाओ।

वास्तविक सुख धन से नहीं मिलता। मिलता है, इस बात को मन में स्थान देने से कि संसार के प्राणी अपने ही है। संसार का सारा धन भी अपना ही है।

संसार में कोई पराया नहीं है। सब अपने ही कुटुम्ब के हैं, क्योंकि एक ईश्वर से ही सबकी उत्पत्ति हुई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नामदेव

ईश्वर अदृश्य और अव्यक्त होते हैं। अदृश्य और अव्यक्त ईश्वर को हम केवल नाम के ही द्वारा जानते हैं। अतः नाम का सर्वाधिक महत्व है। सकरूण होकर नाम लेकर पुकारो, अव्यक्त और निराकार ईश्वर अवश्य आकार धारण करेगा।

ईश्वर की भक्ति और ईश्वर का प्रेम जाति, सम्पदा और वेष नहीं देखता। वह तो हृदय देखता है। जिस किसी के भी पास निर्मल और पावन हृदय होगा उसी में भक्ति और प्रेम की गंगा प्रवाहित होगी।

ईश्वर का अनन्य प्रेमी और भक्त भले ही झोंपड़ी में रहता हो, भले ही उसके तन पर चिथड़े हों, पर उसके बुलाने पर ईश्वर उसके द्वार पर खड़ा रहता है और उनकी गोद में चिथड़ों पर लोटता है।

ईश्वर के नाम को कभी मत भूलो। ईश्वर का नाम वह ध्वजा है, जिसे लेकर तुम स्वर्ग लोक में घुम जाओगे और नारायण के पास पहुंचकर, स्वयं नारायण बन जाओगे।

संसार में अगणित नाम हैं, किन्तु जिस नाम का अभिनन्दन यम और काल भी करता है, वह नाम तो ईश्वर का ही है। यदि तुम हर प्रकार के भय और दुःख से मुक्त होना चाहते हो, तो ईश्वर के नाम की ओट में रहा करो।

संसार में नाना प्रकार के सुख हैं, पर जो सुख ईश्वर के नाम के पाठ से प्राप्त होता है वह तो एक ऐसा सुख है, जो संसार में ही नहीं स्वर्ग में भी प्राप्त नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ईश्वर का अनन्य प्रेमी ईश्वर के नाम सुख के समक्ष स्वयं ईश्वर को भी भूल जाता है। इसीलिये वह ईश्वर से ईश्वर को नहीं, ईश्वर के नाम को ही मांगता है।

ईश्वर का प्रेम और उसकी भक्ति ही मुक्ति है, निर्वाण है। जिसे ईश्वर की अनन्य भक्ति और अनन्य प्रेम प्राप्त हो गया है, उसे जीविता-वस्था में ही जीवन-मुक्त समझना चाहिये।

ईश्वर के नाम का प्रेमी समाधि नहीं लगाता, योग साधन नहीं करता और व्रत-उपवास की आग में अपने शरीर को नहीं जलाता। वह मस्ती के साथ ईश्वर के नाम के गीत गाता हुआ उस जगह पहुंच जाता है, जहां बड़े-बड़े योगी भी नहीं पहुचते।

तुम कहते हो, ईश्वर मेरी प्रार्थना नहीं सुनता, पर मैं कहता हूं कि तुम्हें प्रार्थना करना आता ही नहीं, सच मानो जिस दिन तुम्हें, या जिस घड़ी प्रार्थना करनी आ जायेगी, ईश्वर तुम्हारे समक्ष खड़ा रहेगा, तीनों लोकों का स्वामी होने पर भी तुम्हारे सकेतों पर नृत्य करेगा।

क्या तुम शिव से प्रेम करते हो? यदी हाँ, तो तुम दुःख-सुख की चिन्ताओं की आग में क्यों जलते हो? यदि तुम अपने दुःख-सुख को शिव को समर्पित कर दो, तो वे दुःख-सुख के टीलों को ही नहीं, बड़े-बड़े पहाड़ों को भी अपनी दया की गगा की प्रखर धारा में बहा ले जायेंगें।

जाति-पांति को महत्व न दो, महत्व दो शिव की कृपा को। यदि शिव की कृपा होती है, तो कूड़े में पड़ा हुआ कंचन भी सम्राट के भी हाथों में पहुंच जाता है।

जिस प्रकार देवता की मूर्ति पत्थर की होने पर सशय युक्त होती है, उसी प्रकार ईश्वर का वह प्रेमी और भक्त भी संशय युक्त होता है, जो सांसारिक सुखों की आसक्तियों से ग्रसित रहता है।

पत्थर का वह देवता जिसकी रगों में अत्याचार को देख करके भी स्फुरण नहीं होता भंजन करने ही योग्य है क्योंकि देवता तो उसे कहते हैं, जिसमें अत्याचारियों के विनाश के लिये दैक्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो मनुष्य मूक और स्पन्दन रहित देवता को भोग लगाता है, वह अपने अज्ञान को प्रगट करने के अतिरिक्त, और कुछ नहीं करता ज्ञानी मनुष्य तो भोग के पदार्थ उसे अर्पित करता है, जो भूखा रहता है, और खा सकता है।

मैंने ईश्वर को ससझ लिया। ईश्वर प्रेम दया और सदाचरण को छोड़कर और कुछ नहीं है ।

महान पुरुष प्रणाम्य होते हैं। जो मनुष्य महापुरुषों के सामने झुक कर, उन्हें आदर से प्रणाम करता है, उसे भगवान प्रसन्न होकर आर्शीवाद देते हैं।

परोपकारी और ऊंचे विचारों के संतों को देखकर नर-नारी तो दौड़ पड़ते ही हैं, स्वयं भगवान भी आ जाते हैं। जो लोग संतों और सज्जनों को सुख पहुंचाते हैं उनके सुख और शान्ति की चिन्ता स्वयं भगवान करते हैं।

अभिमान मत करो। यदि महान पुरूष का जन्म तुमसे घटिया जाति में हुआ है, तो भी उसके पद की धूलि लेकर अपने मस्तक पर चढ़ाओ यदि ऐसा नहीं करोगे, तो भगवान के कोप का भाजन बनोगे ।

संत का शृंगार दंड, कमंडल, जटा और गेरुआ वस्त्र नहीं है, संत का शृंगार है क्षमा और सहनशीलता जिस संत में जितनी ही अधिक सहनशीलता और क्षमा होती है, वह उतना ही अधिक गरिमावान होता है।

जिस प्रकार दिन में दीपक लेकर चलना व्यर्थ होता है उसी प्रकार ईश्वर के होते हुये, अन्यान्य देवी देवताओं का पूजा करना व्यर्थ है। अतः तुम्हें अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को ईश्वर के ही पैरों में समर्पित करना चाहिये ।

गधे को गंगा के जल में मल-मल कर स्नान कराने से भी कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि, उससे धूल में लेटे बिना रहा नहीं जायेगा। इसी प्रकार मद्यपि को कितना भी उपदेश क्यों न दो, उससे मद्यपान किये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बिना रहा नहीं जायगा ।

अनार और इन्द्रायण सा फल दोनों एक समान होते हैं, पर अनार का मीठा और इन्द्रायण कड़ुवा होता है । इन्द्रायण अपनी कड़ुआहट से परित्यक्त होता है । इन्द्रायण के समान ही वे मनुष्य भी परित्यक्त होते हैं, जो भीतर से मीठे नहीं होते और कड़ुवे बचन बोलते हैं ।

जानते हो भगवान अपने उस प्रेमी के किस सौन्दर्य पर मुग्ध रहते हैं, जिसके पास खाने के लिए रोटियां और पहनने के लिए वस्त्र भी नहीं होता ।

तुम नहीं बता सकोगे, मैं तुम्हें बता रहा हूं । वह सौन्दर्य है—प्रेम सब के प्रति प्रेम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कबीर दास

अरे मन, तू क्यों नहीं धैर्य धारण करता। केवल धैर्य से ही उस विपत्ति के महासागर को पार कर सकता है, जो तेरे भीतर आकुलता का ज्वार उत्पन्न कर रहा है। विपत्ति के दिनों में धैर्य से बढ़ कर कोई दूसरा मित्र नहीं होता।

यदि तू ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है, तो तुम्हें अपने भीतर के घमंड को निकाल देना पड़ेगा। बिना घमंड को छोड़े हुये उसी प्रकार ईश्वर प्राप्त नहीं हो सकता, जिस प्रकार धूमिल दर्पण को स्वच्छ किये बिना मनुष्य को उसमें अपना मुंह नहीं दिखाई पड़ता।

कल क्या होगा, इस बात को कोई नहीं जानता। अतः हे मानव, तुम्हें जो अच्छा काम करना है उसे आज ही पूरा कर ले अभी पूरा कर लो, क्योंकि प्रलय अर्थात् मृत्यु तुम्हारे बहुत निकट खड़ी है।

तू धन बटोरने के प्रयत्नों में क्यों लगा हुआ है ? क्या तू नहीं जानता, जिन्हें तू बड़े चाव से एकत्र कर रहा है, उनमें से कोई एक भी तुम्हारा साथ न देगा। अरे मूढ़, यदि तुम्हें एकत्र करना ही है, तो नाम रूपी उस मणि को क्यों नहीं एकत्र करता, जो अंधकार में तुम्हारे लिये सूर्य बनेगी।

मेरे प्यारे बन्धु, सत्संग करो। सत्संग ही है, जो तुम्हारी बिगड़ी हुई बात को बना देगा।

जिस प्रकार रात का स्वप्न होता है, उसी प्रकार यह संसार भी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हे मनुष्य, तू स्वप्न-सदृश्य संसार में अपने मन को क्यों रमा रहा है ? मैं सच कह रहा हूं, तुम्हारे हाथ कुछ न लगेगा, कुछ न लगेगा।

सदा सच बोलो। सत्य ही परमात्मा है। यदि सत्य को छोड़ कर परमात्मा को ढूंढ़ोंगे तो मैं सच कहता हूं परमात्मा तुम्हें नहीं मिलेगा।

तू समझता है, मन्दिर या मस्जिद में ही ईश्वर का ही वास है, यदि तू ऐसा समझता है, तो तू उस परमात्मा के बड़प्पन को लांक्षित कर रहा है, जो सर्वत्र व्याप्त है।

यदि तू सत्य का प्रेमी नहीं है, मानवता का पुजारी नहीं है, आत्मा को नहीं जानता, परोपकार नहीं करता, तो फिर कराड़ों वर्षों पत्थर की पूजा क्यों न करो, तुम्हें परमात्मा नहीं मिल सकता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उडिया स्वामी

साधना करने वाले मनुष्यों को ऐसे मनुष्यों से अपने को दूर रखना चाहिये, जो विषयासक्त हों, क्योंकि इस प्रकार के मनुष्यों की केवल सांस से ही मनुष्य का पतन हो जाता है।

यदि तुम अपने को सांसारिक विषयों से मुक्त करना चाहते हो तो इसके लिये केवल एक ही उपाय है। वह यह कि अपने मन को ईश्वर के चरणों में लगाओ। मन को ईश्वरोन्मुख करने से तुम अपने आप ही सांसारिक मुक्त हो जाओगे।

तुम्हारी साधना के तरु में इच्छित फल तभी लगेंगे, जब तुम अपने भोजन और खान-पान पर ध्यान दोगे। भोजन और खान-पान पर ध्यान न देने से फल लगने की कौन कहे, तुम्हारी साधना का तरू बिल्कुल सूख जायेगा।

भजन ढिंढोरा पीटने की वस्तु नहीं है। उसे उसी प्रकार गुप्त रखो, जिस प्रकार कृपण धन को छिपा कर रखता है।

सच्चा भजनानंदी वह है, जो भजन से कभी भी तृप्त नहीं होता।

यदि तुम ईश्वर के वास्तविक प्रेमी हो, तो तुम्हें ईश्वर से सांसारिक वस्तुओं की याचना नहीं करनी चाहिये, यदि तुम्हें कुछ मांगना ही है, तो ईश्वर से ईश्वर के प्रेम को छोड़कर और कुछ मत मांगो।

क्या तुम अपने जीवन का कल्याण चाहते हो? यदि हां, तो बुरे मनुष्यों का साथ छोड़ कर सदाचरण व्रत का पालन करो। बुरे मनुष्यों की संगत एक ऐसी आग है, जो मनुष्य का सब कुछ जला डालती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम ईश्वरता के मार्ग पर अपनी सफलता चाहते हो, तो दूसरों के दोषों की ओर मत देखो। यदि देखना ही चाहते हो, तो अपने दोषों को देखो। जितना ही अधिक अपने दोषों को देखोगे, ईश्वरता के मार्ग पर उतना ही आगे बढ़ोगे।

साम्प्रदायिक झगड़ों में पड़कर क्यों अपने को नष्ट कर रहे हो? निश्चय जानों यह झगड़े तुम्हें तुम्हारे मार्ग से पृथक कर देंगे और तुम भटक जाओगे।

अपने समय को व्यर्थ के कामों में बर्बाद मत करो। यदि तुम्हारे पास करने के लिये काम नहीं है, तो ईश्वर प्रार्थना करो, ईश्वर के नाम का जाप करो। इससे और कुछ चाहे हो या न हो, पर इतना तो अवश्य होगा कि तुम्हारा मन बुराइयों की ओर जाने से बच गया।

क्या तुम अपने मन को संयमित करना चाहते हो?

यदि हां, तो कोलाहल से दूर एकान्त स्थान में निवास करो, नियमों का पालन करो और सद्ग्रंथों को पढ़ो।

भजन का क्षेत्र अधिक विस्तृत है। जितने भी शुभ कर्म किये जाते हैं, सब भजन में समाविष्ट हो जाते हैं। यदि कुछ समाविष्ट नहीं होता, तो वह आसक्ति है। अतः आसक्ति कभी मत करो।

दुःखों से घबड़ाओ नहीं, जिस प्रकार सुखों को प्रभु की देन मानते हो, उसी प्रकार दुःखों को भी प्रभु की देन ही मानों। दुःखों को प्रभु की देन मानकर प्रसन्नता पूर्वक सहन करोगे, तो प्रभु के कृपा पाल बनोगे।

यदि सर्वत्र विजय चाहते हो, तो तीन काम करो—क्रोध करने वालों को क्षमा दो, शत्रुता करने वालों को प्यार दो और अपकार करने वालों का कल्याण करो।

स्वर्ग और वासना—दोनों से बच कर रहना चाहिये। क्योंकि यह दोनों ही वस्तुएं मनुष्य और भगवान के बीच में गहरी खाइयां बनाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो मनुष्य वंश, कान्चन और विषय वासनाओं की खाइयों को पार कर जाता है, वह ईश्वर के निकट ही नहीं, अधिक निकट पहुंच जाता है।

इन्द्रियों पर अधिकार स्थापित करना बड़ा कठिन काम है, पर बड़ा सुख दायक भी है। जो मनुष्य इन्द्रियों पर अधिकार स्थापित कर लेता है, वह बिना अस्त्र-शास्त्रों के ही संसार को जीत लेता है।

समम को नष्ट मत करो, क्योंकि वह बड़ी तीव्रता के साथ भागा जा रहा है। तुम्हें उसे पकड़ना चाहिए। उसे पकड़ने का एक ही उपाय है—अच्छे काम करो, अधिक से अधिक अच्छे काम करो।

ईश्वर दानी मनुष्यों को अपना प्यार अवश्य देता हैं, पर उन्हें सबसे अधिक प्यार देता है, जो अपनी कंगाली की अवस्था में भी दान देते हैं।

ईश्वर लोभ करने वाले को अपना प्रिय नहीं बनाता। किन्तु वह उन्हें तो बिल्कुल नहीं पसन्द करता, जो पास में धन रहने पर भी अधिक धन की लिप्सा करते हैं।

ईश्वर अहंकारियों को तो क्षमा भी कर देता है, किन्तु उन्हें कभी क्षमा नहीं करता, जो भक्त होकर अहंकार करते हैं।

ईश्वर पर विश्वास और भरोसा रखो। प्रति क्षण अनुभव करो कि ईश्वर तुम्हारे बहुत ही निकट है और सहायता के लिये तैयार खड़ा है। ऐसा अनुभव न करना, ईश्वर की दयालुता पर अविश्वास करना है। इससे लाभ तो कुछ न होगा, दुःख की खाइयां और अधिक गहरी अवश्य हो जायेगी।

तुम अपने को परिस्थितियों का जन्म दाता मत समझो। ऐसा करने से तुम्हारी बुद्धि में अहंकार पैदा हो जायेगा तो वह मलिन हो जायेगी। क्या उस समय तुम अवनति के गर्त में गिर नहीं जाओगे।

अहंकार और ममता कठोर बंधन है। तुम इन बंधनों में फंस कर क्यों छटपटा रहे हो? यदि जीवन में सुख और शान्ति चाहते हो, तो इन्हें प्रभु को समर्पित कर दो। तुम्हारी इन दोनों वस्तुओं को लेने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिये, प्रभु के हाथ तुम्हारे सामने फैले हुये हैं।

सत कर्मों के मार्ग पर चलने में जो वस्तु बाधा डाल रही हो शीघ्र से शीघ्र उसका परित्याग कर दो। भले ही वह अधिक मूल्यवान हो, भले ही वह अधिक प्रिय हो। ऐसा करने पर ही सफलता तुम्हारा वरण कर सकती है।

जब तुम्हें आत्मा का विवेक हो जाये, और जब तुम दूसरों के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझने लगो, तो समझ लो कि, तुम्हारे चित्त की शुद्धि पूर्णरूप में हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वमी दयानन्द सरस्वती

जिस प्रकार शीत से पीड़ित मनुष्य, अग्नि के निकट जाने पर शीत से मुक्त हो जाता है उसी प्रकार परमात्मा की समीपता प्राप्त होने पर मनुष्य सभी प्रकार के दुःखों और दोषों से परिमुक्त हो जाता है।

मनुष्य कितना ही पीड़ित और व्याकुल क्यों न हो, परमात्मा की समीपता प्राप्त होने पर उसके हृदय की कालिमा अवश्य मिट जाती है और उसका हृदय शान्त की गंगा का गोमुख बन जाता है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह परमात्मा की समीपता प्राप्त करने के लिये निरंतर उपासना और प्रार्थना करे।

जो मनुष्य निरंतर परमात्मा की उपासना और प्रार्थना में रत रहता है, दयामय ईश्वर उसे अवश्य आनन्द रूपी मोक्ष प्रदान करते हैं। वह ईश्वर की कृपा से नहीं, अपने शुभ कर्मों से ही महानन्द का भागी बनता है।

सांसारिक क्लेशों को दूर करने के लिये कोई भी अचूक औषधि नहीं है। यदि औषधि है, तो वह योग है—परमात्मा की उपासना है। अतः सांसारिक क्लेशों से व्याकुल मनुष्य को परमात्मा की उपासना में ही अपने मन को लगाना चाहिये।

इस नाशवान जगत में एक परमात्मा ही हमारे लिये उपास्य है। जो मनुष्य परमात्मा को छोड़कर अन्यान्य देवी-देवताओं की उपासना करता है, उसके दुःख, क्लेशों का विनाश कभी नहीं होता।

अतः मनुष्य को चाहिये, वह परमात्मा के प्रेम की गंगा की लहरों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में अपने को डुबो दे। और प्रार्थना के रूप में वेद मन्त्रों का गुंजार करे। उसे परमात्मा की महती कृपा अवश्य प्राप्त होगी, अवश्य।

जो ब्रह्म अत्यन्त शुभ्र है, अत्यन्त कल्याण कारक है, और है चिन्तन सत्य, वह वेदों के पठन पाठन से प्राप्त है। अतः मनुष्य को वेदों के पठन पाठन में अपना मन लगाना चाहिये।

जिस मनुष्य के मन में अत्यन्त शुभ्र अत्यन्त कल्याणकारी ब्रह्म का पादुर्भाव होता है, वही मनुष्य उस आनन्द के उपभोग का अधिकारी होता है, जिसे ईश्वरानन्द कहते हैं।

जो मनुष्य कपट, द्रोह, घृणा, स्वार्थ, और हिंसा को छोड़ कर परमात्मा की शरण में जाता है, उसे परमात्मा की कृपा अवश्य प्राप्त होती है, जिस प्रकार एक बालक को अपने पिता की कृपा और उसका स्नेह प्राप्त होता है।

परमात्मा की दया और उसके प्रेम को प्राप्त करने वाला मनुष्य ही सबसे बड़ा भाग्यशाली है। उसी को वह मोक्ष प्राप्त होता है, जिसे दूसरे शब्दों में महानन्द कहते हैं।

जो मनुष्य परमात्मा के प्रेम को प्राप्त करके महानन्द की तरंगों में डूब जाता है, उसे फिर कदापि-कदापि जन्म मरण के दुःख नहीं उठाने पड़ते। वह सदा-सदा के लिये दुःखों से छूट जाता है, क्लेशों से मुक्त हो जाता है।

इसके विपरीत जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या, घृणा, और द्रोह का गन्दा नाला बहता है; वह बड़े से बड़ा तप करने पर भी जन्म मरण के दुःखों से छूट नहीं सकता, कदापि छूट नहीं सकता।

मनुष्य को चाहिये, वह सदा ऐसा आचरण करे, जिससे उसे परमात्मा की प्राप्ति हो। पूछ सकते हो, वह कौन-सा आचरण है। वह आचारण है, निर्वैरता, निःस्वार्थपरता और लोकोपकारिता।

परमात्मा की आज्ञा को मानों, वेदोक्त आचरण करो। परमात्मा की कृपा तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी, क्योंकि परमात्मा की कृपा को प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करने वाली यही सुदृढ़ सीढ़ियां।

मानव जीवन की सबसे बड़ी सफलता यही है कि वह ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार आचरण करने में सलग्न है हो सकता है, उसके समक्ष विघ्न बाधायें उपस्थित हों, पर वे विघ्न बाधायें उसके मन को तोड़ देंगी—ऐसा कदापि नहीं हो सकता।

सत्य, अहिंसा, प्रेम और ब्रह्मचर्य ही परमात्मा की उपासना के साधन हैं। मनुष्य को अन्यान्य साधनों की खोज न करके केवल इन्हीं की डोर पकड़नी चाहिये।

यदि तुम परमात्मा की कृपा प्राप्त करना चाहते हो तो जितेन्दिय बनो, सत्य का आश्रय ग्रहण करो। और लम्पटता को छोड़ कर सभी मनुष्यों से प्रेम करो, भले ही वे तुम से घटिया वंश में उत्पन्न हुये हों।

यदि तुम किसी मनुष्य को अपने से नीच समझ कर उसे अछूत मानते हो, तो तुम समझ लो कि तुम परमात्मा द्रोह कर रहे हो, क्योंकि सभी प्राणियों के न्यामक तुम नहीं, परमात्मा है। अतः तुम्हें भेद मनुष्यों में भेद-विभेद करने का कोई अधिकार नहीं है।

अभिमान कभी मत करो, क्योंकि अभिमान एक ऐसा विष है, जो तुम्हारी प्राण-लतिका को जला कर भस्म कर देगा। अतः तुम से जहां तक हो सके अभिमान से बच करके ही चलो।

आलस्य को छोड़ कर पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ ही सफलता की कुंजी है। ईश्वर का नाम लेने से परमात्मा नहीं मिलेगा पुरुषार्थ करने से अतः उठो, पुरुषार्थ करो, आगे बढ़ो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रैदास

एक ईश्वर ही अनेक रुपों में संसार के सभी प्राणियों में समाया हुआ है। जो मनुष्य प्राणियों में रूप रंग और सौन्दर्य को न खोजकर केवल ईश्वर को ही खोजता है, वही सच्चा मनुष्य है और वही ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानता है।

तुम संसार के चमकते हुये रंग पर क्यों रीझते हो ? यह रंग तो फूलों के रंग के सदृश्य है। जिस प्रकार फूलों का रंग उड़ जाता है, उसी प्रकार संसार का रंग भी उड़ जायेगा अतः इसमें मन लगाना अज्ञानता है।

कस्तूरी मृग के नाभि के भीतर से ही कस्तूरी का सौरभ निकलता है, पर मृग अपनी अज्ञानता के कारण उस सौरभ को बाहर खोजता फिरता है। इसी प्रकार तुम जिस ईश्वर के सौंदर्य और गुणों पर मुग्ध होकर उसे बाहर खोज रहे हो, वह तो तुम्हारे ही भीतर छिपा हुआ है।

जिस प्रकार पक्षी पींजड़े में निवास करता है, उसी प्रकार आत्मा रुपी पक्षी भी एक पींजड़े में ही रहता है। जानते हो, वह पींजड़ा किस चीज का बना है— जल. पवन, मिट्टी, रक्त और हाड़-मांस का।

जिस प्रकार पक्षी आज इस तरु पर बसेरा लेता है, और दूसरे दिन बसेरा लेता है, दूसरे तरु पर। इसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी है। एक जीवन में कहीं जन्म लेता, दूसरे जीवन में कहीं जन्म लेता है। अतः यह मेरा है—इस प्रकार की बातें सोचना अज्ञानता को छोड़कर और कुछ नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम्हारे शरीर की सीमा केवल साढे तीन हाथ है, पर उस साढे तीन हाथ के ही शरीर में वह ईश्वर बड़े कौशल के साथ छिपा रहता है, जो अनन्त ब्रह्मांडों का नायक कहा जाता है।

जिस शरीर की आसक्ति में तुमने आत्मा और परमात्मा को भुला दिया है, वह शरीर तो एक दिन उसी प्रकार जल कर भस्म के रूप में बदल जायेगा, जिस प्रकार घास-फूस का ढेर जल कर भस्म के रुप में बदल जाता है।

जो मनुष्य ऊँचे-ऊँचे भवनों और नारी के सौंदर्य में ही फंसकर अपने जीवन को व्यतीत कर देता है, समझना चाहिये कि वह अपने एक जन्म की बाजी हार गया। उसका जन्म भी मानव का ही होगा- निश्चित रुप से कहा नहीं जा सकता।

ओछी जाति का मनुष्य भी राम की शरण में जाने से उच्च बन जाता है, क्योंकि राम की शरण की छाया में ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं है।

ईश्वर चन्दन के सदृष्य है, और मनुष्य समान है एरंड के। जिस प्रकार चन्दन के साथ रहने पर एरंड भी सौरभित हो जाता है, उसी प्रकार ओछी और नीच जाति का मनुष्य भी ईश्वर का साहचर्य करने पर परम उच्च और परम श्रेष्ट बन जाता है।

संसार में अनेक प्रकार के मनुष्य हैं, पर तुम संतों और साधु और साधु जनों को छोड़कर और किसी की संगति में मत रहो, क्योंकि तुम जिस सुख और शान्ति की कामना करते हो, वह तुम्हें साधु जनों की संगति में रहने से ही प्राप्त हो सकती है।

तुम जिन्हे अपना भाई बन्धु कहते हो, वे क्या अन्तिम काल में तुम्हारा साथ दे सकेंगे ? और तो और, तुम्हारी वह स्त्री भी क्या तुम्हारा साथ देगी, जिसके प्यार में तुम दिन-रात डूबे रहते हो ? जिन्हें तुम अपना कहते हो, उनमें से कोई तुम्हारा साथ न देगा। अगर साथ देगा तो तुम्हारा सत कर्म अतः सब को देखते हुये भी सत्कर्म को कभी न भूलो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आसक्ति किसी मनुष्य में नहीं सत्कर्म में ही करो ।

हे ईश्वर, तुम समुद्र में जाते हुये जहाज के मखतूल हो । जिस प्रकार समुद्र में उड़ने वाला पक्षी बैठने के लिये और कहीं स्थान न पाकर जहाज के मखतुल पर बैठता है, उसी प्रकार हम जीवों के लिये तुम्हें छोड़ कर और कोई आश्रय-स्थान नहीं है ।

जिस प्रकार मधुप पुष्पों के पराग को ढूँढता फिरता है, उसी प्रकार हे मनुष्य, तुम साधु जनों की संगति ढूंढा करो ।

तुम अपने शरीर की इन्द्रियों को संसार के विषयों में क्यों लगाते हो ? तुम्हें इन्द्रियां इस लिए नहीं मिली हैं कि उन्हें विषयों की आग में जलाओ । इन्द्रियाँ तो तुम्हें इसलिये मिली हैं कि उनके द्वारा ईश्वर के प्रेम के रस का अस्वादन करो, और ईश्वर के मिलन के सुख का उपयोग करो ।

हे ईश्वर, मेरे शरीर के नष्ट होने के पश्चात् यदि तुम मिले, तो तुम क्या मिले ? मैं तो अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों के साथ अपने जीवन में ही मिलन का सुख भोगना चाहता हूँ । अतः मिलना हो, तो जीवन में ही मिलो । जीवन के पश्चात् मिलोगे, तो तुम्हारा वह मिलना मेरे किससे काम का ?

हे ईश्वर, तुम चाहो तो मुझसे अपना सम्बन्ध तोड़ सकते हो । मुझसे संबंध तोड़ देने पर, तुम्हें मेरे समान अनेक मिलेंगे, पर मैं तुमसे संबंध नही तोड़ सकता, क्योंकि तुमसे संबंध तोड़ देने पर तुम्हारे समान मुझे कोई नहीं मिलेगा ।

तीर्थों में स्नान करने से क्या लाभ, यदि मन में विषयाशक्ति है । विषयाशक्ति को छोड़कर हृदय में प्रेम को बसाओ, घर में हीं तीर्थों की पवित्रता मिलेगी ।

ईश्वर का गुण कीर्तन अग्नि के समान है । जिस प्रकार अग्नि सब को जलाकर एक भस्म के रूप में बदल देती है, उसी प्रकार ईश्वर का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुण कितंन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और चाँडाल—सब को परम पद पर, एक ही साथ एक ही पंक्ति में बिठा देता है।

वह माता-पिता और कुटुम्ब धन्य है, जिसमें ईश्वर के अलोकिक प्रेम के रस का आस्वादन करने वाला कोई पुत्र पैदा होता है, क्योंकि उस पुत्र की प्रशंसा संसार के लोग ही नहीं, स्वर्ग के देवता भी करते है।

जिस प्रकार कमल जल में रहने पर भी जल से स्पर्श का नहीं करता, उसी प्रकार ज्ञानी मनुष्य संसार में रहने पर भी संसार के सुखों और भोगों में लिप्त नहीं होते, और अपनी इसी विरक्ति के कारण कमल समान सर्वोत्तम समझे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

इन्द्रियगम्य बाह्य सुखों की अपेक्षा माध्यात्मिक सुख अधिक श्रेष्ठ और मूल्यवान होता है। अतः मनुष्य को बाध्य सुखों को ढूंढ़ने में समय न लगा के आध्यात्मिक सुखों को ही ढूढ़ना चाहिये।

अहिंसा एक ऐसी वृति है, जो मनुष्य को आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है। अतः मनुष्य को चाहिये, वह अहिंसा प्रेमी बने किसी को कष्ट न पहुंचाये।

सदाचरण से ही शान्ति प्राप्त हो सकती है। अतः शान्ति चाहने वालों को पग-पग पर सदा चरण का चिन्ह बनाना चाहिये।

ईश्वर की पूजा करने वालों को सर्व प्रथम कर्म की पूजा करनी चाहिये। कर्म की सीढ़ियों पर चल करके ही मनुष्य ईश्वर को प्राप्त कर सकता है।

यदि कर्म को छोड़ कर ईश्वर से मिलने की आशा कर रहे हो, तो यह दुराशा मात्र होगी। कर्म के भेंट के विना ईश्वर कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता, कभी नहीं।

क्या तुम यह सोच रहे हो कि मैं कौन-सा कर्म करूं? तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर यह है कि तुम्हारे पड़ोस में झोंपड़ी में जो गरीब मनुष्य बीमार पड़ा हुआ है, उसकी सेवा करो।

गीता पढ़ रहे हो? जानते हो गीता का मर्म क्या है कर्म, केवल कर्म।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री अरबिन्द

जो मनुष्य विषयाशक्ति हैं, उनसे साधना उसी प्रकार नहीं हो सकती, जिस प्रकार बीज के बिना पौधा नहीं उग सकता और जल के बिना पौधे में बाढ़ नहीं आ सकती।

जब तक हमारे मन में सद्भाव जागृत नहीं होता, तब तक वह मानवता जागृत नहीं होती, जो हमें सबसे मिलाती है और ईश्वरता की ओर उनमुख करती है।

साधना और तप के द्वारा ही मनुष्य अपनी उस निम्न कोटि की प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकता है, जो उसे पतन की ओर अग्रसर करती है।

आराधना का यह अर्थ नहीं है कि तुम व्रत रहो; ईश्वर को भोग अर्पित करो। आराधना का वास्तविक अर्थ तो यह है कि तुम अपने आप को ईश्वर को समर्पित कर दो।

ध्यान का यह अर्थ नहीं है कि तुम अपनी आंखें बन्द कर लो। ध्यान का वास्तविक अर्थ तो यह है कि तुम अपनी सम्पूर्ण चेतना को ईश्वर में डुबा दो।

साधना का मार्ग अत्यधिक दुश्कर है, पर यदि ईश्वर पर विश्वास रखोगे, तो वह दुष्कर मार्ग भी पुष्प की तरह सुकोमल बन जायेगा।

परमात्मा भोग से नहीं, प्रेम से प्रसन्न होते है। अतः तुम्हारे हृदय में जितना प्रेम हो, किसी और के लिये न रख कर सब का सब परमात्मा के चरणों पर उडेल दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महात्मा गांधी

मैं धुधले रूप में यह अनुभव करता हूं, मेरे आगे पीछे चारों ओर एक ऐसी शक्ति है, जो कभी नहीं बदलती। वह शक्ति ईश्वर को छोड़ कर और कुछ नहीं है।

यदि लोग सचाई के साथ राम नाम जपें, तो वे सामाजिक बुराइयां कदापि नहीं हो सकती, जिनसे आज देश के लोग दुःख पा रहे हैं।

यदि विषयों पर विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो राम नाम जपो। राम नाम को छोड़ कर ऐसा कोई साधन नहीं जो तुम्हें विषयों पर विजय दिला सके।

राम नाम से यह अर्थ नहीं है कि तुम केवल राम ही कहो। तुम राम की जगह पर ईश्वर, अल्लाह, खुदा और गॉड भी कह सकते हो।

सत्य ही ईश्वर है। अतः सत्यानुरागी बनो। सत्यानुरागी बनने से ही उस परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है जो सर्वत्र व्याप्त है।

तुम्हारी श्रद्धा किसी भी धर्म में क्यों न हो, तुम्हें अहिंसा को अवश्य अपनाना चाहिये। क्योंकि अहिंसा से बढ़कर श्रेष्ठ धर्म कोई नहीं है।

अहिंसा का यह अर्थ नहीं है कि केवल किसी जीव का वध न करो, बल्कि उसका वास्तविक अर्थ तो यह है कि तुम किसी को कष्ट मत पहुंचाओ। किसी को कष्ट न पहुंचाना ही सच्ची अहिंसा है।

तुम सत्य और अहिंसा के मार्ग पर कैसे चल सकते हो? राम नाम के सहारे केवल राम नाम के सहारे। राम नाम ही वह सम्बल है, जो सत्य और अहिंसा के मार्ग पर सुगमता से चला सकता है।

किसी को अछूत मत समझो, किसी से घृणा मत करो, क्योंकि तुम जिससे घृणा कर रहे हो, उसके भीतर भी उसी राम की ज्योति है, जिस की तुम्हारे भीतर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पंडित श्री मदनमोहन मालवीय

यदि बुराइयों को दूर करना चाहते हो और चाहते हो धर्म का प्रचार, तो केवल बड़े-बड़े नगरों में संस्थायें अस्थापि करने से कुछ न होगा। इसके लिये गांवों में जाना पड़ेगा क्योंकि हमारी बहुसंख्यक जनता नगरों में नहीं, गांवों में रहती है।

तुम्हारे खेतों में परिपुष्ट कंधे वाले जो बैल हल चला रहे हैं, जानते हो वे किसके पुत्र हैं ? गायों के अत: तुम्हें गायों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करनी चाहिये तन, मन से उनकी सेवा करनी चाहिये, क्योंकि तुम्हारे शरीर का लाल और गर्म रक्त उन्हीं के पुत्रों के परिश्रम का फल है।

संगठन केवल नगरों के निवासियों से पूरा नहीं होगा। वह पूरा तो तब होगा, जब उसमें गांवों के वे मनुष्य सम्मिलित होंगे जिनकी अब तक उपेक्षा करते आ रहे हों, और जिन्हें अब भी दीन-हीन समझकर ठुकरा रहे हो।

उन जीवों का बध क्यों करते हो, जो अपनी चोट को प्रगट करने में भी असमर्थ है। यदि तुम्हे किसी का बध करना ही है, तो उन आततताइयों का वध करो जो स्त्रियों की इज्जत पर डाके डालते है, दूसरों का धन छीनते हैं, और धन के लिए बालकों तक का गला दबाने में संकोच नहीं करते।

क्या तुम मनुष्यता की परिभाषा जानना चाहते हो ? मनुष्यता की परिभाषा है—स्त्रीयों और बच्चों की रक्षा करना, असत्य न बोलना, चोरी न करना, रिश्वत न लेना, निडरता के साथ कर्तव्य का पालन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करना और ब्रह्मचर्य के अमृत का पालन करना। यदि तुम यह सब कर रहे हो, या इनकी ओर तुम्हारा ध्यान आकृष्ट हो रहा है, तो तुम सच्चे मनुष्य हो।

इस बात को कदापि नहीं भूलना चाहिये कि अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है। तुम्हें इस जन्म में जो दुःख मिल रहे हैं, वे तुम्हारे द्वारा किये हुए अपने ही बुरे और अशुभ कर्म है। यदि तुम अपने भविष्य को सुखमय देखना चाहते हो तो अच्छे और शुभ कर्मों को करने में जुट जाओ।

क्या तुम मोक्ष पाना चाहते हो? केवल गगा में स्नान करने से मोक्ष नहीं मिलेगा। मोक्ष मिलेगा अच्छे कामों को करने से। सबसे बड़ा अच्छा काम है, परोपकार। मुक्ति कामना रखने वाले मनुष्यों सोचो क्या तुम कर रहे हो।

तुम जानना चाहते हो कि परम कल्याणकारी परमात्मा घट-घट में निवास करते हैं। फिर तुम हर एक मनुष्य से प्रेम क्यों नहीं करते? तुम क्यों दूसरों को अपने से हेय समझते हो जब तुम दूसरों को अपने से हेय समझते हो तो क्या इससे यह प्रगट नहीं होता कि तुम घट-घट में वास करने वाले परमात्मा को हेय समझ रहे हो।

वास्तविक और श्रेष्ठ धर्म क्या है? सभी मनुष्यों का कल्याण। जिस धर्म में सभी मनुष्यों के कल्याण की कामना प्रचुर मात्रा में हो वही धर्म श्रेष्ठ है।

जानते हो, सम्पूर्ण विश्व की रचना किसके द्वारा हुई है? परमात्मा के द्वारा विश्व दस-बीस नहीं, एक है अतः उसका रचियता प्रमात्मा भी दस बीस नहीं एक ही है।

उस एक परमात्मा को ही विश्व के प्राणियों को विभिन्नताओं में देखो। प्राणियों की विभिन्ताओं में परमात्मा को अभिन्नता को देखन ही परम ज्ञान है, परम धर्म है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम ईश्वर को अपने से अधिक दूर न समझो वह तो तुम्हारे बहुत निकट है, क्योंकि, सृष्टि में दृश्य और अदृश्य के रूप में जो कुछ है, सब में ईश्वर समाविष्ट है ।

यदि तुम्हें कभी ईश्वर पर संदेह हो, तो उस सूर्य की ओर देखो, जिससे अपने आप प्रकाश की धारा निकल रही है, उन तारों को भी देखो जो अनादि काल से झिलमिला रहे हैं, और उस आकाश की ओर देखो, जो अपनी नीलिमा के कारण बहुत सुन्दर ज्ञात हो रहा हैं ।

यदि तुम्हें ईश्वर पर संदेह उत्पन्न हो रहा है, तो अपनी बुद्धि और शक्ति को शरीर की भीतरी रचना पर केन्द्रित करो । मैं पूछता हूँ तुम्हारे शरीर के भीतर जो मशीन चल रही है, उसका निर्माता कौन है ? क्या कोई मनुष्य ? नहीं ईश्वर, ईश्वर ।

अपने चारों ओर फैले हुये जीवों के जगत को देखो । रंग-रग के मनुष्य, रंग-रंग के पशु पक्षी, रंग-रंग के कीड़े-मकोड़े, रंग-रंग के पेड़-पौधे और रंग-रंग के पुष्प । इन सब में वही परमात्मा विद्यमान है, जो हमारे और तुम्हारे भीतर है । परमात्मा की इस सर्वव्यापकता का अनुभव करना ही श्रेष्ट ज्ञान है ।

यदि तुम पापों और बुराइयों से बचना चाहते हो, तो इस बात को सदा स्मरण रखो कि परमात्मा सब में और सर्वत्र रहता है । जब तुम इस बात को स्मरण रखोगे, तो उस बुरे काम को न करोगे, जिसके बारे में तुम सोच रहे हो कि उसे करता हुआ कोई नहीं देख रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

डाक्टर एनी बेसेंट

मनुष्य ज्यों-ज्यों उन्नति के पथ पर अग्रसर होता जाता है, त्यों-त्यों उसके मन में यह विश्वास भी दृढ़ होता जाता है कि संसार की समस्त क्रियाओं का संचालन नीति और धर्म युक्त होता है।

जो मनुष्य प्राप्त सुअवसर का उपयोग लोक कल्याण के लिये करता है, उसे अगले जन्मों में भी, लोक कल्याण के लिये बार-बार सुअवसर प्राप्त हुआ करते हैं। अतः यदि तुम्हें सुअवसर प्राप्त हो, तो उसे नष्ट मत करो, उसका सदुपयोग करो।

जो मनुष्य अपने सम्पर्क में आने वाले सभी मनुष्यों के हित की कामना करता है, उसे अगले जन्मों में भी ऐसा शरीर और ऐसी सुन्दर स्थितियां प्राप्त होती हैं, जिनसे वह अनेक मनुष्यों का कल्याण कर सकता है, अनेक मनुष्यों को कठिन दुःखों के बन्धनों से छुड़ा सकता है।

केवल हमारे कर्म ही हमें रोकते हैं, हमारी इच्छायें ही हमारी प्रगति में बाधक बनती हैं—यदि बार भी इस सत्य का अनुभव हो जाये, तो फिर मुक्ति का द्वार उनमुक्त होने में देर नहीं लगती।

प्रकृति उस मनुष्य को बन्धन में कदापि नहीं रख सकती, जिसने ज्ञान और शक्ति को प्राप्त कर लिया है। तथा जिसने प्राप्त ज्ञान और शक्ति को ईश्वरी कार्यों के लिये समर्पित कर दिया है।

मनुष्य जैसा सोचता है, उसी के अनुसार उसका निर्माण भी होता है। अतः तुम्हें निरंतर उस परमात्मा का चिन्तन करना चाहिये, जो सभी प्रकार के विकारों से परे है, और जो सभी सुखों का भंडार है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इजराइल के एक ज्ञानी नृपति का कथन है, बुरे विचारों के मनुष्यों से बचो, क्योंकि विचार सक्रामक रोगों के कीड़ो की भाति मन के ऊपर अपना प्रभाव डालते हैं।

भगवान बुद्ध का कथन है, हम जो कुछ बने हैं, अपने विचारों को सुन्दर बनाने में अपनी सम्पूर्ण शक्तियां लगा दे।

विचार ही कार्यों को जन्म देते हैं। हमारे विचार जिस प्रकार के होते हैं, उसी के अनुसार हम कार्य भी करते हैं। केवल इतना ही नहीं, हम जिसे स्वभाव कहते हैं, उसके भी जन्मदाता विचार ही होते हैं।

आधुनिक मनोविज्ञान भी यही कहता है कि हमारा शरीर जिसमें सभी इन्द्रियां हैं, विचारों का ही अनुगमन करता है। अतः बुद्धिमान मनुष्य वही है, जो अपने भीतर अच्छे विचारों का बहुत बड़ा कोष बना है।

क्या तुम अपने विचारों से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहते हो? यदि हां, तो अच्छे विचारों का बार-बार मनन करो। सच मानों, तुम्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी और तुम उन कामों को सरलता से कर लोगे, जिन्हें करने से तुम्हारा साहस हिचकिचा रहा था।

अपने स्वभाव का निरीक्षण करो। देखो, तुम्हारे स्वभाव में कौन-कौन से अवगुण हैं। जब तुम्हें अपने अवगुणों का ज्ञान प्राप्त हो जाये, तो झट उन गुणों को ग्रहण कर लो, जो उनके विपरीत हों। तुम्हारा स्वभाव-मंथन का कार्य पूरा हो जायेगा।

मान लो तुम चिड़चिड़े स्वाभाव के हो जब तुम्हें अपने स्वभाव की चिड़चिड़ाहट का पता चल जाये, तो फिर धैर्य को ग्रहण करने में देर मत लगाओ। केवल ग्रहण ही मत करो, सच मानो, तुम्हारी डगमगाती हुई नाव पार लग जायेगी।

यदि मनुष्य अपनी बुराइयों का मंथन करके अच्छे गुणों को ग्रहण करे, तो उसे सत्यपुरुष बनने से कोई रोक नहीं सकता, क्योंकि उसके गुण ही उसे सत के सांचे में ढाल कर उसे ऊपर उठा देंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम अपनी आदतों का निर्माण करना चाहते हो, तो अपने मन की बुराइयों का पता लगा कर उन्हें छोड़ दो। यह एक ऐसा प्रयोग है, है, जो अवश्य सत्य सिद्ध होगा।

तुम्हें अपनी बुराइयों को छोड़ने में दुःख अवश्य होगा, पर सच मानो, बुराइयों को छोड़ने से जो सुख प्राप्त होगा, उसके समक्ष यह दुःख कुछ नहीं है।

यदि तुम्हारे पास अच्छे विचार हैं, तो उन्हें अपने तक ही सीमित मत रक्खो, जिस प्रकार पुष्प अपनी सुगन्ध को फैलाया करता है, उसी प्रकार तुम्हें भी अपने अच्छे विचारों को फैलाना चाहिए।

तुम अपने अच्छे विचारों का कोष उसी प्रकार दूसरों के लिये खोल दो जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश का कोष खोल देता है। जिस प्रकार सूर्य अपना प्रकाश दूसरों के कल्याण के लिये लुटाता है, उसी प्रकार तुम भी दूसरों के कल्याण के लिये अपने अच्छे विचारों को लुटाओ। सच मानों, तुम भी सूर्य के सदृश्य महान तेजस्वी बन जाओ।

यदि तुम चाहो तो सम्पूर्ण वायुमंडल को प्राण-प्रद वायु से भर सकते हो। जानते हो, वह प्राण-प्रद वायु क्या है ? तुम्हारे अच्छे विचार अपने अच्छे विचारों को जितना फैला सको फैलाओ। सच मानो, तुम्हारे अच्छे विचार उस दुर्गन्ध को नष्ट कर देंगे, जिसके कारण मनुष्य को सांस लेने में अधिक कठिनाइयां हो रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रवीन्द्रनाथ टैगोर

भारत ने अतीत में जिस सत्य की प्राप्ति से अपने को परमोज्वल बनाया था, वह सत्य क्या है ? क्या स्वराज्य, क्या देश की अखंडता, क्या सार्वदेशिक विकास ? नहीं, यह सब कुछ नहीं । वह सत्य है सम्पूर्ण विश्व की जागृति, विश्व के प्राणियों की एकात्मकता ।

जिस सत्य की ज्योति भारत के तपोवनों में प्रज्वलित हुई है, जिस सत्य का गान उपनिषदों में गुंजित है, जो सत्य गीता में उच्चरित हुआ है और जिस सत्य की खोज में भगवान बुद्ध ने अपनी अस्थियां गलाई हैं, वह सत्य विश्व के प्राणियों की एकात्मकता और समता को छोड़ कर और कुछ नहीं है ।

भारत के ऋषियों और महऋषियों ने जिस सत्य की उपासना की है और जिसकी प्राप्ति के लिये भगवान बुद्ध तथा महावीर स्वामी ने तप की यातनायें सहन की हैं, वह सत्य विश्व के सम्पूर्ण प्राणियों की एकता ही है ।

हमारा सत्य है, विश्व की मैत्री, प्राणियों की एकता । हम जितना ही अधिक इस सत्य के निकट पहुंचने का प्रयत्न करेंगे उतना ही अधिक सुख और शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करेंगे, क्योंकि हमारी भौतिकता हमारे इसी सत्य पर आधारित है ।

हमारे देश के हृदय में तप का जो भाव संचित है, उसका केवल एक ही अर्थ है और वह यह है कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, अंग्रेज और जर्मन आदि सभी एक ही सूत के धागे हैं । अतः उन्हें आपस में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मिलकर रहना चाहिये, एक दूसरे को अपना बन्धु समझते हुये रहना चाहिये।

गुलाम के रूप में नहीं जड़ के रूप में भी नहीं। केवल दृढ़ साधक के रूप में ही हमें सब को मिलाकर जीवन के पथ पर चलना चाहिये। जब तक हम इस बात के लिये प्रयत्न नहीं करेंगे, हमारी कोई योजना सफल नहीं होगी और हम दुःख तथा असन्तोष के भागी ही बनते रहेंगे।

हमारे देश में ब्रह्मचर्य, ब्रह्मवाद और अद्वैतवाद केवल आदर्श और कथन के लिये नहीं था, वरन् जीवन की व्यवहारिकता के लिये था। आज भी आवश्यकता इसी बात की है कि हम ब्रह्म और अद्वैतवाद को व्यवहारिक बनायें। जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे, असफलता की ठोकरें लगती ही जायेंगीं और हम गिरते ही जायेंगे, बार-बार गिरते ही जायेंगे।

जब तक हम प्राचीन अनुशासन को अपनी शिक्षा-दीक्षा में स्थान नहीं देंगे, हमें आत्मा के विराट सुख-स्वातंत्र्य का दर्शन न होगा, हम विभिन्न प्रकार के रोगों और अभावों की ज्वाला में जलते ही रहेंगे, जलते ही रहेंगे।

प्रबलता सम्पूर्णता का आदर्श नहीं है। प्रबलता समग्र के सामञ्जस्य को नष्ट करके अपने को प्रगट करती है। अतः वह बड़ी दिखायी पड़ती है, पर वास्तव में वह बड़ी नहीं है। बड़ी तो है, वह समग्रता जो प्रबलता के नीचे दबी रहती है।

हमारे देश ने कभी प्रबलता की इच्छा नहीं की। उसने प्रबलता के स्थान पर सदा इच्छा की है, परिपूर्णता की, समग्रता की। उस समग्रता की जिसमें अहंकार के स्थान पर विनम्रता होती है और होती है अधिकार भावना के स्थान पर बन्धुता, सहृदयता।

विनम्रता एक आध्यात्मिक शक्ति है। यह उन मनुष्यों को कभी प्राप्त नहीं होती, जो भीतर से खोखले होते हैं अर्थात् जो चरित्र और आचरण के आसन से नीचे गिरे हुये होते हैं।

जिस प्रकार शान्त वायु का प्रवाह अधिक भूक्षेत्रीय में फैला रहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है, उसी प्रकार मृदुल और शान्त प्रकृति वाले मनुष्य का प्रभाव दूरगामी होता है। इसके विपरीत अशान्त और कुटिल प्रकृति वाले मनुष्य उस आंधी के समान होते हैं, जो कुछ ही दूर आगे जाकर, पत्थरों पर अपना सिर पटक देती है।

मृदुता और विनम्रता किसी को दुःखी नहीं करती, किसी को व्याकुल नहीं बनाती और किसी का भी परित्याग नही करती। वह सब को अपने साथ लेकर चलती है और सब को अपना समझती है।

महात्मा ईसा का कथन है, जो मनुष्य नम्रता से अपनी आत्मा का सिंगार करता है, जगत पर वही विजय प्राप्त करता है। नश्वर जगत में जो श्रेष्ठ धन है, केवल नम्रतायुक्त मनुष्य ही उसका अधिकारी होता है।

हम दो पाटों के मध्य में रहते हैं। हमारे एक और तो ईश्वर हैं और दूसरी ओर जगत हमें दोनों की आवश्यकता है। अतः हमारा समग्र जीवन इस बात के सोच-विचार में बीत जाता है कि हम क्या करें जिससे हमें ईश्वर और जगत दोनों प्राप्त हों।

पर हमें दोनों में से एक भी प्राप्त नहीं होता। इसका एकमात्र कारण यही है कि हम किसी एक के सम्बन्ध में पूरी तन्मयता के साथ सोच-विचार नहीं करते। जब हम किसी एक के सम्बन्ध में सहृदयता पूर्वक सोच विचार नहीं करेंगे, हमें समस्या का हल नहीं मिलेगा और हम अधर में ही लटके रहेंगे।

हमें हमारा इष्ट मिल जाये, इसके लिये केवल एक ही मार्ग है और वह यह कि जगत के पिता परमात्मा का चिन्तन करो। परमात्मा जब प्राप्त हो जायेंगे, तो जगत तो अपने आप ही प्राप्त हो जायेगा। अतः जगत के सम्बन्ध में सोच-विचार करना छोड़कर केवल परमात्मा के सम्बन्ध में ही सोच-विचार करना चाहिये।

यदि मनुष्य दुःखों से मुक्ति पाना चाहता है, तो उसे उस सत्य को जानने का प्रयत्न करना चाहिये जो उसके हृदय में छिपा हुआ है। जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तक उस सत्य को भली-भांति जान नहीं लेगा, दुःखों से उसका पिंड न छूटेगा।

हे परमात्मन् मुझे मृत्यु के भय से बचाओ। मेरा मन अहंकार की ज्वाला से दग्ध हो रहा है। अपने अमृत की धारा बहाकर मेरे मन को शान्त करो। उसे अपने में लगने दो, अपनी सुखदायिनी छाया में लोटने दो।

तुम्हारे पाप गंगा और यमुना के पानी से धुल नहीं सकेंगे। वे धुलेंगे तुम्हारे उन आंसुओं से, जो परमात्मा के प्रेम से गद्‌गद प्राणों से मिश्रित होकर आखों की राह से निकलेंगे। अतः परमात्मा के प्रेम में गद्‌गद् और रोमांचित होकर आंसू बहाओ, खूब आंसू बहाओ।

विपत्तियों से छुटकारा पाने का मार्ग केवल यही है कि शुद्ध प्रेम को अपने हृदय में स्थान दो। उस प्रेम को स्थान दो, जो सब की ओर देखता हो, जिसके भीतर सबके लिये चाह हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्रद्धानन्द

मनुष्य के जीवन में जो दुःख-सुख आता और जिस हानि-लाभ का उसे सामना करना पड़ता है, उसके मूल में ईश्वर की इच्छा होती है, उसमें मनुष्य का अपना कुछ नहीं होता। मनुष्य का तो वही समय केवल अपना होता है, जो सतसंग या अच्छे कामों में बीतता है अतः मनुष्य को अपना अधिक से अधिक समय सतसंग और अच्छे कामों में बिताना चाहिये।

मैं यह नहीं कहता कि गृहस्थ से संबन्धि कार्यों में मत लगो, किन्तु मैं यह अवश्य कहता हूँ कि अपना दिन का समय तो गृहस्थ्य के कार्यों में लगाओ, और रात को थोड़ी देर का समय उस परमात्मा के चिंतन में लगाओ, जिसने तुम्हें मानव जन्म दिया है। यदि तुमने ऐसा नहीं किया, तो कहना पड़ेगा कि तुमने अपने मानव जीवन को नष्ट कर दिया।

परमात्मा ने हमें मानव जीवन देकर हम पर असीम उपकार किया है। क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं है कि हम उसके उपकारों का बदला चुकायें और उसका बदला एक ही ढंग से भली प्रकार चुकाया जा सकता है—अच्छे काम करो, अधिक से अधिक अच्छे काम करो।

साधना में विघ्न अवश्य पड़ेंगे, पर सफलता प्राप्त करने वालों को विचलित नहीं होना चाहिये। यदि मन डगमगाने लगे, तो प्रभू का नाम लो उसे पुकारो वह अवश्य तुम्हारे मन को स्थिर कर देगा।

वायु अधिक गतिमान होती है, किन्तु मन उससे भी अधिक गतिमान होता है। वायु की गति को तो कोई नहीं बाँध सकता, पर यदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम चाहो तो मन की गति को बाँध सकते हो। संयम को डोरी तैयार करो, नियमों का पालन करो, मन की गति को बांधने में समर्थ हो जाओगे।

मानव जीवन का वास्तविक विकास धन और इसी प्रकार के दूसरे साधनों से नहीं होता। विकास होता है, सतसंग से, साधना और अच्छे गुणों से। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह अपने विकास के लिये इन्हीं सामाग्रियों का अनुसंधान करे।

मानता हूं, सांसारिक झंझावात तुम्हें साधना में रत नहीं होने देते पर जिस प्रकार तुम भोजन करने और स्नान करने के लिये समय निकालते हो उसी प्रकार यदि तुम प्रतिदिन साधना के लिये भी थोड़ा समय निकाल लिया करो तो भी काम चल जायेगा मैं सच कहता हूं, जिस प्रकार बूंद-बूंद से घट भर जाता है, उसी प्रकार थोड़ी-सी उस साधना से ही तुम्हारा जीवन पूर्ण हो जायेगा।

तुम्हारे मन में जो अशांति पैदा होती है, जानते हो उसका कारण क्या है ? उसका कारण है बाहर का कोलहल से भरा हुआ वातावरण।

तुम्हारे कार्य जब पूरे नहीं होते, तो तुम्हारे आसपास का वातावरण अशान्ति से भर जाता है, उसी की छाप तुम्हारे मन पर भी पड़ती है। यदि तुम इस बात को सदा याद रखो कि कार्य समय पर ही पूरे होते हैं, तो कार्य न पूरे होने पर भी तुम्हारे मन में अशान्ति नहीं पैदा होगी।

तुम यह भूल करते हो कि बाहर के मकान को ही अपना मकान समझते हो और दिन-रात उसके साज-सिंगार में लगे रहते हो, और अरे भाई तुम्हारा मकान बाहर नहीं शरीर के भीतर है। यदि तुम संसार में सुख और शान्ति के साथ रहना चाहते हो, तो अपने इसी मकान के साज सिंगार में अपना समय लगाओ।

अपने मन को उदास और निस्तेज न बनाओ, क्योंकि मन ही जिससे तुम परमात्मा के संबंध में सोचोगे। केवल सोचोगे नहीं पुकारो, परमात्मा को बसाओगे भी। जिस मन में परमात्मा को बसाना है दूर हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम उसे परमोज्जवल क्यों नहीं बनाते। सच मानो जब तुम अपने मन को परमोज्जवल बना लोगे, तो परमात्मा अपने आप ही तुम्हारे मन में बस जायेगा।

परमात्मा मंदिर, मस्जिद और गिरजा में नहीं बसता, वह बसता है, उदार, सम और परमोज्जवल मन में। यदि तुम परमात्मा को विमुग्ध करना चाहते हो, तो केवल एक बात करो—अपने मन को उदार सम और परमोज्जवल बना दो।

फल मिले या न मिले। कर्तव्य करते जाओ। फल मिलने की बात परमात्मा के ऊपर छोड़ दो। दुःख की बात यह है कि तुम पहले अपने बारे में न सोचकर परमात्मा के बारे में सोचने लगते हो। अरे भाई, पहले यह सोचो कि तुम कर्तव्य कर रहे हो या नहीं ? सच मानो जब तुम सच्चाई के साथ कर्तव्य करोगे, तो सच मानो उसका फल तुम्हारे सामने रखा हुआ मिलेगा।

यदि तुम्हारा मन अधिक उद्विग्न है तो महान पुरूषों के उपदेश सुना करो। कुछ याद रहे या न रहे, कुछ समझ में आये या न आये, किन्तु फिर भी सुना करो। इससे बहुत बड़ा लाभ यह होगा कि जब तक तुम सुनते रहोगे, तुम्हारा मन बुरी बातों की ओर दौड़ न सकेगा। इसे तुम कम न समझो, कदापि कम न समझो।

रुको नहीं। साधन और अभ्यास के पद पर आगे बढो। बार-बार गिरकर, बार-बार उठो और बार-बार उठकर, आगे की ओर चलो।

सच मानो, तुम्हारी आगे बढ़ने की तीव्र उत्कंठाओं को देखकर परमात्मा तुम्हारा हाथ पकड़ लेगा। तुम्हें, इष्ट मंजलि पर पहुंचा देगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अश्विनी कुमार दत्त

ईश्वर में मन लगाने का केवल एक ही उपाय है और वह यह है कि ईश्वर के प्रेमियों के बीच में बैठकर ईश्वर की चर्चा सुना करो। केवल ईश्वर की चर्चा सुनने से ही तुम्हारी बुद्धि ईश्वर में स्थिर हो जायेगी।

चिन्ता नहीं, यदि तुम ईश्वर के संबंध में तर्क-वितर्क करने वालों के मध्य में बैठते हो। सच मानो, केवल इतने से ही तुम्हारे मन के भीतर ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जायेगा, क्योंकि ईश्वर एक ऐसा कठोर धातु का बना हुआ है, जिस पर सभी तर्क-वितर्क फिसल जाते और रह जाता है वह—केवल ईश्वर।

एक ऐसे नास्तिक से जो आस्तिक बन गया था, किसी ने प्रश्न किया, तुम ईश्वरानुरागी कैसे बने? उसने उत्तर दिया—मैं प्रतिदिन बड़े ध्यान से ईश्वर की आलोचनायें और प्रत्यालोचनायें सुना करता था।

जो मनुष्य अन्तःकरण से ईश्वर का अनुरागी बनना चाहता है, ईश्वर बिना बुलाये ही उसके समीप पहुंच जाता है और उसकी सहायता करता है। यह हो नहीं सकता कि ईश्वरानुरागियों के जीवन मार्ग में अपदाओं के कांटे न बिछें, पर अपदाओं के वे काँटे जिस चीज से फल बन जाते हैं, वह तुम्हारे मन का ईश्वरानुराग। तुम्हारे अनुराग पर मुग्ध होकर परमात्मा स्वयं उन काटों को फुल के रूप में बदल देता है।

निराश मत हो। साहस के साथ आगे बढ़ो। ईश्वर को पुकारो, बार-बार पुकारो। तुम्हारे मन के भीतर से निराशा का अंधकार दूर हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जायेगा। और तुम्हें चारो ओर आशा ही आशा हंसती हुई दिखाई पड़ेगी।

क्या तुम दुराचारी हो, हिंसक हो, और मद्यपी हो ? घबराओ नहीं, अधीर मत बनो। ईश्वर की ओर बढ़ो। ईश्वर तुम्हें अपनी गोद में लेकर अपने प्यार से तुम्हारी जलन को शान्त कर देगा।

संसार में यदि बुरे से बुरे मनुष्य को भी प्यार देने वाला कोई है, तो वह है ईश्वर। अतः अपने पापों से भयभीत मत हो। चिन्ताओं और सोच-विचार को छोड़कर ईश्वर के प्यार के सागर में कूद जाओ। तुम्हें उस प्यार के सागर में वही सुख प्राप्त होगा, जो माँ की गोद में प्राप्त होता है।

जिस प्रकार चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार परमात्मा प्रत्येक आत्मा को अपनी ओर खींचता है यदि तुम्हारी आत्मा परमात्मा की ओर आकर्षित न होती हो, तो ईश्वर पर दोष मत लगाओ अपने हृदय के भीतर पैठ कर देखो, उसमें कितने विकार हैं ?

जिस प्रकार पंक से युक्त लोहा चुम्बक की ओर आकर्षित नहीं होता, वही हाल तुम्हारा भी है। यदि तुम अपने मन के मैल को हटाने में असमर्थ हो, तो अपनी विवशता पर सच्चाई के साथ आँसू तो बहा ही सकते हो, सच मानो तुम्हारे आँसूओं से ही तुम्हारे मन का मैल कट जायेगा और तुम्हारा मन ईश्वर की ओर दौड़ रड़ेगा।

ईश्वर की कृपा को प्राप्त करने के लिये न तो विद्या की आवश्कता होती है, और न धन की बस, केवल आंसू बहाते जाओ केवल आंसू बहाने से ही ईश्वर की कृपा अवश्य प्राप्त हो जायेगी।

तुम्हारी आंखों से जो आँसू गिर रहे हैं, मत समझो व्यर्थ जायेंगे। जिस प्रकार कोई दरिद्र मोतीयों को बीनता है, उसी प्रकार कोई तुम्हारे आंसूओं के बूंदों को अपने दुपट्टे में एकत्र कर रहा है। और वह ईश्वर को छोड़कर और कोई नहीं है।

क्या तुम दीन हो, क्या तुम अछूत हो ? चिन्ता मतकरो। ईश्वर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ओर बढ़ो। ईश्वर के मंदिर में धर्म और जाति नहीं देखी जाती, देखी जाता है प्रेम, देखी जाती है विवशता। यदि तुम्हारे पास यह दोनों वस्तुयें है, तो तुम्हें ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने से कोई नहीं रोक सकेगा।

ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने से तुम्हें कोई मनुष्य नहीं रोक रहा है। तुम्हारे मन का बाहरी और भीतरी शत्रु। बाहरी शत्रु का नाम कुसंगति है और भीतरी शत्रु का नाम है बाह्य आडंबर। ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने के लिये तुम्हें अपने इन दोनों शत्रुओं से युद्ध करना होगा।

आत्म चिंतन करो। प्रतिदिन यह सोचो कि तुम कितने कार्य अच्छे करते हो और कितने बुरे करते हो? बस केवल इतने से ही तुम्हारा काम बन जायेगा और तुम्हें ईश्वर का स्नेह मिलने लगेगा।

रुपया मत गिनो, अपने मन की बुराइयों को गिनो। मन की बुराइयां गिनने से ही बुराइयां दूर हो जायेगी और एक दिन आयेगा, जब तुम्हारे मन में एक भी बुराई न रह जायेगी।

कुसंग छोड़ दो, सतसंग करो। सतसंग एक ऐसा ऊंचा सोपान है, जिसके द्वारा बड़ी सरलता के साथ स्वर्ग तक पहुंचा जा सकता है।

तपेदिक ज्वार की औषधि है, पर कुसंग रूपी ज्वर की कोई औषधि नहीं है। इस ज्वर के कीटाणु जब शरीर के भीतर घुसेंगे तो सब कुछ चाट जायेगा रह जायेगा कंकाल, केवल ककाल।

बड़ी से बड़ी हानि उठाकर भी सच बोलो। यदि सत्य पर दृढ़ रहोगे तो हिमालय भी तुम्हारे सामने झुक जायेगा।

भक्ति क्या है—ईमानदारी और सच्चाई। अतः ईश्वर के प्रेमी और भक्त बनना चाहते हो, तो सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रेमचंद

अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना मनुष्य का परम धर्म है, पर उसके लिये अपने को मिटा देना बुद्धिमानी की बात नहीं है, क्योंकि यदि अपने को ही मिटा दिया जायेगा, तो फिर संघर्ष कौन करेगा ?

कोई भी अन्याय इसलिये मान्य नहीं हो सकता कि लोग उसे परम्पराओं से सहन करते आ रहे हैं। परम्परायें कितनी ही पुरानी क्यों न हों, अन्याय को मिटाने के लिये उन्हें तोड़ देना चाहिये ।

गरीब से गरीब मनुष्य के सामने झुक जाओ, पर अन्याय के सामने कभी मत झुको, क्योंकि अन्याय के सामने झुकना मानवता की पराजय है।

अन्याय करने वाला मनुष्य यदि कूटनीतिज्ञ हो, तो बुद्धिमानी के साथ उससे संघर्ष करो, क्योंकि बुद्धिमानी से ही संघर्ष करने पर उसे परास्त किया जा सकता है।

अन्याय सदा अन्याय ही होता है। चाहे वह पुरूष के द्वारा हो, और चाहे स्त्री के द्वारा हो। वह सदा पीड़क ही होता है, दुःखदायी ही होता है ।

जिस प्रकार कांटों के गड़ने से चुभन पैदा होती है, उसी प्रकार अन्याय पीड़ा और दुःखजनक होता है। अतः अन्याय से पीड़ित मनुष्यों की सहायता करने में देर नहीं लगानी चाहिये। श्रेष्ठ मानवता का यही ऊंचा आदर्श है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि कोई मनुष्य किसी इतर मनुष्य को अपना शत्रु समझता है, तो यह उसकी निरी अज्ञानता है। मनुष्य का शत्रु तो उसका अभिमान है जो उसके ही मन के भीतर निवास करता है।

किसी भी शस्त्र से अभिमान को परास्त नहीं किया जा सकता। वह तो एक ही चीज़ से दबता है—समता से, आत्मभाव से। अतः अभिमान को दबाने के लिये अपने मन में समता लाओ।

आत्मा की हत्या कदापि नहीं करनी चाहिये क्योंकि, आत्मा की हत्या करके प्राप्त किया हुआ स्वर्ग भी नरक के समान दुःखदायी होता है। अतः तुम्हें प्रलोभनों और सुखों को ठुकरा कर वहीं काम करना चाहिये जिसे तुम ठीक समझते हो।

संसार में और दूसरे प्रकार के दुःख तो किसी न किसी प्रकार दूर किये जा सकते हैं, पर आत्मा की हत्या से जो दुःख पैदा होता है, उसे दूर करने का कोई उपाय नहीं, कोई साधन नहीं।

आशा उत्साह की जननी है आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संचालक शक्ति है।

आत्मसम्मान को नष्ट नहीं होने देना चाहिये, क्योंकि आत्म-सम्मान को नष्ट करने पर स्वर्ग भी श्मशान की तरह भयावह लगता है। अतः आत्मसम्मान की रक्षा करना मनुष्य का परम धर्म है।

मनुष्य और पशु के बीच में एक बहुत बड़ी रेखा है। उस रेखा का नाम है—आत्मगौरव। आत्मगौरव की रेखा मिट जाने पर मनुष्य पशु के तुल्य हो जाता है।

परउपकार एक महान धर्म है। यदि परोपकार करने में कुछ षड़यन्त्र भी करना पड़े, तो करने में हिचकिचाना नहीं चाहिये, क्योंकि उससे आत्मा का हनन कदापि नहीं होता।

यदि कोई अपकार कर रहा हो, तो स्वयं उसका अपकार मत करो, क्योंकि अपकारी का अपकार करने से अपकार का भाव घटता नहीं बढता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चोर तो धन को चुराता है, पर क्रोध तो हमारी मधुर स्थितियों को ही चुरा लेता है। अतः क्रोध को सबसे बड़ा और भयानक चोर मानना चाहिये।

चोर को तो पुलिस गिरफ्तार कर सकती है, किन्तु क्रोध को प्यार को छोड़कर और कोई नहीं पकड़ सकता।

आंधी की संहार लीला के पश्चात् भी पास में बहुत कुछ बच जाता है, पर क्रोध की विनाशलीला के पश्चात् तो कुछ नहीं बचता, क्योंकि क्रोध तो हमारी सुजनता को ही मिटा डालता है।

बुद्धिमान मनुष्य वही है, जो बाधाओं और अवसरों को देखकर काम करता है। इसके विपरीत जो बाधाओं और अवसरों पर दृष्टि नहीं रखता वह अपनी ही अज्ञानता के कारण, बीच रास्ते में गिर पड़ता है।

मनुष्य को अपनी शक्ति के अनुसार ही काम करना चाहिये। जो मनुष्य अर्थ के लोभ में शक्ति से अधिक काम करता है, उसके हाथ पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं लगता।

दूसरे आदर्श तो मनुष्य को धोखा दे सकते हैं, किन्तु कर्तव्य एक ऐसा आदर्श है, जो कभी भी धोखा नहीं देता, अतः मनुष्य को सभी आदर्श को छोड़कर केवल कर्तव्य का ही पालन करना चाहिये।

मन में किसी प्रकार की दुर्बलता नहीं लानी चाहिये। रोगों से पैदा हुई दुर्बलता औषधियों से दूर को ले जा सकती है, पर जो दुर्बलता विचारों से पैदा होती है उसे दूर करने की कोई औषधि नहीं।

किसी जाति में पैदा होने से कोई मनुष्य ऊंचा नहीं बनता। मनुष्य ऊंचा होता है, गुणों से, कर्मों से। अतः जाति ऊंची नहीं, गुण और कर्म ऊंचे होते हैं।

मनुष्य का पैमाना धन और पद नहीं है। उसका पैमाना है, उसकी मानवता। जिस मनुष्य में जितनी ही अधिक मानवता होती है, वह उतना ही अधिक पूज्य और उतना ही अधिक प्रतिष्ठित होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जैनेन्द्र कुमार

मनुष्य जितने ही अधिक अंशों में अपने को पशुओं की सी स्वतंत्रता के फंदे से छुड़ाता जायेगा, उतने ही अंशों में उसके पास सच्चे मनुष्यों की सी स्वतंत्रता उसके निकट आती जायेगी ।

मुष्ठिबल में पुरुष को श्रेष्ठ माना जा सकता है, किन्तु उसकी वह श्रेष्ठता स्त्री के वाक्य बल के समक्ष नगण्य सी है ।

स्त्री क्या चाहती है—स्वतंत्रता और अधिनता । कदाचित एक साथ ही दोनों चाहती हैं—स्वतंत्र होकर किसी को अपनी आधिनता में रखना और आधीन होकर किसी को अपने ऊपर पूर्ण रुप से स्वतंत्र पाना।

तुम्हारा यह समझना बहुत बड़ी भूल है कि क्रोध तुम्हें कोई दिलाता है । क्रोध दिलाने से नहीं आता वह तो अपनी ही अज्ञानता के भीतर से से पैदा होता है ।

क्रोध अवश्य बड़ा विध्वंसकारी होता है, किन्तु वह शान्ति की शक्ति के समक्ष अपार्थ बन जाता है। और अहिंसा की सात्विक शक्ति के समक्ष तो पूर्ण पराजित सा बना रहता है ।

करूणा बड़ी मृदु होती है, किन्तु जब सीमा को लांघ जाती है, तो क्रोध का रूप धारण करके भयानक बन जाती है ।

कठिनाईयां जीवन में आवश्यक वस्तु के समान होती हैं । कठिनाइयों के सहारे ही मनुष्य अपने को जानता है । संसार में परस्पर का मिलन आवश्यक है, किन्तु वह किन सिद्धान्तों पर होगा—इसका पता तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri

पारस्परिक रगड़ से ही चलता है।

कर्म अनिवार्य है और मनुष्य नितांत स्वतंत्र नहीं है, वह कर्म की परिधि में घिरा है, बस परिधि के भीतर स्वतंत्र है। परिधि से बाहर भागकर वह नहीं जा सकेगा।

मनुष्य को चाहिये की वह कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। उसे आज का काम कल पर नहीं टालना चाहिये क्योंकि, जो आज नहीं हो सकता, वह कल कभी नहीं हो सकेगा।

कोई भी मनुष्य अपने कर्मों के फल से बच नहीं सकता, क्योंकि कर्म और फल दोनों परस्पर पृथक नहीं है। कर्म की क्रिया के साथ ही साथ फल अवश्य प्रगट हो जाता है।

कानून के डंडे से अपराध का कौशल नये-नये आविष्कारों की सूझ ही पाता है। मन्द और परास्त नहीं होता, बिल्कुल नहीं होता।

गृहस्थ जीवन सुख की सेज नहीं है, इसके विपरीत है, तप और साधना का आश्रम स्थल।

जीवन एक कोरा सिद्धांत नहीं। वह है, आदर्शों के साथ एक संभव समझौता।

हम सीमित हैं, हमारा आदर्श असीम है। सीम और असीम दोनों के तनाव से ही तो जीवन का पार्दुभाव हुआ है।

जीवन का उद्देश्य है समष्टि के प्राणों के साथ एकरस हो जाना। व्यक्ति अपने को छिटका हुआ अलग अनुभव न करे, समस्त के साथ अभिन्नता अनुभव न करे, यही उसकी मुक्ति है, यही उद्देश्य है।

रुकना कभी श्रेयकर हुआ है? सांस रुकती है उसे मौत कहते हैं, गति रूकती है तब भी मौत है, हवा रुकती है वह भी मौत है। रूकना सदा मौत है। जीवन नाम चलने का है।

जीवन की गति सीधी तीर सी तो है नहीं, समस्त जीवन सरिस्टप है। सिकुड़ कर बढ़ना होता है, बढ़कर और बढ़ने के लिए फिर सिकुड़ना चाहिये। यानी आगे जाना, पीछे सोचने के बिना न होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

असफल जीवन अपनी जकड़ चारों ओर छोड़ जाता है, जो मनुष्य जाति के विकास पर बेड़ी की तरह काम करता है।

अगर तुम्हारे पास दो पैसे हों तो एक से रोटी खरीदो दूसरे से फूल। रोटी तुम्हें जिन्दगी देगी और फूल तुम्हें जीने की कला सिखायेगी।

जो मन नहीं मार सकता, जिसे झुकना और छोटा बनना नहीं आता, जिसे दूसरे की सुविधा और दूसरे को निभाने की दृष्टि से झुंकना, राह छोड़ना नहीं आता, वह जिन्दगी में कभी कुछ नहीं कमा पाता—जिन्दगी का संतोष भी नहीं।

मौत से छिपने के लिये आदमी रोज आदमियत की मौत बर्दास्त करता है। जीवन से लोग चिपटते हैं और आत्मा को कुचल देते हैं।

तर्क के उत्तर में तर्क न देना आदमी से नहीं होता और जब नीचे तल के साधारण तर्कों की कमी होती है तब ऊंचे या गहरे तल के तर्कों से काम लिया जाता है। इस प्रकार का एक गहरा तर्क है व्यंग्य, एक तर्क क्रोध, एक है धमकी, और एक है मृत्यु का स्मरण और आहवान लेकिन सबसे द्रावक और मूर्तिमान तर्क है—आंसू।

दुःख सहना वीरों का काम है। अपने दुःख में सज्जन पुरुष किसी को कष्ट नहीं देते और उसे शान्ति से सहते हैं।

मनुष्य सहज नहीं जागता। काम-धाम में वह इतना व्यस्त रहता है कि दुर्घटना ही उसे जगाती है, वह दुःख के स्पर्श से ही उतरता है। इसलिये गृहस्थियों का टूटना और लोगों के दुखों का बढ़ना इतिहास की प्रगति के लिए आवश्यक होता है।

मन का दुःख क्या दूसरे के मन की चोट से भरेगा, आदमी ऐसा ही करता है, दुःख पहुचा कर धोना चाहता है।

दुनिया को सुधारने का मार्ग अपने को सुधारने के अलावा और नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दुनिया मोम की चीज नहीं है और न किताब ही है जिसे पढ़कर खत्म कर सकते हो। यहां जगह-जगह टक्कर खानी पड़ती है और समझौता करना पड़ता है। जीवन दायित्व का खेल है, पग-पग पर समझौता है।

दुनिया अति विचित्र है और जाने यहां किसका क्या मोल लग जाये मोल यहां असली है नहीं। इसलिये मोल की तौल भी मनमानी है।

Acc. No. 4730
Cost:.....
Date:... 13/9/88

स्कैन्ड/Scanned

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE